Chapter-1

प्रथम अध्याय

महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व, छायावाद में स्थान एवं पद्य-गद्य साहित्य का सामान्य परिचय

प्रथम अध्याय

महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व, छायावाद में स्थान एवं पद्य-गद्य साहित्य का सामान्य परिचय

महादेवी जी का जीवन–व्यक्तित्व एवं जीवन यात्रा

महादेवी वर्मा जी का जन्म सं. 1964 सन् 1907 ई. में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद शहर में हुआ था।[1] महादेवी जी अपने माता–पिता की प्रथम संतान थी। उनके जन्म के पूर्व पिछली सात पीढ़ियों से एक ही लड़का जन्म ले रहा था। इसलिए इनके जन्म के समय परिवार में मिश्रित प्रतिक्रिया हुई। परिवार के अधिकांश व्यक्तियों ने कन्या जन्म शुभ या सुखद नहीं महसूस किया लेकिन दादा–दादी अति प्रसन्न हुए[2] और उनके जन्म को बाबा ने देवी दुर्गा का विशेष अनुग्रह समझा और आदर प्रदर्शित करने के लिए नाम रखा महादेवी।[3] महादेवी के पिता श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा एम.ए.एल.एल.बी. भागलपुर के एक स्कूल में हेडमास्टर थे। उनकी माता श्रीमती हेमरानी देवी हिन्दी की विदुषी और भक्त थी। महादेवी के नाना भी ब्रज–भाषा के एक अच्छे कवि थे। इससे यह स्पष्ट है कि उनका जन्म एक विद्वान, और भक्त परिवार में हुआ था।[4] माता हेमरानी देवी तथा पिता गोविन्द प्रसाद वर्मा की इस महान पुत्री के विषय में गंगा प्रसाद पांडेय जी ने लिखा है, 'साकेतकार की यह उक्ति सौ–सौ पुत्रों से भी अधिक जिनकी पुत्रियाँ पुत्रशील वास्तव में राजा जनक की पुत्रियों के लिए जितना सार्थक है, उतना ही गोविन्द प्रसाद की पुत्री महादेवी के लिए भी।'[5]

महादेवी जी की प्रारम्भिक शिक्षा का सूत्रपात घर से ही हुआ था जैसा कि उन्होंने कहा है – 'मेरी पट्टी पुज चुकी थी।' इन्हें घर पर ही पंड़ित जी, मौलवी साहब, संगीत शिक्षक, ड्राईंग मास्टर आदि शिक्षा देने आते थे।[6] महादेवी जी को बचपन से ही फूल, तितली, हरी दूब से खेलना पसन्द था। वे कोयला और सिन्दूर से फर्स और दीवारों पर कुछ–न–कुछ लाइन खींचती रहती थी। माँ चाहती थीं कि वे घर का काम–काज सीखें और कुछ देर खिलौनों और गुड़ियों से खेलने में व्यस्त रहें। जब उनके समक्ष पढ़ना या काम करना दोनों में एक को चुनने के लिये कहा गया तो उन्होंने ने पढ़ना पसन्द किया।[7] गृह पढ़ाई प्रारम्भ के प्रथम दिन ही आप थोड़ी देर तक अध्यापक के पास बैठी रहीं और फिर छुट्टी की माँग पेश की। आवश्यकता पूछने पर उत्तर दिया– फूलतोड़ लाऊँ नहीं तो माली तोड़कर बाबूजी (पिताजी) के गुलदस्ते में लगा देगा, जहाँ वे सूख जाते है। 'तो क्या तुम्हारे तोड़ने से नहीं सूखते?' 'सूखते तो हैं।' 'पर भगवान जी पर चढ़ने के बाद। धीरे–धीरे पंडित जी को ज्ञान हुआ कि बालिका केवल बातचीत में ही नहीं पढ़ने में भी प्रवीण है।' लड़कियाँ और हो ही क्या सकती है, लड़ाकू या पढ़ाकू। महादेवी जी ने दोनों रूपों को अपनाया है। लड़ाकू रूप उनके विद्रोही और नारी विषयक निबन्धों में मुखरित हुआ और पढ़ाकू रूप तो जग जाहिर है ही। जो भी हो शैशव में पढ़ाई की अपेक्षा आपको इधर–उधर उधम मचाना ही अधिक प्रिय था।[8] गृह–शिक्षा के बाद 1912 में मिशन स्कूल, इन्दौर में शिक्षा का प्रारम्भ हुआ।[9] काव्य की प्रथम शिशु रचना का प्रारम्भ सात वर्ष की अवस्था में इस प्रकार हुआ था –

'आओ प्यारे तारे आओं,
मेरे आँगन में बिछ जाओ।'[10]

श्यामा देवी सक्सेना ने 'संस्मरण ग्रन्थ' में लिखा था कि उनपर माँ का प्रभाव पर्याप्त पड़ा। संस्कारों में ही नहीं रंग पर भी गेहुँआ लाल छौंहा। उन्हीं के अनुसार उन्होंने छोटी उम्र में ही आँगन लीपना, गेहूँ फटकना से लेकर बड़े, पकौड़ी, कढ़ी, पराठा, रोटी, तरकारी, सबकुछ बनाना सीख लिया, उनकी–सी रोटी बिरले ही बना पाते होंगे। सफाई की प्रेमी हैं। उनके कामों, कपड़ों कमरे एवं एक–एक बात में सफाई एवं स्वच्छता ही अभिव्यक्त होती है।[11] तुलसी, सूर और मीरा का साहित्य अपनी माता से पढ़ाती वह बचपन से ही साहित्य प्रिय और भावुक हैं। नौ वर्ष की अवस्था में उनका विवाह डॉ. स्वरूप नारायण वर्मा के साथ हुआ। इससे उनकी शिक्षा का क्रम टूट गया। उनके श्वसुर लड़कियों की शिक्षा के पक्ष में नहीं थे। उनकी शिक्षा पिता और माता के आग्रह पर ही चल सकी। श्वसुर का देहान्त होने पर वह पुनः शिक्षा प्राप्त करने की ओर अग्रसर हुईं।[12]

सन् 1919 क्रॉस्थवेट कॉलेज, प्रयाग में पुनः शिक्षा प्रारम्भ की।[13] बहिन श्यामादेवी का लिखा है 'क्रॉस्थवेट कॉलेज' में प्रवेश पाने के बाद, महादेवी जी के जीवन के दो ही लक्ष्य थे पढ़ना और काव्यरचना करना। महादेवी जी ने अपने समय में प्रचलित अनेक सामाजिक कुप्रथाओं पर निबन्ध लिखकर उनके प्रति अपना विद्रोह प्रकट किया। जब कवयित्री 'मिडिल' में पढ़ती थीं तभी आपने 'पर्दा-प्रथा' पर लिखित निबन्ध प्रतियोगिता में उत्तरप्रदेश शिक्षा विभाग से पुरस्कार प्राप्त किया था। 'भारतीय नारी' नामक नाटक क्रॉस्थवेट और विद्यापीठ में अभिनीत हुआ। कहने का अर्थ है कि महादेवी जी ने नारी वर्ग के प्रति किये जाने वाले अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध आरम्भ से ही आवाज उठाई थी।[14]

सन् 1921 मिडिल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। प्रान्त भर में प्रथम स्थान पाने के कारण राजकीय छात्रवृत्ति मिली 1925 इंट्रेंस की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण 1927 इण्टर की परीक्षा पास की।[15]

अपने कॉलेज जीवन में कॉलेज के बच्चों को नाटक खेलने के लिये आपने एक काव्य रूपक की भी रचना की थी, जिसमें फूल, भ्रमर, तितली और वायु को पात्र बनाया गया था। न जाने क्यों आगे आपने इस विधा को प्रश्रय नहीं दिया? कॉलेज की सभी छात्राओं से आपका आत्मीय सम्बंध और उनके सुख-दुख से सर्वाधिक लगाव सहेलियों की चर्चा का विषय बना रहा। छात्राएँ और अध्यापिकाएँ सभी समान रूप से आपको स्नेह और सम्मान देती थीं।[16]

बी.ए. पास करने के बाद महादेवी जी ने दृढ़ निश्चय और मनोवृत्ति के साथ ससुराल जाने से इन्कार कर दिया तब पिता ने उन्हें जीवन-पथ पर लक्ष्य प्राप्ति के लिए निर्बाध दिया। महादेवी दृढ़तापूर्वक अडिग रहने वाली स्वाभिमानी नारी थीं। अपने वैवाहिक सम्बन्ध को भी जिस दृढ़ता से उन्होंने अस्वीकार किया वह अन्यत्र दुर्लभ है। योग्य, समर्थ पति के यह कहने पर भी कि वे जीवन पर्यन्त अविवाहित रहेंगे, वे टस से मस न हुई अपने दृढ़ निश्चय के विषय में उन्होंने लिखा है, – "छात्रजीवन में गृहस्थि की ओर मेरा थोड़ा भी झुकाव नहीं हुआ। मैं बौद्ध भिक्षुणी होने का सपना देखने लगी मेरे पति डॉक्टरी पढ़ते थे। उन्होंने कई बार चाहा कि हम लोग साथ रहें। लेकिन यह बात मेरे मन में थी ही नहीं। मैंने उनसे कहा कि गृहस्थ जीवन की ओर मेरी थोड़ी भी प्रवृत्ति नहीं हैं। अतएव, मैं आपके साथ कभी भी नहीं रह सकूंगी। मैंने कई बार उन्हें यह भी समझाया कि वे दूसरा विवाह कर लें। लेकिन वे नहीं माने।" एक बार जो निर्णय ले लिया उसपर अटल रहीं। अपने आत्म-विश्वास, दृढ़ संकल्प आदि के कारण वे भविष्य के प्रति पूर्णतः निष्ठावान रहीं। स्वयं उन्हीं के शब्दों में, "जीवन के तुतले उपक्रम से

लेकर अब तक मेरा मन अपने प्रति विश्वासी ही रहा है। मार्ग चाहे जितना अस्पष्ट रहा, दिशा चाहे जितनी कुहराच्छन्न रही, परंतु भटकने, दिग्भ्रान्त होने और चली राह में पग-पग गिरकर पश्चाताप करते हुए लौटने का अभिशाप मुझे नहीं मिला।''[17] डॉ. इन्द्रनाथ मदान ने लिखा है – ''बुद्ध के प्रभावों से उनका जीवन ही बदल गाय उन्होंने निश्चय किया कि वे विवाहित जीवन नहीं बितायेंगी और बौद्ध भिक्षुणी होकर रहेगी। घरवाले इस बात पर राजी न थे। उन्होंने अधिक विरोध न करके अपना अध्ययन चालू रखा। अन्त में प्रयाग युनिवर्सिटी से संस्कृत में एम.ए. पास करने के बाद इन्होंने भिक्षुणी होने के स्वप्न को सेवा द्वारा पूरा करना चाहा।''[18]

महादेवी बुद्ध और उनकी करुणा से प्रभावित थीं। उनके जीवन को महात्मा गांधी के विचारों ने भी काफी प्रभावित किया। यहीं से वह सामाजिक-शैक्षिक सेवाओं की ओर मुड़ गईं। इतना ही नहीं, भक्ति युगीन 'मीरा' के व्यक्तित्व का असर भी महादेवी वर्मा में साफ दिखाई पड़ता है।[19] यह कहना निरर्थक न होगा कि महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व पर उस युग के मेधावी एवं तपस्वी चिंतक समाज-सुधारकों का प्रभाव पड़ा था। जैसे राजा राममोहनराय, दयानंद सरस्वती, विवेकानंद, तिलक, गांधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, श्री अरविंद इत्यादि।[20]

शिक्षिका रूप में वे इतनी चर्चित थीं कि राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद जी को अपनी पोतियों की पढ़ाई की चिन्ता हुई तो उन्होंने महादेवी जी को याद किया।[21]

शिक्षा-जगत में नारी-समाज का मेरुदण्ड सुदृढ करने के लिए महिला विद्यापीठ को प्रयाग में एक अभिनव वट-वृक्ष के रूप में आरोपित किया और अपनी ओजस्विनी तथा कलात्मक वक्तृत्व कला से समस्त देश के साहित्यिक अनुष्ठानों को मंत्राभिषिक्त किया। इन विविध कार्य कलापों का संयोजन करने की अदभुत् क्षमता महादेवी जी के अदभुत् व्यक्तित्व में है।[22]

आप प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य के पद पर कार्यरत हुई और सेवा निवृत्ति तक कुशलता पूर्वक इस पद का निर्वाह किया। गंगा के किनारे पर बसे झुसी ग्राम में अवकाश के समय ग्रामवासियों को शिक्षा देने के अभिप्राय से महादेवी जी ने एक आश्रम भी चलाया था जिसकी विभिन्न स्मृतियाँ वे अपने अन्तस में अन्त तक संजोये रहीं। साहित्यिक क्षेत्र में महादेवी जी ने बहुत दिनों तक चाँद नामक नारी मासिक पत्रिका का सम्पादन किया। हिन्दी साहित्य के सृजन, हिन्दी के विकास तथा कवियों और लेखकों की सहायता के लिए आपने एक ''साहित्यकार संसद'' संस्था की स्थापना की थी। राज्य विधानसभा की आप मनोनीत सदस्य भी रहीं।[23]

बचपन से ही महादेवी जी का यह स्वभाव रहा है कि उन्होंने जो अपने जीवन-

विकास के लिये उचित समझा सो किया, हठ और विद्रोह के साथ किया। संसार का कोई भी प्रलोभन या भय उसने विमुख उन्हें नहीं कर सका।[24] स्वप्नवादिनी तो वे हैं ही साथ ही अपने सपनों को साकार करने के प्रति वे बड़ी लगन हठीली भी हैं।[25]

महादेवी जी का जीवन कलात्मकता की खान है। उनके कमरे की कलात्मक साज-सज्जा, चित्र-मूर्तियों और फूलों की व्यवस्था सभी एक कुशल कलाकार के द्वारा सँवारे हुए से हैं। अतः आप ललित कलाओं की साक्षात मूर्ति सरस्वती हैं। आप काव्य, संगीत तथा चित्रकला तीनों की पावन त्रिवेणी हैं। आपके काव्य ग्रंथ में हिंदी की गौरव निधि है। दूसरी ओर उनके चित्र की विश्वविख्यात चित्रकारों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। आपने ब्रिटिश शासकों के अत्याचारों के शिकार भारतीयों की जेठ की तपती दुपहरी में गाँव-गाँव जाकर भोजन, वस्त्र आदि द्वारा सहायता की। अतः नाम मात्र से ही नहीं अपितु समस्त रूपों में आपने अपने नाम को सार्थक किया।[26]

महादेवी जी अत्यंत सरल, सादा एव संयमित जीवन व्यतीत करती थी। जीवन की बड़ी से बड़ी कठिनाइयों में भी उन्होंने कभी हार नहीं मानी। आप विनयशील होते हुए भी बड़ी ही स्पष्टवादी थीं। उनके हृदय पर भारतीय दर्शन की छाया थी। बच्चों की तरह सरलता, वृद्धों जैसी गम्भीरता, वैरागियों जैसी मान-अपमान से विरक्ति तथा वेदांतियों जैसी चिंतनशीलता आदि विशेषताएँ एक साथ आपमें समाविष्ट थीं। वे जो भी सोचती थीं वही करती थीं। इससे स्पष्ट है कि उनके जीवन में तथा काव्य में कहीं कृत्रिमता नहीं थी। हिन्दी के साहित्यकारों में महादेवी जी का व्यक्तित्व सबसे अनुठा है। इस सम्बन्ध में शिवचन्द्र नागर जी के विचार इस प्रकार हैं – "उनके अधरों से फूटता हुआ मुक्त हास उस मुक्त हास उस तरह है जैसे किसी शांत भूधर के आँचल में कोई दूध सा श्वेत पारदर्शक जल का निर्झर फूट रहा हो और उनको धरा की रजमलिन न कर पाई हो। कोई भी व्यक्ति यदि उनसे मिलने जाये तो यदि उसे और कुछ भी न मिले तो वह उस निर्झर में स्नान करने के सुख से वंचित न रह पायेगा ऐसा मेरा विश्वास है।"[26]

आगंतुक और यदि वह अतिथि हो तो उसके स्वागत की उनकी तन्मयता देखने लायक होती है। विशाल साहित्यिक परिवार में से प्रयाग आने वाले साहित्यकारों के लिये तो उनका निवास घर ही सा हैं, पर असाहित्यिकों के लिये भी उनका द्वार मुक्त रहता है। गुप्त जी ने ठीक ही कहा था– "मेरी प्रयाग यात्रा केवल संगम-स्नान से पूरी नहीं होती उसको सर्वथा सार्थक बनाने के लिये मुझे सरस्वती (महादेवी) के दर्शनों के लिये प्रयाग महिला विद्यापीठ जाना पड़ता है। संगम में कुछ फूल अक्षत भी चढ़ाना पड़ता है, पर सरस्वती के मंदिर में कुछ प्रसाद मिलता है। संसद हिन्दी के लिये उन्ही का प्रसाद

है।''

परिग्रही जीवन को अस्वीकार करके महादेवीजी ने अपना कोई सीमित परिवार नही बनाया पर उनका जैसा विशाल परिवार पोषण सब के वश की बात नहीं। गाय, हिरन, कुत्ते, बिल्लियाँ, गिलहरी, खरगोश, मोर, कबूतर तो उनके चिर संगी हैं ही, लता-पादप-पुष्प आदि तक उनकी परिवारिक ममता के समान अधिकारी है।[28] इतना ही नहीं उन्हें बच्चो से बहुत प्यार है। दो-चार बच्चे हँसते-खेलते, झगड़ते देखकर वे रास्ते में भी कुछ देर के लिए अवश्य विलम जाती हैं। उनका कहना है कि बच्चों के प्रसन्न होने, रूठने और हँसने-रोने के कारण इतने सहज-सरल और क्षणिक होते हैं कि उनका क्षण-क्षण का भाव परिवर्तन देखना बहुत अच्छा लगता है। इनकी सतत परिवर्तनशील भाव-भंगिमा अनायास ही जीवन के गहनतम रहस्य का पता दे जाती है। अभी 'कुट्टी अभी मिल्लि' की निश्छल नाटकीयता से बड़ा और नाटक क्या होगा? इनकी चमकती जिज्ञासु छोटी गोल आँखे और इनके तोतले प्रश्नों की अबोध गतिशीलता अदभूत होती है। इनकी लुका-छिपी का खेल-छिपने और प्रकट होने की क्रीडा-भगवान की लीला का आनंद देने के साथ-साथ कलात्मक अभिव्यक्ति का भी संकेत कर जाती है। बच्चों की दावत और उन्हें खिलाने का आनन्द लेना उनके स्वभाव का आवश्यक एवं आनिवार्य अंग है। अस्वस्थ होने पर बच्चों की भीड़ और उनका कलह-कोलाहल उनके लिए महोषधि का कार्य करता है। वे मानती हैं कि बच्चे फूल से भी अधिक सुन्दर होते हैं क्योंकि वे बोलते हुए फूल हैं।[29] आशागुप्त के अनुसार - ''महादेवी वर्मा ने अपने व्यतीत जीवन को झाँकियों में अभावग्रस्त, भर्त्सनाओं के शिकार कुम्हार, कूँजड़े, भृत्यवर्ग आदि तथा पुरुष की कामुकता की शिकार और सामाजिक बंधनों में जकड़ी नारी की आशा-निराशा एवं उसके अंतर-बाह्य के ऊहा-पोह का भावपूर्ण चित्रण किया है।' इसमें कहीं उनका हृदय करुणा से सिक्त, सहानुभूति से मसृण एवं वेदना से कराह रहा है तो कही आक्रोश, क्षोभ एवं टीस से तड़प उठा है।[30] महादेवी जी का द्वार सबके लिए हमेशा ही खुला रहता था। उन्हें छोटे बड़े का कोई भी अन्तर नहीं था। दुःखियों की दुःखभरी कहानी सुनकर उन्हें संतोष मिलता था। सचमुच ही महादेवी जी का मन इतना महान था कि उसमें संसार भर के दुःख समाहित हो जाता था और उनकी हंसी में संसार के समस्त दुःख विलीन हो जाते थे।[31] महादेवी जी ने अपने व्यक्तित्व का स्वयं निमार्ण किया है। उनके जीवन में कृत्रिमता नहीं है। शारीरिक सौन्दर्य की अपेक्षा मानसिक सौन्दर्य बहुत अच्छा समझती हैं। उनके जीवन में सादगी है, पर विचारों में उच्चता है। उनका भोजन सादा और रहन-सहन साधारण है। अपने शरीर श्रृंगार सादे वस्त्रों से ही करती है। उनके वस्त्रों से, उनके रहन सहन से उनकी सुरुचि का यथेष्ट परिचय मिलता है। शरीर में सबल प्राण महादेवी को मिला है। इनकी आत्मा उनके शरीर से अधिक बलवती है वह

मानव जीवन की विविध कठिनाइयों को झेलने में समर्थ हुई है उनके जीवन में वे वेदना भी है, पुलक भी; हास्य भी है, रुदन भी। इन सबके समन्वय में ही उनके व्यक्तित्व की विशेषता है।[32] कवि दिनकर के शब्दों में, ''महादेवी जी के व्यक्तित्व के दो पक्ष हैं। एक वह जो हमारे सामने पड़ता है; जहाँ वे हँसती और किलकारती रहती हैं और दूसरा वह जो बहुत आंतरिक है, जहाँ उनका हृदय अशोकवासिनी सीता के समान कैद है।'' मैंने इस दरवाजे पर दस्तक तो दी है मगर उसे खुलते कभी नहीं देखा। दिनकर से अधिक उपयुक्त अभिव्यक्ति डॉ. कामिल बुल्के की है जो महादेवी वर्मा के प्रभामण्डित व्यक्तित्व के लिए सटीक प्रतीत होती है। उन्हीं के शब्दों में, ''महादेवी के कोमल संवेदनशील हृदय में मनुष्य–मात्र के प्रति कल्याण की भावना कूट–कूटकर भरी है।'' 'प्राणों का दीप जलाकर करती रहती दीवाली' के अनुसार वे दूसरों की सेवा में लगी रहती हैं और मिलने वालों से मुस्कारते हुए बातचीत करती हैं। कोई भी सहृदय व्यक्ति उनके स्नेही करुणामय व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।[33] इलाचन्द्र जोशी का कथन है – ''उनके व्यक्तित्व में मैंने एक आश्चर्यजनक आत्मविश्वास देखा, जो किसी भी परिस्थिति में उनकी आत्म–निर्भरता को डिगने नहीं दे सकता था। उनकी प्रत्येक बातों में, प्रत्येक मुद्रा में, एक सहज अधिकार का भाव स्पष्ट हो उठता था। मैंने देखी एक ऐसी नारी जो स्वतंत्र–चेतना थी, जो पाश्चात्य संस्कृति से परिचित होने पर भी भारतीय संस्कृति की परम्परा को पूर्णतः आत्मसात कर चुकी थी। जीवन में पहली बार भारतीय नारीत्व की गौरवानुकूल एक आदर्श प्रतिमा के साक्षात् दर्शन करके मैं एक बिल्कुल ही बदली हुई धारणा लेकर लौट गया।''[34] शिवचन्द्र नागर के अनुसार–''महादेवी जी को भाषाओं का अच्छा ज्ञान है – हिन्दी, उर्दु, संस्कृत पाली, प्राकृत, बँगला, गुजराती और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान है।''[35] महादेवी जी सबके साथ हैं, सबके बीच हैं पर फिर भी चिर एकाकिनी चिर स्वतंत्र और चिर मुक्त लगता है। युग–युगों तक जन्म से जन्मांतर तक यह रहस्यमयी नारी अपने पथ पर अकेले ही निरंतर बढ़ती चली जायेगी। विश्व उसके पीछे–पीछे चले यह विश्व का सौभाग्य है न चले तो उसकी तनिक भी परवाह नहीं।[36] सभ्य सुसंस्कृत लोग, उनका पारिवारिक जीवन; समाज सभी राजनैतिक नेता, धनाढ्यक उच्चकुल के लोग, उनकी कुटिल प्रवृत्तियाँ थोथी बातें–ये सब वे समस्याएँ है जो महादेवी जी के सामाजिक बोध को कुरेदती रहती हैं और वे हँसी के आवरण में उदासीन स्वर में कहतीं हैं – 'लेखकों की सुनता, ही कौन है जो हम कुछ कर सकें। उनका अविचलित स्पष्टवादी व्यक्तित्व उन अवसरों को छोड़ता नहीं है, जिनमें वे निर्भीकतापूर्वक सच्चाई को सामने रख देती हैं।[37] अपने जीवन में इतने बहुमुखी क्षेत्रों में अविराम सफलता प्राप्त करने पर भी उन्हें इसका रंच मात्र भी अभिमान नहीं है और वह जिस सहज भाव से एक सामान्य नारी की तरह सबसे मिलकर जनसाधारण के

सुख-दुःख को बांट कर उनके जीवन में घुल-मिल जाती हैं, यह उनके व्यक्तित्व की एक सबसे बड़ी विशेषता है।[38] ''महादेवी स्पष्ट वक्ता हैं। उन्हें जो कुछ कहना होता है उसे थोडे में कह देती हैं। उनकी स्पष्टवादिता के लिए कोई उन्हें क्या कहेगा इसकी चिंता वह नहीं करतीं। उनके हृदय में सहृदयता, सहानुभूति और करुणा का स्त्रोत बराबर बहता रहता है। वह अपने घर के बाहर बहुत कम निकलती हैं नाम कमाने की अथवा जनता में लोकप्रिय बनने की लालसा उनमें नहीं है। इसलिए साहित्य सम्मेलन आदि में भी वह कम सम्मिलित होती हैं। अपने काम से ही वह बाहर आती हैं। महादेवी जी अध्ययन शील कवयित्री हैं।[39]

गंगाप्रसाद पाण्डेय - ''महादेवी जी के व्यक्तित्व से तुलना करने के लिए हिमालय ही सबसे अधिक उपयुक्त भी जान पड़ता है। उनके व्यक्तित्व का वही उन्नत और दिव्य रूप, वहीं विराट और विशाल-प्रसार, वही अमल-धवल तथा अचल-अटल धीरत-गंभीरता वही करुणा एवं तरलता और सबसे बढ़कर वही सुखकर शुभ्र मुक्त हास। यही तो महादेवी हैं।''[40] एक महान पुरुष साहित्यकार की भाँती अध्ययनशील और ज्ञानी होकर भी संन्यासी की भाँति केवल लिख-पढ़कर ही सन्तुष्ट नहीं होती थीं। एक-एक क्षेत्र की समस्या को लेकर, जीवन के संघर्षों में घुसकर कर्मभूमि में उतर पड़ती थीं। हिन्दी के लिए और हिन्दी साहित्य के लिए ही उन्होंने क्या-क्या प्रयत्न नहीं किये। वे विधानसभा की सदस्य भी इसीलिए बनी थीं। सरकार से हिन्दी के उत्थान के लिए सीधा मोर्चा लिया और जहाँ सचाई न पायी, उससे अलग हो गयीं। वे किसी के प्रभाव में या किसी लालच में आकर चुप नहीं बैठती थीं। हिन्दी के उत्थान के लिए कवि सम्मेलनों में जाती थीं, पर जब उसमें विकृति आ गयी, तो उसे भी छोड़ दिया। सचाई के लिए बराबर युद्धरत रहीं। ''साहित्यकार संसद'' की स्थापना इसीलिए की कि हिन्दी के साहित्यकारों का उचित आदर सम्मान हो सके। नये साहित्यकारों की प्रतिभा को विकसित किया जा सके। इस प्रकार न जाने और भी कितने व्यवहारिक कार्य जिन्हें मैं बता नहीं सकती। इसी प्रकार राष्ट्रभक्ति में भी निर्भीक होकर काम करती थीं। जवाहारलाल जी उनके भाई थे। इन्दिराजी को वे अपनी भतीजी मानकर बहुत प्यार करती थीं, लेकिन जब उन्होंने देश में आपात स्थिति लागू की, तो वे उनके एकदम खिलाफ हो गयीं। आजीवन खद्दर पहनती रहीं। शुभ वसना तपस्या की मूर्ति की भाँति शोभित होती रहीं।[41] महादेवी जी का कथन - ''अब मेरा परमधाम जाने का समय आ गया है। अब मैं जीना नहीं चाहती जब केवल तन अस्वस्थ होता था, तब जीने की चाह बनी रहती थीं। अब मेरा मन भी अस्वस्थ हो चला है- देश की वर्तमान स्थिति को देख-देख कर। देखो, आज ही के अखबार के मुखपृष्ठ में टोकरियों में धरे सैंकड़ो बमों के चित्र छपे हैं। पहले मैं उन्हें लड्डू समझ बैठी थी। ये बम किन पर चलेंगे, निर्दोषों और गरीबों पर ही तो! आदमी

आदमी को मार रहा है बचाने वाले अब नहीं रह गये। कि इस सब के विरोध में सक्रिय रूप से कुछ कर सकूँ, तुम लोग कुछ करते नहीं, क्या हो गया है।'' ये पीड़ा-भरे वाक्य महादेवी जी ने (मुझसे, विष्णुकांत शास्त्री) 6 अगस्त 1986 को कहे थे।[42]

पिछले वर्ष से महादेवी जी अस्वस्थ रहने लगी थीं। मैं (रामकुमार वर्मा) उनके सहायक डॉ. रामजी पाण्डेय से प्रतिदिन पूछता, तो वे उत्तर देते कि डॉक्टर साहब क्या कहा जाय ! वृद्धावस्था में शिथिलता तो बढ़ती ही जाती हैं, किंतु उनकी हँसी है कि वह बातों में फूट ही पड़ती हैं। विगत 10 सितम्बर, 1987 की बात है। डॉ. रामजी का फोन आता है कि महादेवी जी की हालत चिंताजनक है। मैं सब काम छोड़कर तुरंत महादेवी जी के निवास पर पहुँचता हूँ। देखता हूँ कि महादेवी जी चेतन शून्य पलँग पर लेटी हैं। चारों ओर महिलाओं का समूह उन्हें घेरे हुए उनकी परिचर्या में लगा हुआ है। मेरे पहुँचने पर डॉ. रामजी पाण्डेय जोर से कहते हैं-देवी जी ! रामकुमार जी आपको देखने लिए आये हैं। महादेवी जी को कुछ चेत होती है, उठने की चेष्टा करती हैं, किंतु उठ नहीं सकतीं। मैं और मेरी पत्नी कुछ देर बैठकर वापस लौटते हैं। 11 सितम्बर - दूसरे दिन प्रातःकाल मर्मवेधी सूचना-

महादेवी जी नहीं रही !!!
कौन कहता है महादेवी नहीं रहीं ?
वे हिन्दी में जीवित हैं,
हिन्दी उनसे जीवित है।[43]

एकाएक महादेवी जी अस्वस्थता का समाचार मिला और 11 तारीख की रात (11 सितंबर 1987) को पी.टी. आई. (भाषा) से समाचार संपादक कृष्णकांत का फोन मिला कि महादेवी वर्मा नहीं रहीं। कब? अभी पंद्रह मिनट पहले! मेरे सामने इलाहाबाद का सन्नाटा तैरने लगा। महादेवी जी के बिना इलाहाबाद कैसा होगा? बिना साँची के स्तूपों के साँची कैसा होगा? बिना कावेरी के नीलगिरि कैसा होगा? बिना महादेवी जी के हिन्दी कैसी होगी?[45] महादेवी जी के निधन के साथ छायावाद का चौथ खम्भा भी धराशायी हो गया। साहित्य में उनका स्थान अमर है। कविता के युग कितनी ही बार बदल जायें, महादेवी जी का स्थान स्थिर है। उनका गद्य उनकी काव्य-धारा से भी अधिक सशक्त है। उनके रेखाचित्र तथा संस्मरण अपनी शैली तथा भाषा की अमिट छाप छोड़ते हैं।[45] 1988 मरणोपरांत भारत सरकार की पदमविभूषण उपाधि से सम्मानित हुई।[46] महादेवी जी ने साहित्य और समाज के क्षेत्र में सबकुछ इतना किया है। कि उनमें उनकी स्मृति तथा कीर्ति अमरता की मुद्रा से मुद्रित होकर अमिट अक्षरों में अंकित हो गई है।[47] हिन्दी के युग प्रवर्तक कवि निराला ने एक स्थल पर महादेवी के व्यक्तित्व पर अर्घ्य चढ़ाते

हुए लिखा है –

"हिन्दी के विशाल मन्दिर की वीणा–वाणी, स्फूर्ति चेतना रचना की प्रतिभा कल्याणी।"[48]

ऐसी प्रखर सामाजिक चेतना व्यक्ति को अपने गहरे जीवन अनुभव के भीतर से ही मिलती है। उनका अपना जीवन–संघर्ष भी कुछ कम कठिन नहीं रहा लेकिन कदाचित इसी संघर्ष की आग में तपकर ही उनकी प्रतिभा और भी कुंदन की तरह निखरी और उन्होंने हिन्दी साहित्य को कवि और गद्यकार के रूप में अपना अविस्मरणीय योगदान करते हुए एक ओर हमारे संवेदनशील मर्म का स्पर्श किया और दूसरी ओर अन्यायी समाज और संदर्भ उपस्थित होने पर निरंकुश सत्ता से टकराते हुए साहित्यकार को स्वतंत्र अस्मिता का तेजस्वी उद्‌घोष किया।[49] कामिल बुल्के जी ने सत्य ही कहा है, "जिन्हें महादेवी जी के निकट सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है, उनके मन में संभवतः एक गुरु–गंभीर विदुषी साधिका का चित्र बन गया होगा।[50] आज महादेवी जी का भौतिक शरीर हमारे साथ नहीं है। उनकी आत्मा (साहित्य) जो हिन्दी जगत में आज भी हमारे बीच है और हिन्दी जगत को उपहार है ये ऐसा उपहार है जो हमारे जैसी आनेवाली पीढ़ी दर–पीढ़ी की मानवीय संवेदना और व्यक्ति की आंतरिक चेतना को जीवंत रखेगा।

उपेन्द्रनाथ अश्क जी का कथन है – कि आज अपना वह गीत पूरे–का–पूरा याद भी नहीं, पहली पंक्तियाँ ही याद हैं और उन्हीं की सहायता से मैं उसे यहाँ लिखता हूँ – कुछ ऐसा था –

म – मानव के पर्दों पर छाओं
ह – हृदय के तारों में बिंध जाओं
। – आँसू बनकर मेरे मानी
द – दर्द भरी फिर कहो कहानी
` – एक बार छेडो तारों को
वी – वीणा की उन झंकारो को
व – वन वन जिससे गूँज उठे थे
ʻ – रस–विभोर हो गूँज उठे थे
मा – मादकता की लहर बहाओ–मानस के पर्दों पर[51]

छायावादी युग, नामकरण, परिभाषा एवं स्वरूप संक्षिप्त में :

सामान्यः दो महायुद्धों के बीच की हिंदी काव्य धारा को छायावाद कहा जाता हैं।

1918 ई. से. 1939 ई. तक कालखंड को हिन्दी साहित्य में छायावादी युग कहा गया हैं। इसका अभिप्राय यह नहीं कि सन् 1918 ई. में अकस्मात यह काव्यधारा अवतीर्ण हो गई। वस्तुतः सन् 1904 –5 से ही स्वच्छंदतावादी प्रवृत्तियाँ हिन्दी काव्य में अंकुरित हो रही थीं, जो सन् 1914 में जयशंकर प्रसाद के काव्य में छायावाद के रूप में संगठित होने लगी थीं। और सन् 1918 ई. से एक सशक्त काव्य–धारा के रूप में छायावाद का प्रभाव छा गया जो दूसरे महायुद्ध तक बना रहा।[52]

नामकरण : छायावाद के संबंध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है, किंतु इतना अवश्य हैं कि 'छाया' शब्द का छायावादी काव्य के स्वरूप और लक्षणों से कुछ भी संबंध नहीं बैठता है। कुछ विद्वानों ने छायावाद के नामकरण के बारें में अपने मत प्रस्तुत किया हैं जो इस प्रकार हैं –

आचार्य शुक्ल :– शुक्ल जी का कहना है कि बंगला में प्रतीकात्मक अध्यात्मवादी रचनाओं को छायावादी कहा जाता था अतः उसके अनुकरण पर हिन्दी साहित्य में ऐसी रचनाओं के लिए छायावाद नाम चल पड़ा।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी :– द्विवेदी जी के शब्दों में कहें तो बंगला में छायावादी नाम कभी चला ही नहीं।

मुकुटधर पांडेय के मतानुसार सर्वप्रथम व्यंग्यात्मक रूप में इस शब्द का स्वच्छन्दतावादी नवीन अभिव्यक्तिमयी रचनाओं के लिए प्रयोग किया गया, जो कि बाद में इस कविता के लिए रूढ़ हो गया और स्वयं स्वच्छन्दतावादी कवियों ने इसे अपना लिया।

जयशंकर प्रसाद :– वे इस संबंध में लिखते हैं कि "मोती के भीतर छाया जैसी तरलता होती है, वैसी ही कांति की तरलता अंग में लावण्य कही जाती है।"

महादेवी वर्मा इस संबंध में लिखती हैं – "सृष्टि के बाह्याकार पर इतना लिखा जा चुका था कि मनुष्य का हृदय अभिव्यक्ति के लिए रो उठा। स्वच्छन्द छन्द में चित्रित उन मानव अनुभूतियों का नाम उपयुक्त ही था और मुझे आज भी उपयुक्त लगता हैं।"

प्रसाद और महादेवी वर्मा के उपयुक्त कथनों में चिंतन के स्थान पर भावुकता है।

छायावाद की परिभाषा :– छायावाद क्या हैं? उस विषय में हिन्दी साहित्य के विद्वानों में अनेक मतमतांतर हैं।

आचार्य शुक्ल :– आचार्य शुक्ल ने छायावाद का ग्रहण दो अर्थों में किया है। एक तो आध्यात्मिकता – प्रधान प्रतीकवादी हिन्दी कविताएँ और दूसरा एक विशेष प्रकार की अभिव्यक्ति शैली उनके शब्दों में.... "छायावाद का शब्द प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहाँ उसका संबंध काव्यवस्तु से होता है।

छायावाद का दूसरा प्रयोग काव्य-शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में होता है।''[53]

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने छायवाद को ''नवीन भाषा शैली के साथ सांस्कृतिक चेतना के परिणाम रूप'' में देखा हैं, तो डॉ. रामकुमार वर्माने लिखा हैं– ''परमात्मा की छाया आत्मा में पड़ने लगती है और आत्मा की छाया परमात्मा में, यही छायावाद है।''

डॉ. नगेन्द्र छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह माना है। उनके अनुसार 'छायावादी एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है, जीवन के प्रति एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है।'

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के अनुसार, ''मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किंतु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भान मेरे विचारों में छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती हैं।''[54]

आचार्य शुक्लजी ने उसे रहस्यवाद और अभिव्यक्ति की लाक्षणिक प्रणाली मात्र समझा। इस अवस्था में स्वयं छायावादी कवियों को परिभाषित करना पड़ा।

छायावादी कवियों की परिभाषा

जयशंकर प्रसाद : कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश-विदेश की सुंदरी के बाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभुतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया।... इसी ढंग की कविताओं में भिन्न प्रकार के भावों को नए ढंग से अभिव्यक्ति हुई। ये नवीन भाव आंतरिक स्पर्श से पुलकित थे।... छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर अधिक निर्भर है। धन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौदर्यमय प्रतीक विधान-तथा उपचार-वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृत्ति छायावाद की विशेषताएँ हैं।

सुमित्रानंदन पंत :- द्विवेदी युग के बाद छायावादी युग का समारंभ होता है। मन की नीरव विधियों से निकलकर लाज भरे सौंदर्य में लिपटी एक नवीन काव्य-चेतना युग के निभृत प्रागंण हो सहसा स्वप्न मुख कर देती है। पिछली वास्तविकता की इतिवृत्मकता नवीन कला संकेतों के अरूप सौंदर्य में तिरोति होकर भावना के सूक्ष्म अवगुंठनों के कारण रहास्यमयी प्रतीत होने लगती है।''[55]

महादेवी वर्मा :- ''छायावादी कवि धर्म के आध्यात्म से अधिक दर्शन के ब्रह्म का ऋणी है, जो मूर्त और अमूर्त को मिलाकर पूर्णता पाता है। बुद्धि के सूक्ष्म धरातल पर कवि ने जीवन की अखंडता का भाव किया। हृदय की भावभूमि पर उसने प्रकृति में बिखरी सौंदर्य-सत्ता की रहस्यमय अनुभूति की और दोनों के साथ स्वानुभूत सुख-दुखों को मिलाकर एक ऐसी काव्य-सृष्टि उपस्थित कर दी जो प्रकृतिवाद, हृदयवाद,

अध्यात्मवाद, छायावाद आदि अनेक नामों का भार संभाल सकी।''

डॉ. रामकुमार वर्मा :- छायावाद हृदय की एक अनुभूति हैं। वह भौतिक संसार के क्रोड़ में प्रवेश कर अनंत जीवन के तत्व ग्रहण करती है। उसे हमारे वास्तविक जीवन से जोड़कर हमारे हृदय में जीवन के प्रति एक गहरी संवेदना और आशावाद प्रदान करती हैं।

''छायावाद शब्द का विश्लेषण करते हुए श्री शांतिप्रिय द्विवेदि ने कहा हैं, 'छाया शब्द यदि उसकी कला के स्वरूर (अभिव्यक्ति) को सूचित करता है वो वाद उसके अन्तः प्रकाश अभिव्यक्ति को छाया की तरह उसके कला रूप में परिवर्तन होता रहता हैं, किंतु उसका प्रकाश अक्षुण्ण रहता हैं।''[55]

छायावाद का स्वरूप :- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने छायावाद के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा हैं – ''छायावाद नाम उन आधुनिक कविताओं के लिए बिना विचारे ही दे दिया गया जिनमें मानवतावादी दृष्टि की प्रधानता थी। जो वक्तव्य विषय को कवि व्यक्तिगत चिंता और अनुभूति के रंग में रंगकर अभिव्यक्त करते थे। जिनमें मानवीय आचारो, विचारों, क्रियाओं, चेष्टाओ और विश्वासों के बदलते हुए अलंकार, मूल्यों को अंगीकार करने की प्रवृत्ति थी। जिनमें छन्द, रस, ताल, तुक आदि सभी विषयों में गतानुगतिकता से बचने का प्रयत्न था और जिनमें शास्त्रीय रूढ़ियों के प्रति कोई आस्था नहीं दिखाई थी।''[56]

सभी परिभाषाओं को ध्यान में रखकर छायावाद का स्वरूप स्पष्ट करते हुए डॉ. गणपतिचन्द गुप्त के शब्दों में कहें तो कह सकते हैं– ''भारतीय काव्य परम्परा में हिन्दी कविता की छायावादी धारा अपने पूर्ववर्ती युग की प्रतिक्रिया में प्रस्फूटित एक विशेष भावात्मक द्रष्टिकोण, एक विशेष दार्शनिक अनुभूति और एक विशेष शैली है, जिसमें लौकिक प्रेम के माध्यम से आलौकिक प्रेम के व्याज से लौकिक अनुभूतियों का चित्रण है, जिसमें प्रकृति का मानवीकरण है, वेदना की विवृत्ति है, सौन्दर्य चित्रण है, गीति–तत्वों की प्रधानता है और व्यक्तिवाद के 'स्व' में सर्व सान्निहित हैं।''

छायावाद के प्रमुख आधार स्तंभ कवि :- प्रसाद, निराला, पंत छायावाद में महादेवी जी का स्थान और योगदान संक्षिप्त में

सन् 1920 ई. आस–पास कुछ नये प्रतिभावान कवियों का हिन्दी में प्रवेश, जो देश–विदेश के समुन्नत साहित्य का पर्याप्त गंभीर अध्ययन, सुरूचि–सम्पन्न हृदय और सुसंस्कृत दृष्टि लेकर आये थे। उन्होंने भावना की अतल गहराईयों में झांका, कल्पना के उच्च हिम–शृंगों के दर्शन कराए और भाषा की अलक्षित शक्तियों का उदघाटन करते

हुए हिन्दी कविता को श्रेष्ठतम उपलब्धियों से समृद्ध किया।[57] जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पंत और महादेवी वर्मा इन चारों कवियों ने साहित्य में छायावाद को गौरवपूर्ण स्थान दिलाया।

डॉ. इन्द्रनाथ मदान के शब्दों में :– ''छायावादी काव्य में प्रसाद ने यदि प्रकृति तत्व को मिलाया, निराला ने मुक्तक छन्द दिया पंत ने शब्दों को खराद पर चढ़ाकर सूडौल और सरल बनाया तो महादेवी जी ने उनमें प्राण डाले।''[58]

प्रसाद जी छायावादी काव्यधारा के प्रवर्तक एवं मुख्य आधार–स्तम्भ के रूप में विख्यात हैं। इन्होंने कूल नौ (9) काव्य कृतियों का सृजन किया हैं, जिनके अंतर्गत चित्रधार, कानन कुसुम, महाराणा प्रताप का महत्व, करुणालय, प्रेमपथिक, झरना, आसूँ, कामायनी और लहर का समावेश किया जाता है। प्रारम्भ में वे ब्रजभाषा में कविताएँ लिखा करते थे, किंतु सन् 1913 –14 ई. में इन्होंने खड़ीबोली में लिखना शुरू कर दिया। उनकी प्रारम्भिक कविताओं का प्रकाशन 'इदु' नामक पत्रिका में होता रहा। उसी पत्रिका के द्वारा वे हिन्दी पाठकों के सामने आये। भारतीय इतिहास और संस्कृति के व्याख्याता, दिव्य–सौन्दर्य और कोमल स्वरों के गायक के रूप में वे सहज ही पाठकों के कण्ठहार बन गये। उनके गीतों में स्वच्छन्दता की रागिनी झंकृत होती हैं, उनका स्वर ध्वनित होता हैं; वे इस अर्थ में पुनरुत्थान के एक सजग एवं सफल कवि के रूप में हमारे सामने आते हैं।

छायावाद के महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का प्रथम काव्य–संग्रह 'परिमल' सन् 1926 ई. में प्रकाशित हुआ जो छायावाद का प्रतिनिधि काव्य–संग्रह कहलाता है। परिमल में छायावाद की तमाम प्रवृत्तियों की झलक मिलती हैं। उनकी अन्य प्रमुख काव्य कृतियों में अनामिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते, अर्चना, और अराधना का समावेश किया जाता है। इन्होंने अपनी युवापुत्री 'सरोज' के असमय निधन पर 'सरोज–स्मृति' नाम से जो कविता लिखी, वह शोकगीत या शोककाव्य के नाम से विश्वभर में विख्यात है। इन्होंने हिन्दी को नवीन भाव, नवीन–भाषा और मुक्त छंद प्रदान किये हैं। छायावाद को अद्वैतवादी दर्शन की दृढ़ भूमि पर प्रतिष्ठित करने का सर्वाधिक श्रेय निरालाजी को मिलता है।

कोमल प्रकृति के सुकुमार कवि श्री सुमित्रानंदन पंत का प्रकृति से गहरा लगाव रहा है। प्रकृति ने पतंजी के जीवन में मां, बहन प्रियतमा एवं पत्नी जैसी अनेकविध भूमिकाएँ निभाई है। पंत जी की प्रमुख काव्य कृतियों के अनतर्गत, वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गंजन, युगांतर, युगवाणी, ग्राम्य, स्वर्णकिरण, वस्वर्णधूलि, गुन्तर, रा, रजन, शिखर, शिल्पी, प्रतिमा–सौवर्ण, वाणी चिदम्बर, रश्मिबंध, 'कला और बूढ़ा चाँद', अभिषेकित, हरी बांसुरी

सुनहरी टेर, और लोकायतन का समावेश किया जाता है। 'चिदम्बर' को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार और 'कला' और बूढ़ा चाँद को साहित्य अकादमी का सर्वोच्च पुरस्कार मिल चुका है।[59]

छायावाद में महादेवी जी का स्थान, योगदान संक्षिप्त में :-

महादेवी जी हिन्दी जगत की कवयित्रियों में मूर्धन्य स्थान रखती हैं; साथ ही छायावाद को स्थापित करने वालों में उनका प्रमुख श्रेष्ठ स्थान है। महादेवी जी ने अपने कवि जीवन के आरम्भ में ही जिस अश्रुजल सिंचित, कल्पना ललित, रागरंजित प्रणय पथ पर पद-निक्षेप किया था, साधना की जो डगर पकड़ी थी और पीरा-दर्शन की जो लीक निर्धारित की थी, उस पर वह उसी धुन में बढ़ती चली गयीं। प्रगति, प्रयोग के युग पारकर इस अकविता के युग तक उस दिशा में कहीं भी कोई ऐसा मोड़ नहीं आया, जिसने उसकी दिशा बदली हो या उनके कविकर्म का परिवेश परिवर्तित किया हो। प्रगतिवाद के प्रचंड प्रहार ने भी उनका संगीत स्वरहीन नहीं किया। प्रयोगवादी आकर्षण ने उनका तालभंग नहीं किया और अकविता के अटपटे भटकाव ने उन्हें भटकाया नहीं। छायावादी काव्यधारा में महादेवी अकेली ऐसी कवयित्री हैं, जिनमें आज भी युग जीवित और जागृत हैं।[60]

श्री विनय मोहन शर्मा की यह उक्ति ठीक बैठती हैं: कि छायावाद युग ने महादेवी को जन्म दिया और महादेवी ने छायावाद को जीवन, सच हैं।[61] निश्चय ही छायावाद को जितनी गहराई से महादेवी जी ने पहचाना हैं, उतना सभवतः किसी अन्य कवि ने नहीं।[62]

महादेवी वर्मा की संपूर्ण कृतियाँ गीत और गद्य में विभाजित हैं। निहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, और सन्धिनी उनके गीतिकाव्य हैं। सन्धिनी से पहले पाँच संग्रह प्रकाशित हैं, जो कवयित्री के कलापूर्ण चित्रों से साज्ञित हैं। इनमें प्रायः प्रत्येक गीत का भाव चित्रित किया गया है। इस के अतिरिक्त 'सप्तपर्णा' नामक एक काव्यानुवाद भी उपलब्ध है। निहार की भोली जिज्ञासाओं से लेकर सन्धिनी के प्रौढ़ गीतों के सृजन-युग तक पहुँचते-पहुँचते उन्हें न जाने कितने अवरोधों का सामना करना पड़ा, कितनी कड़वी-मीठी स्मृतियाँ संजोनी पड़ी और कैसी-कैसी सुख दुःखमयी अनुभूतियाँ उन्हें हुई ? किन्तु उन्हें न तो कभी इसकी शिकायत रही, न कोई पश्चाताप संताप, जिसका उल्लेख उन्होंने इन शब्दों में किया है -"मार्ग चाहे जितना असपष्ट रहा, दिशा चाहे कितनी कुहरा-सम्पन्न रही किंतु भटकने, दिग्भ्रांत होने चली हुई राह में पग-पग गिन-गिन कर चलने का अथवा पश्चाताप करते हुए लौटने का अभिशाप मुझे नहीं मिला।" 'निहार' की रचना महादेवी ने उस समय की जब उनके सामने कोई स्पष्ट मार्ग न था। 'छायावाद'

के उस कुहरावृत्त उदयकाल में निहार (कुहरा) की रचना हुई जब तक इस नई कोमल काव्य प्रवृत्ति का कोई नाम करण नहीं हो पाया था। निहार के बाद रश्मि का उदय (सृजन) निःसंदेह कवयित्री की दिशा निर्दिष्टता का प्रतीक है। रश्मि की उजास-शक्ति कुहरे को भेदकर दिशाओं को स्पष्ट कर देती है। उसी प्रकार से नीरजा (कमल) की आँखे खुलती हैं, जो मेघ या ज्ञानकोष का प्रतीक है। यह नीरजा की अपेक्षा कृत पौढ़ता का संकेत है। 'सान्ध्य-गीत' और 'दीपशिखा' के गीत अधिक प्रौढ़ और मर्मस्पर्शी हैं। महादेवी के अधिकांश गीत रात्रि के नीरव क्षणों और अविरल साधना का प्रतीक अंकपित 'दीपशिखा' से संबंधित है। सन्धिनी में कवयित्री की बिखरी अनुभूतियों और विविध अर्चना-क्षणों की करुण अनुभूतियों का संकलन है, रहस्यमय प्रणय व्यापारों एवं संबन्धों की अभिव्यक्ति है और है - वेदनाओं की आकुल अभिव्यक्ति। इन सबका संकलन 'यामा' नामक बृहद-संग्रह में किया गया है। रात्रि के जिन चार यामों में यामा विभाजित हैं, उनमें से भी संध्या रात्रि निःशेषतक के गीतों का क्रमशः विकास दिखाई देता हैं। यह विकास भावपक्ष से लेकर कलापक्ष तक का है। महादेवी जी का भावलोक जैसे-जैसे प्रौढ़ होता गया, उसी प्रकार उनकी कल्पनाएँ उदात्त होती गई और अनुभूतियों में गंभीर्य आता गया।[63]

छायावाद की मूर्धन्य कवयित्री एवं सजल गीतों की गायिका महादेवी वर्मा आधुनिक युग की मीरा कहलाती है। महादेवी के गीतों में करुणा का सागर लहराता है। दुःख और रुदन से ही प्रस्फुटित होकर उनकी कविता जन्म लेती है। उनके दुःखवाद में आध्यात्मिक तत्व प्रधान है। वस्तुतः वेदना प्रणय और प्रकृति-यही तीन प्रमुख भाव महादेवी जी के काव्य के आधार है। जिन्हें उन्होंने अपने भाव और चिंतन के सामंजस्य एवं असंतुलन से कलात्मक अभिव्यक्ति दी है। अपनी काव्य-सृष्टि में उन्हें जीवन के प्रत्यक्ष सौन्दर्य और 'परोक्ष सत्य' की उपलब्धि अभीष्ट है। अतः वह अपने सारे कवि कर्म में इन्हीं के सामंजस्य में संलग्न रही हैं। उनके गीतों में न मानवीय अनुभूतियों के सत ही स्वर मिलेंगे और न ही शारीरिक आकर्षण की चटक-मटक। उनके काव्य में सूक्ष्मता-सुकुमारता और सांकेतिकता का अदभूत साम्य नजर आता है। दार्शनिक चिंतन, स्त्री-सुलभ कोमलता, साहित्यिक परम्परा से प्राप्त सौन्दर्य और प्रकृति का रंगीन चित्रण ये सब कुछ हमें महादेवी जी के काव्य में मिलते हैं। इनकी कविता में संगीतकला, चित्रकला, और काव्यकला की त्रिवेणी नजर आती है। इनके काव्य और गीतों में छायावाद की तमाम प्रवृत्तियाँ उभर आयी है।[64]

'निहार' से सन्धिनी तक के उनके गीत एक तरहसे मुखर-चित्र ही हैं। प्रकृति के विविध रूप एवं रंगीन चित्र कहीं भी मूक या जड़ नहीं। यही छायावादी काव्यधारा

में महादेवी जी की सबसे बड़ी उपलब्धि है। छायावाद काव्य-कानन की कोकिला के नाम से विख्यात महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व की तुलना 'आलवार संत' महिला हिन्दाल, बसरे की मुस्लिम अध्यात्मवादिनी रबिया, अंग्रेजी गीतकार क्रिस्टिना रोज़ेटी और भारत की प्रसिद्ध प्रेम-दिवानी मीराबाई से की जाती है। कुल मिलाकर छायावादी काव्यधारा में महादेवी वर्मा का योगदान महत्वपूर्ण एवं अनूठा रहा है, जो हिन्दी साहित्य के इतिहास में अविस्मरणीय है।[65]

महादेवी जी की पद्य-कृतियों का सामान्य परिचय एवं काव्य का महत्व

काव्य : प्रथम रचना सन् 1914, ब्रजभाषा में समस्यापूर्ति सन् 1915, खडी बोली में रचित प्रथम कविता सन् 1918, चाँद के प्रथम अंक में प्रौढ़ रचना सन् 1922, बच्चों के लिए नाटक सन् 1932।

निहार सन् 1930, रश्मि सन् 1932,[66] नीरजा सन् 1935,[67] सांध्यगीत सन् 1936, यामा सन् 1939,[68] आधुनिक कविता सन् 1940,[69] दीपशिखा सन् 1942, सप्त पर्ण सन् 1960, हिमालय सन् 1963,[70] सन्धिनी सन् 1965,[71] महादेवी के श्रेष्ठ गीत, पितृ-पर्व तथा प्रभा।

साहित्य जगत का यह एक बहुत बड़ा सत्य है कि जब कोई प्राणी पहले लेखनी उठाता है तो उसकी रचनाओं में भाव कम तथा शब्दों का बाहुल्य होता है। लेकिन कुछ दिनों पश्चात् भाव और भाषा का सन्तुलन हो जाता है और फिर ऐसा भी समय आता है कि जब वह थोड़े-थोड़े शब्दों में गहरे-गहरे भावों को सहज रूप से व्यक्त कर देता है। 'निहार' में देवी जी प्रारम्भिक अवस्था में पदार्पण करती हुई प्रतीत होती हैं।[72]

1) निहार :- 'निहार' कुहरे को कहते हैं। इस काव्य संग्रह का प्रकाशन सन् 1930 ई. में हुआ। काव्य संग्रह के साथ उनकी काव्य चेतना का सुनिश्चित आरम्भ हुआ है। कवयित्री ने स्वंय लिखा है, 'निहार का अधिकांश भाग मेरे मैट्रिक होने के पहले लिखा गया है। अतः उतनी कमविद्या बुद्धि से पाश्चात्य साहित्य के अध्ययन की कोई सुविधा न मिल सकना ही स्वाभाविक था।' अपनी इस काल की रचनाओं के विषय में महादेवी जी ने लिखा है, "इस समय से मेरी पद्धति एक विशेष दिशा की ओर उन्मुख हुई जिसमें व्यक्तिगत दुःख समष्टिगत गम्भीर वेदना का रुप ग्रहण करने लगा और प्रत्यक्ष का स्थूल रूप एक सूक्ष्म चेतना का आभास देने लगा। कहना नहीं होगा कि इस दिशा में मेरे मन को वही विश्राम मिला जो पक्षी शावक को कई बार गिर उठकर अपने पंखों को सम्भाल लेने पर मिलता है।"[73] निहार में व्यक्तिगत दुःख वेदना का रूप ग्रहण कर आध्यात्मवाद की अभिव्यक्ति हुई है।

महादेवी जी ने निहार के सम्बन्ध में लिखा है – "निहार के रचना-काल में मेरी

अनुभूतियों में वैसी ही कुतुहल–मिश्रित वेदना उमड़ आती, जैसी बालक के मन में दूर दिखाई देने वाली अप्राप्त – सुनहली उषा और स्पर्श से दूर सजल मेघ के प्रथम दर्शन से उत्पन्न हो जाती है।''[74] निहार में वेदना की विवृत्ति का कारण है ससीम का असीम की चेतना से व्युत्पन्न क्रन्दन, इसी कारण इसका धरातल व्यक्तिगत और अंर्तमुखी है, यह पीड़ा प्रिय के परिज्ञान से ही उदभूत है। फिर भी कवयित्री के ससीम का साम्राज्य भी उतना ही महान है जितना असीम का। यहीं एकान्तप्रियता के साथ ही आत्म, परम, एवं प्रकृति तत्व की पृथकता का मान है।[75] 'निहार' में महादेवी वर्मा के काव्य की रुप–रेखा बन रही है। एक अव्यक्त पीड़ा इन छन्दों में भी है, किंतु उसका कोई स्थिर रूप नहीं। कवयित्री के मन में एक हूक उठती है, वह गाने लगती है– इससे कुछ मतलब नहीं क्या? इन गीतों में एक कहीं कुछदूर की पुकार हैं, पवन का एक झोंका, लहरों की एक करवट, तारों का कुछ सन्देश :

''जब असीम से हो जायेगा
मेरी लधु सीमा का मेल–'

इस पुकार को 'छायावाद' कहा गया है।[76] 'निहार' के गीतों में से ऐसी ध्वनि निकलती है जिससे कवयित्री का जीवन विरहमय हो गया है। 'निहार' संग्रह में जिज्ञासावृत्ति है। ससीम ने उस अपरोक्ष सत्ताकी प्रत्यक्ष अनुभूति कर ली है। मूक मिलन हुआ है। इसलिए अभाव के अंतर्भाव के कारण वेदना का उन्मेष है।[77]

किसी जीवन की मीठी याद
लुटाता हो मतवाला प्रात
कली अलसाई आँखें खोल
सुनाती हो सपने की बात :

इस में कवयित्री का अंतर्मन खुल गया है। और सभी गीतों में यही भाव उद्घाटित हुआ कि अव्यक्त वेदना के साथ प्रियतम के पक्ष में बलिदान हो जाना ही साधिका का लक्ष्य होना चाहिए।[78] महादेवी जी ने निहार में पुष्प के शैशव से लेकर उसके सूखकर धरती पर झड़ जाने तक का वर्णन किया है। प्रकृति वर्णन के माध्यम से किया है। 'निहार' के बाद से ही आपकी प्रतिभा का स्वतंत्र विकास हुआ ऐसा कह सकते हैं। जय शंकर प्रसाद के शब्दों में 'निहार' महादेवी जी की दुःखपरक साधना का आरंभ है। इन कविताओं में एक स्नेही की साधना एक दार्शनिक की तन्मयता तथा एक विराग की करुणा की मार्मिकता का सम्मोहन मिलता है।[79] महादेवी की निराशा असत्य के प्रति है। वे जीवन के सत्य को समझती हैं। वे जीवन के प्रति आस्थावान हैं। जिस पिण्डा को लेकर मानव आत्मा जीती है, उसमें वेदना ही वेदना है। संसारिक जीवन की वेदना को

जाग्रत आत्मा ही अनुभव करती है। आंतरिक कष्ट और नश्वरता के कटु विष महादेवी के दुःखमय विचारों को जन्म देते हैं, जो मूलतः सत्य है। पुरानी परम्परा से आगे आकर महादेवी जी इस नश्वर जीवन के कटू सत्य को पीकर स्वयं को अन्य के प्रति समर्पित करने की प्रेरणा देती हैं। यही उनकी उच्च मानवता है। यहाँ विरक्ति और पलायन नहीं, जीवन के प्रति सात्विक आसक्ति है।[80]

रश्मि : रश्मि (किरण) की तरह प्रकाशित हुई हैं, इस संग्रह का प्रकाशन सन् 1932 में हुआ। यह कवयित्री का दूसरा काव्य संग्रह है। इसमें सन् 1929 से 1931 तक के रचित गीत संग्रहीत हैं।[81]

महादेवी जी ने रश्मि के सम्बन्ध में लिखा– 'रश्मि' को उस समय आकार मिला, जब मुझे अनुभूति से अधिक उसका चिंतन प्रिय था।[82] 'रश्मि' में भी प्रतीकात्मक रूप में प्रयुक्त शब्द हैं। 'रश्मि' में अनुभूति की अपेक्षा चिंतन–प्रधान दर्शन का प्राधान्य हैं। जो कवयित्री 'निहार' में अपना रास्ता खोज रही थी 'रश्मि' में आकार एक सुनिश्चित पथ पर अग्रसर होने लगी थीं।[83] 'रश्मि' में कवयित्री के जीवन दर्शन की दुःख वादी भूमिका उभरकर सामने आई है।[84] सूक्ष्म रूप से रश्मि एवं प्रकाश में अभेद हैं क्यों कि प्रथम में द्वितीय स्वरूप के कारण ही प्रतीति की अवस्था है, उसी तरह वस्तु रूप में तत्व का आभास ऊर्जा का ही प्रतिफलन हैं जिस तरह रश्मि की सत्ता उसके प्रकाश होने में है। उसी तरह ससीम का आकार उस असीम की ही सत्ता का बोध है।[85] इस संग्रह की कविताओं में भी जिज्ञासा और कौतुहल की अधिकता है किंतु समाधान दृढ़ और अडिग है।[86] इस संग्रह की कविताओं तक पहुँचते–पहुँचते कवयित्री की मानसिक स्थिति में पर्याप्त परिवर्तन आ गया था। निम्न पंक्तियों में देखिए –

"इन कनक रश्मियों में अथाहलेता हिलोरतन–सिन्धुजाग,
बुद–बुद से बह चलते अपार उसमें विहगों के मधुरराग,
बनती प्रवाल का मृदुल फूल जो क्षितिज रेखा थी कुहर म्लान।"

यह आध्यात्मिक जागृति का गीत है। आध्यात्मिक साधना को कवयित्री ने काव्य साधना का मेरूदण्ड बना लिया था 'रश्मि' के गीतों में अद्वैतवाद, वेदांत तथा उपनिषदों की छाया स्पष्ट हैं। कवयित्री ने आत्मा, परमात्मा तथा प्रकृति का स्वरूप निरूपण अति भावमयी भाषा में किया है।

'रश्मि' वस्तुतः उनकी आत्मा की 'रश्मि' है उदाहरण –

'मैं तुमसे हूँ एक, एक है, जैसे रश्मि प्रकाश।।
मैं तुमसे हूँ भिन्न, भिन्न ज्यों धन से ताड़ित विलास।'

'एकोह वहुस्याम' ब्रह्म की इस इच्छा का प्रसार यह सृष्टि हैं।[87]

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The M. S. University of Baroda

'रश्मि' में एक गीत है –

> "दिया क्यों जीवन का वरदान !
> इसमें है झंझा का शैशव
> अनुरजित कलियों का वैभव
> मलय पवन उसमें जाता भर मृदु लहरों के गान"

जीवन के वरदान में जहाँ वे झंझा का शैशव देखती हैं वही पर उन्हें कलियों का वैभव भी दीख पड़ता है उसे मलय पवन मृदु लहरों के गान से भी भर–भर जाता है। सुख–दुःख दोनों ही जीवन को जीने योग्य बनाते हैं।[88] संग्रह की अंतिम कविता की अंतिम पंक्तियों में यह दृष्टव्य हैं–

> इस आशा से मैं उसमें
> बैठी हूँ निष्फल सपने घोल
> कभी तुम्हारे सस्मित अधरों–
> को छू वे होगें अनमोल !

हम उनके कथन से सहमत हो सकते हैं कि 'व्यक्तिगत सुख विश्ववेदना में घुलकर जीवन को सार्थकता प्रदान करता है और व्यक्तिगत दुःख विश्व के सुख में घुलकर जीवन को अमरत्व[89] – 'रश्मि' में महादेवी जी ने जैसे अपनी विरह वेदना का समाधान दार्शनिक स्तर पर किया हो। 'रश्मि' में भावात्मक तथा सर्जनात्मक का प्राचुर्य हैं। 'रश्मि' में आत्मा, प्रकृति तथा परमात्मा की एकता मिश्रित है। 'रश्मि' में कवयित्री का जीवन–मृत्यु, सुख और दुःख प्रकट हुआ है।

'नीरजा' महादेवी के अनुभूति एवं चिंतन प्रधान 58 गीतों का संकलन है। काव्यों की दृष्टि से यह मुक्तक गीति काव्य के भीतर आती है।[90] 'नीरजा' का शब्दिक अर्थ हैं, वेदना के जल से उत्पन्न अनुभूतियाँ [91] यह महादेवी जी का तीसरा गीत संग्रह है। इसमें सन् 1931 से सन् 1938 तक के रचित गीत संग्रहीत है। इस का प्रकाशन सन् 1935 में हुआ।[92] नीरजा में कवि की अभिव्यंजना, शक्ति रश्मि की अपेक्षा और भी विकसित है तथा भावों में तीव्रता भी आ गई है। नीरजा शब्द का अर्थ उनके अश्रु–स्नात जीवन की ओर संकेत करता है। नीर उनके अश्रु का प्रतीक है तथा 'ज' शब्द से नीर में उत्पन्न कमल उनके जीवन का 'नीरजा' में भी उनकी आकुलता को ही प्रधान रूप से वाणी मिली हैं [93] – अतएव अनवरत अश्रु प्रवाह और सतत क्षणभंगुर स्वप्न प्रणय के चित्रों का संकेतन करते हैं। उनकी आत्मा प्रकृति को अपनी सहचरी बना लेती है। उस प्रकृति के माध्यम से ही वह अपनी आकुलता की पूर्ति करना चाहती हैं। महादेवी जी का मन असीम की प्रतिक्षा में आकुल है– उसकी स्मृति अनुभूति बन गई है और

एक अज्ञात रोमांच ने उसमें प्रणयानुभूति का स्फूरण कर दिया है –

"पुलक पुलक उर सिहर सिहर तन,
आज नयन आते क्यों भर भर !"[94]

कवयित्री, प्रकृति के प्रत्येक रूप में प्रतिबिम्बित अपने प्रियतम को स्वप्न–जगत में आबध्द कर साकर कर लेना चाहती हैं।

'तुम्हें बाँध पाती सपने में
तो चिर जीवन प्यास बुझा,
लेती उस छोटे क्षण अपने में।'[95]

'नीरजा' यदि अश्रुमुखी वेदना के कणों से भीगी हुई है तो साथ ही आत्मानंद के मधुर से मधुर भी हैं।

'तुम मुझ में प्रिय ! फिर परिचय क्या !
तारक में छाव प्राणों में स्मृति,
पलकों में नीरव पद की गति,
लघु उर में पुलकों की संसूति
भर लाई हूँ तेरी चंचल
और करूँ जग में संचय क्या
तुम मुझेमें प्रिय फिर परिचय क्या।'[96]

यहाँ पर महादेवी जी ने अपने में उस प्रियतम को अपने से भिन्न न मान कर एकाकार हो गई है और इसी कारण अब उन्हें प्रिय का कोई परिचय भी नहीं चाहिये।

कवयित्री अपने अन्तर के हर्षातिरेक में बेसुध होकर गीत लिखने बैठती हैं।

'बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ !
नयन में जिसके जलद वह तृषित चातक हूँ,
शलभ जिसके प्राण में, वह निठुर दीपक हूँ,
फूल को उस में छिपाये विकल बुलबुल हूँ,
एक होकर दूर तन से छाँह वह चल हूँ,
दूर तुम से हूँ अखंड सुहागिनी भी हूँ !
बीना भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ।[97]

'नीरजा' में पहुँचकर महादेवी जी अपने उक्त कथन की सार्थकता सिद्ध करती प्रतीत होती हैं। यहाँ वे दुःख के साथ सुख का अनुभव कभी–कभी कर लेती हैं अब उनका विषाद मिट सा चला हैं।[98]

इस तरह आँख मिचौनी, उपालम्भ और मिलन की तीव्रकांक्ष के कई चित्रों से नीरजा श्रृंगारित है। जब प्रिय प्रेयसी के ही अन्तर में व्याप्त है तो फिर परिचय की क्या आवश्यकता है। कहीं कहीं तो ससीम-असीम का यह भेद ही समाप्त सा दृष्टिगत होता है।

'चित्रित तू मैं हूँ रेखाक्रम,
मधुर राग तू मैं स्वर संगम,
तू असीम मैं सीमा का भ्रम,
काया छाया में रहस्यमय !
प्रेयसि प्रीतम की अभिनय क्या!'

अतएव चित्र और रेखा, राग और स्वर असीम और सीमा का भ्रम के काव्य-कृतियों का विश्लेषण द्वारा इसी अभेद की ओर संकेत हैं। सीमा का भ्रम दर्शन की शब्दावली उस असीम का ही संकेत है। वस्तुतः अद्वैत होने से इस द्वैत के अभिनय की आवश्यकता ही क्या है। इस प्रकार यह दृष्टव्य है कि जहाँ महादेवी नीरजा में असीम असीम के सम्बन्धों की दार्शनिक व्याख्या में अद्वैत का ही आख्यान करती है।[99] इस प्रकार नीरजा में परमात्मा के प्रति आकुल आत्म-निवेदन है और ससीम और असीम के तात्विसम्बन्ध और सुख-दुख का एक दूसरे में समन्वय है। नीरजा में कवयित्री का द्वैत अद्वैत के प्रति अभेदता की अनुभूति हो गई है। द्वैत ही अद्वैत है का अंतर्भास हो गया है।

सांध्यगीत :- सांध्याकालीन गीत अर्थात मिलन की पूर्व प्रतीक्षा के गीत।[100] इस संग्रह का प्रकाशन सन् 1936 में हुआ। महादेवी जी का चौथा गीत-संग्रह है। इस संग्रह में सन् 1934 से सन् 1936 तक की कालावधि में लिखित गीत संग्रहीत हैं। 'सांध्यगीत' में महादेव जी की मानसिक और आध्यात्मिक साधना का राग है।[101] इसमें 45 रचनाएँ संकलित की गई है। इस कृति की भूमिका में कवयित्री ने अपने विचार व्यक्त करते हुए स्पष्ट किया है 'नीरजा और सांध्यगीत मेरी उस मानसिक स्थिति को व्यक्त कर सकेंगे जिमसें अनायास ही मेरा हृदय सुख-दुःख में सामंजस्य का अनुभव करने लगा। पहले बाहर खिलने वाले फूल को देखकर मेरे रोम-रोम में ऐसा पुलक दौड़ जाता था मानो वह मेरे हृदय में खिला हो परंतु उसके अपने से भिन्न प्रत्यक्ष अनुभव में एक अव्यक्त वेदना भी थी। फिर वह सुख-दुःख मिश्रित अनुभूति ही चिंतन का विषय बनने लगी और अब अंत में मेरे मन में न जाने कैसे उस बाहर-भीतर में एक सामंजस्य सा ढूंढ़ लिया है जिसने सुख-दुःख को इस प्रकार बुना दिया कि एक के प्रत्यक्ष अनुभव के साथ दूसरे का अप्रत्यक्ष आभास मिलता रहा है।[102] सांध्यगीत संध्या के सौदर्य परक

प्रशांत किंतु रंगीन वातावरण में केन्द्रित मनोदशा का प्रतीक और प्रणय के तरल धरातल पर निश्चल भावना से अभिभूत उपासना का गीत है। ''प्रतीकात्कम रूप से यह संध्या के गीत हैं। जिसमें अद्वैत, द्वैत का सम्मिलन है और है जीवन की पावनता की स्पष्टतम झाँकी।''[103]

'आकुलता ही आज
हो गई तन्मय राधा,
विरह बना आराध्य
द्वैत क्या कैसी बाधा'

वस्तुतः साधन में ही साधक का तदाकार होना साध्य हेतु भी द्वैत निःशेष करता है – माध्यम ही द्वैतमूलक है और उसी के साथ तादात्मय में द्वैत की भी संस्थिति नहीं रहती, केवल एक चेतना सीमाओं से परे अपरोक्ष की अनुभूति में डूब जाती है।[104]

जीवन की वस्तुतः ज्वाला है जिसके बिना अस्तित्व केवल राख के घर के समान है, एक सुधि उनको जीवन का अमरत्व प्रदान कर देती है और सुधि के अलबम में वही एक पल सदैव के लिए जड़ जाता है जिसमें स्मृति, स्मृति के आधार से ही जीवीत रहती हैं।

'कौन आया था न जाना,
स्वप्न में मुझको जगाने,
याद में उन अंगुलियों के
हैं मुझ पर युग में बिताने।'

कवयित्रि का स्पष्ट मंतव्य है कि वियोग और मिलन स्थितियों से निरंतर यात्रा की स्थिति अच्छी है। इस में अस्तित्व बोध होता रहता हैं ससीमका अस्तित्व विस्मृति का प्रतीक है।[105] प्रिय से मिलनाकु प्रेयसी कहीं विरह की आराधना से स्वयं आराध्यमय हो जाती है कभी उसे विरह का युग मिलन के लघुपल में ही अंतर्निहित लगता है, और प्रिय-भाव के समावेश में सब कुछ मधुर हो जाता है–

'विरह का युग आज दीखा
मिलन के लघुपल सरीखा,
मधुर मुझको हो गए सब मधुर प्रिय की भावना ले,
हो गई आराध्य में विरह की आराधना ले।'[106]

साधना, साधक और साध्य सब एकाकार हो गये हैं। कहीं भेद का प्रश्न नहीं। साधक और साध्य अद्वैत भाव से एक हैं, द्वैत भाव से अलग-अलग दोनों को एक रूप

करने की साधना की चरम परिणति है। आचार्य नन्ददूलारे वाजपेयी के कथनानुसार 'सांध्यगीत' में दार्शनिक एकाग्रता उच्चतर हो उठी है। इन गीतों में रहस्य भावना गहनतम हो उठी हैं।[107] 'सांध्यगीत' इस दृष्टि से इष्ट के प्रतिपूर्ण तादात्मय का काव्य हैं। दुःख सुख में सामंजस्य स्थापित हो जाने के कारण जीवन की रागात्मकता में और भावदीप्ति आ गई हैं।[108]

''मैं नीर भरी दुःख की बदली,
विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना।
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी कल कल थी मिट आज चली।''

जीवन की प्रतिक्रिया से उत्पन्न क्षणभंगुरता के ज्ञान से ससीम को वस्तु स्थिति की कल्पना होती है, जन्म और मृत्यु की परिधियों में बन्द, जीवन दुःख की बदली की तरह है जिसकी आयु का जल समय के प्रवाह में झरता है यह समूची सृष्टि कभी उसकी अपनी नहीं है। 'निहार' की कविताओं में महादेवी उस विराट सत्ता के प्रति समर्पित है, जिसकी वीणा की झंकार से सम्पूर्ण संसार मधुर है।[109]

'सांध्यगीत' यामा की अंतिम कृति है 'सांध्यगीत' में सुख दुःख का समन्वय हो गया है।

यामा :- वस्तुतः यामा से अभिप्राय 'यामासंग्रह' का है। यह संग्रह महादेवी जी की प्रथम चार कृतियों का समग्र रूप है। निहार, रश्मि, नीरजा, और सांध्यगीत इस संग्रह के चार खंड हैं। और सांध्यगीत की 185 रचनायें इसमें संकलित हैं।[110] 'यामा' के प्रकाशन पर 'अपनी बात' में स्पष्ट किया हैं, 'यामा' में मेरे अंतर्जगत के चार यामों का छायाचित्र है। ये यामा दिन के है या रात के यह कहना मेरे लिए असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। यदि ये दिन के हैं तो इन्होंने मेरे हृदय को श्रम से क्लांत बनाकर विश्राम के लिए आकुल नहीं बनाया और यदि रात के हैं तो उन्होंने अन्धकार में मेरे विश्वास को खोने नही दिया; अतएव मेरे निकट उनका मूल्य समान है और समान ही रहेगा।'' यामा के गीतों में चित्रात्मकता अधिक है। प्रत्येक गीत में छन्द लय, ताल, सुरमय है। सभी गीत सफल हैं।[111]

डॉ. विमल कुमार जैन के शब्दों में 'निहार' से तात्पर्य कुहरे से हैं, 'रश्मि' से किरण, नीरजा से कमलिनी और सांध्यगीत से संध्या के गीत है। इस प्रकार इनके सार्थक अभिधान से विदित होता है। कि जीवन के आठ पहरों में से ये दिवस के चार पहर हैं।'[111]

चारों गीत-संग्रह यामा में समाहीत किया गया हैं। अगले पृष्ठों में वर्णन हो चुका है वही यामा का विस्तृत परिचय है। जिस कारण से मुझे नहीं लगता यामा का बढा चढाकर परिचय दिया जाय यामा अपने आप में ही परिचय है।

आधुनिक कवि :- इस गीत चयनिका का प्रकाशन सन् 1940 में हुआ महादेवी जी की चुनी हुई कविताओं का संग्रह है। इसे स्वतंत्र कृति नहीं माना जा सकता क्यों कि पूर्व रचित रचना-संग्रहों से ही कविताएँ संकलित हैं। आधुनिक कवि (प्रथम भाग) हिन्दी साहित्य-सम्मेलन प्रयाग की देव पुरस्कार ग्रंथावली का पहला प्रकाशन है। इसमें निहार, रश्मि, नीरजा, तथा सांध्यगीत के चुने हुए 104 गीत संग्रहीत हैं। इसमें स्वयं कवयित्री ने 'अपनी कविता का दृष्टिकोण' तथा हस्तलिपि का नमूना भी प्रस्तुत किया है। कवयित्री ने 'अपने दृष्टिकोण से' शीर्षक में काव्य, प्रकृति, मानवता, करुणा और वेदना सम्बन्धी अपना चिंतन विस्तृत रूप से दिया है। उसका सार तत्व वही हैं जो उन्होंने अपने रचना संसार में गूँथा है या कहना चाहिए जिसमें उनका रचना संसार रसा बसा है। दृष्टव्य हैं - "जीवन के इतिहास में पशुता की कठोरता से कठोरता की और बुद्धि से बुद्धि की कभी पराजय नहीं हुई है, इस चिर-प्रतीक्षित सिद्धांत की जैसी नयी कसौटी हम चाहते थे, वैसी ही लेकर हमारा ध्वंस-युग आया है, इसके ध्वसावशेष में निर्माण का कार्य मनुष्यता, करुणा और भावनामूलक विश्वास ही से हो सकेगा।'[112]

दीपशिखा :- इस युग में 'दीप-शिखा' का प्रकाशन एक घटना है। महादेवी जी के ही शब्द उधार लेकर हम कहेंगे कि 'जीवन और मरण के इन तूफानी दिनों में रची हुई यह कविता ठीक ऐसी है जैसे झंझा और प्रलय के बीच में स्थित मान्दिर में जलनेवाली निष्कम्प दीप-शिखामें 51 गीत हैं, और प्रत्येक गीत का अर्थवादी एक चित्र है। इसके आतिरिक्त प्रत्येक गीत कवयित्री की अपनी हस्त-लिपी में मुद्रित हैं।[113]

'दीपशिखा महादेवी जी का पाँचवा गीत संग्रह हैं। इसका प्रकाशन 'सान्ध्यागीत' के छः वर्ष पश्चात् सन् 1942 में हुआ। इस में सन् 1936 से सन् 1942 ई. तक की कविताएँ रचित हैं।[114]

दीप-शिखा में दुःख आपना दर्शन खोकर सुख को समर्पण कर बैठी है। पीड़ा की ज्वाला यहाँ दीप-शिखा बन गई है, जो पृथ्वी के कण-कण को आलोक वितरित कर अपना घुल जाना ही वरदान मानती है। इस प्रकार दीप-शिखा की अनुभूति में एक तो रज के प्रति ममत्व और दूसरे विश्वामय अबन्ध गति ये दो नवीन तत्व मिलते हैं। जिसके लिए हमारे युग-जीवन की प्रवृत्तियाँ उत्तरदायी हैं।[114] दीप-शिखा इसी दिशा में एक अलग कदम है। 'दीपक की ज्योती' बनकर जलती है।

दीप आत्मा, एवं शिखा साधना की निरन्तर गतिशील निष्ठा की प्रतीक है, अतः

दीप–शीखा का प्रतिकात्मक अर्थ है आत्मा की साधना। "दीपशिखा में अविश्वास का कोई कम्पन नहीं है। नवीन प्रभात के वैतालिकों के स्वर के साथ इसका स्थान रहे, ऐसी कामना नही, पर रात की सघनता को इस की लौ झेल सके, यह इच्छा तो स्वाभाविक ही रहेगी।'[116]

"दीप मेरे जल अकम्पित घुल अचंचल।
पथ न भूले, एक पग भी, घर न खोये, लघु विहग भी
स्निग्धलौ की तूलिका से आंक सबकी छोह उज्ज्वल"[117]

उसकी ज्वाला स्नेहमयी हो समस्त दृश्य को अंकित कर निष्कम्प होना चाहती है। दीप की यह आस्था इतनी अडिग है कि आंधी एवं प्रलय भी उसके लिए मंगल गाते हुए प्रतीत होते है।[118] कवयित्री नवीन संदेश न देकर साधना की दृढ़ता का प्रतिपादन इन पंक्तियों में कर सकी साधना के स्तर पर समर्पण का भाव आशा का प्रकाश तथा निराशा के तम को सहने की क्षमता की कामना है। अपनी इस कामना के लिए उनके पास न केवल निष्काम कृर्मयोग की साधना है बल्कि अपेक्षित आत्म–विश्वास का दृढ़ सम्बल भी हैं।

'पंथ रहने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला।
अन्य होंगे चरण हारे,
और हैं जो लौटते, दे शुल को संकल्प सारे,
दृढ़वत की निर्माण उन्मद, यह अमरता ना पले पद
बाँध देंगे अंक–संस्तति से तिमिर मे स्वर्ण बेला।'

कवयित्री का गहन आत्मविश्वास है। स्वयं दीपशिखा बनकर दूसरों के कष्टों के निवारण की विश्वमयी इच्छा है।[119] "जीवन और मरण के इन तूफानी दिनों में रची हुई यह कविता ठीक ऐसी है जैसे झझां और प्रलय के बीच में स्थिर मन्दिर में जलने वाली निष्कम्प दीपशिखा।"[120]

'जो न प्रिय पहचान पाती,
दौड़ती क्यों प्रतिशिरा में प्यास विधुत सी तरल बन,
क्यों अचेतन रोम पाते चिर व्याथामय सजग जीवन,
किस लिए हर सांस सजल दीपक राग गाती।

आत्मा समर्पण के बिना आत्माभाव, परमात्माभाव तथा सर्वात्मभाव अलभ्य है और आत्मा समर्पण तभी होगा जब अभाव की वेदना, उसकी पीड़ा दंश देगी।[121]

कवयित्री ने साधना के असीम को अनुभूतकर लिया है।

"अलि कहाँ संदेश भेजू। मैं किसे संदेश भेजूं।"
नयन-पथ से स्वप्न में मिले, व्यास में धुल साध में लिख,
प्रिय मुझी में खो गया, अब दूत को किस देश भेजूं।"

इसलिए जब ससीम असीम ही है, अन्तर्जगत में वास है उसका और बर्हिजगत में प्रतिभास, फिर किसे और कहाँ संदेश भेजा जाए।[122]

अलि मैं कण कण को जान चली
सब का क्रन्दन पहचान चली।
आंसू के सब रंग जान चली,
दुःख को कर सुख आख्यान चली।[123]

कवयित्री ने स्पष्ट कर दिया है कि विश्व-वेदना में घुल जाना ही जीवन की सार्थकता है। और विश्व सुखमें मिल जान ही जीवन का अमरत्व हैं। यही कवयित्री की पूर्ण साधना है।[124] 'दीप शिखा' में दीप-दीपक की ही प्रधानता है जिसके तीन रूप स्पष्ट मिलते है

1. विश्व के प्रति करुणा-भाव
2. दीपशिखा की भाँती पलपल जलना
3. अज्ञात सत्ता का मधुर संकेत[125]

महादेवी की संपूर्ण कविता का प्रारंभ असीम के अन्वेषण से प्रारम्भ हो उसी वृत्त में अन्तर्भूत हो गया है। जहां प्रारम्भ अन्त एक हैं।[126]

'दीपशिखा' महादेवी जी ने लोक मंगल की कामना से रचा है।

सप्तपर्णा :- 'दीपशिखा' के पश्चात कई वर्ष तक महादेवी जी की कोई काव्य रचना प्रकाश में नहीं आई। लम्बी प्रतिक्षा के बाद 20 मई सन् 1960 को 'सप्तपर्णा' काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ। यह कृति कवि सुमित्रानन्दन पंत को उनकी षष्ठि पूर्ति के अवसर पर अर्पित की गई इस रचना में 212 पृष्ठ हैं तथा भूमिका 60 पृष्ठों की है। इसके बाद कविताएँ हैं। यह संग्रह काव्यमय हिन्दी रूपांतर है। इसमें 39 कविताएँ हैं।[127] यह कृति प्राचीन साहित्य के महानतम कलाकरों की कृतियों से सम्बन्धित है। इसमें वेद-वाणी वाल्मीकि, थेरीगाथा, अश्वघोष कालीदास, भवभूति, तथा जयदेव की लालित्य-पूर्ण रचनाओं को हिन्दी में अनूदित किया गया है।[128] महादेवी जी ने 'सप्तपर्णा' संग्रह का परिचय देते हुए लिखा है "प्रस्तुत अनुवाद की पूर्णताओं के प्रति मैं सजग हूँ किंतु समुद्र की अतल गहराई से निकला हुआ मोती काष्ठ की छोटी मंजूषा में भी रखा जा सकता हैं।" दुर्गाशंकर मिश्रा जी ने इस संग्रह के विषय में अपना मंतव्य इस प्रकार दिया

है, ''यदि हम इसे अविकल अनुवाद न मानकर भावानुवाद ही मान लें तो मानना ही होगा।''

'सप्तपर्णा' में संग्रहीत कविताएँ कलापक्ष का भले ही परिचय देती हों, पर भावधारा की दृष्टि से तो उन्हें मौलिक न होने के कारण अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता। स्वयं कवयित्री ने स्वीकार किया है कि यह कृति मात्र अनुवाद है, मौलिक रचनायें नहीं।[129] जो राज्य–सुख छोड़कर आया है वह अपरिग्रह को अधिक महत्व देता है, जो कठोर श्रम करके आया है वह श्रमिक जीवन की वेदना के विषय में अधिक कहता है। जो उच्चवर्ण सें सम्बन्ध हैं वह ज्ञान और तप की विशेषता की चर्चा अधिक करता है, जो शूद्र कुल से आया है वह समानता को अधिक महत्वपूर्ण मानता है। जो दास रह चुका है वह मुक्ति की अधिक प्रसास्ति करता हैं, जो स्वामी रह चुका है वह पर–पीड़न की अधिक निन्दा करता है। इस प्रकार इन गाथाओं में हमें तत्कालीन सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि का जैसा परिचय और उसमें पोषित मानव–जीवन का जैसा चित्र प्राप्त होता है, वैसा अन्यत्र नहीं मिलता।[130] संस्कृत न जानने वाले व्यक्तियों के लिए महादेवी की यह कृति वरदान है। वे इस में प्राचीन साहित्य के सौन्दर्य का रसा स्वादन कर सकते हैं।[131]

हिमालय :– 'सप्तपर्णा' के लगभग तीन वर्ष पश्चात सन् 1963 में महादेवी जी का एक अन्य कृति 'हिमालय' प्रकाशित हुई काव्य साधना की दृष्टि से इस कृति का महत्व नहीं है किंतु देश प्रेम, राष्ट्रीय भावना तथा कवयित्री का राष्ट्र सेवा का ज्वलंत प्रमाण है। उन्होंने साहित्य को राष्ट्र–सेवा के लिए अति महत्वपूर्ण माना है। 'हिमालय' एक सम्पादित काव्य संकलन है। इसमें प्राचीन संस्कृति साहित्य, अंतर्प्रान्तीय भाषाओं तथा उर्दू के कवियों के अतिरिक्त मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, रामकुमार वर्मा, दिनकर, निराला, बच्चन, अंचल, सुभद्राकुमारी चौहान, इलाचन्द्र जोशी, उदयशंकर भट्ट, अज्ञेय, नरेन्द्र शर्मा, नरेश मेहता, बालकृष्ण राव, गिरिजाकुमार माथुर, आरसी प्रसाद सिंह तथा नीरज आदि हिन्दी कवियों की ओजतपूर्ण कविताएँ संकलित हैं।

यह पुस्तक चीन द्वारा भारत पर आक्रमण किए जाने के दिनों में प्रकाशित हुई। इसी प्रसंग में हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि महादेवी अपने साहित्यिक और सामाजिक कार्यों के साथ देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भी निरन्तर सहयोग देती रही हैं। देश में जब कभी भी विदेशी आक्रमण हुआ या अकाल पड़ा; वे आँख मूँदकर अपनी पीड़ा के गीत गा सकी वरन् देश को सजग बनाने के लिए तत्पर रहीं। बंगाल के अकाल के समय 'बंगदर्शन' और चीनी आक्रमण के समय हिमालय काव्य संकलन और प्रकाशन

इनकी इसी विशेषता के प्रमाण हैं। देश के साहित्य का सेवियों और देशवासियों को ललकारते हुए उन्होंने 'बंगदर्शन' की अपनी बात में लिखा है, ''किसी अन्य देश में यह घटना घटित होती तो क्या होता इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। परंतु हमारा देश इसे अदृष्ट का लेख मानकर स्वीकार करले तो स्वाभाविक ही कहा जायेगा; फिर भी प्रत्येक विचारक जानता है कि यह आकस्मिक वज्रपात नहीं हैं, जिसका कारण दुर्देव या संयोग मानकर जिज्ञासा विराम पा सके। यह तो मनुष्य के स्वार्थ की शिला पर उसके प्रयत्न और बुद्धि द्वारा निर्मित नरक हैं। अतः इसका कारण ढूँढ़ने दूर न जाना होगा। इस दुर्भिक्ष की ज्वाला का स्पर्श करके हमारे कलाकारों की लेखनी, तूली यदि स्वर्ण न बन सकी तो उसे राख बन जाना पड़ेगा।[132]

इसी प्रकार 'हिमालय' के समर्पण में उनके देश-प्रेम का उल्लेख है। सन् 1942 के स्वतंत्रता-संग्राम में कवयित्री ने जिस अडिग धैर्य और साहस के साथ आन्दोलन कारी विद्रोहियों का साथ दिया तथा उनके परिवारों को संरक्षण दिया, सहायता दी। कवयित्री के शब्दों में हिमालय का समर्पण इस प्रकार है, ''जिन्होंने अपनी मुक्ति की खोज में नहीं, वरन भारतभूमि को मुक्त करने के लिए अपने स्वप्न समर्पित किये हैं, जो अपना संताप दूर करने के लिए नहीं, वरन भारत की जीवन ऊष्मा को सुरक्षित रखने के लिए हिम में गले हैं, जो आज हिमालय में मिलकर धरती के हिमलाय बन गयें हैं, उन्हीं भारतीय वीरों की पुष्य स्मृति में और इस संग्रह के विषय में उन्होंने लिखा हैं, ''इतिहास ने अनेक बार प्रमाणित किया है जो मानव-समूह अपनी धरती से जिस सीमा तक तादात्म्य कर सका है, वह उसी सीमा तक अपनी धरती पर अपराजेय रहा है। इस तादात्म्य के अनेक साधनों में विशिष्ट साहित्य है। किसी भूमिखण्ड पर किस मानव-समूह का सहज अधिकार हैं। इसे जानने का पूर्णतम प्रमाण उसका साहित्य हैं।''[133]

आधुनिक युग के साहित्यकारों को भी अपने रागात्मक उत्तराधिकार का बोध था, इसी से हिमालय के आसन्न संकट ने उनकी लेखनी को ओज के शरव और आस्था की वंशी ने स्वर दिया है।[134]

सन्धिनी :- यह काव्य कृति आधुनिक कवि (पहला भाग) का प्रतिरूप ही समझना चाहिए। इस संग्रह में आधुनिक कवि की कविताओं की तरह ही कुछ चुनी हुई कविताएँ हैं। इस में वही पूर्व प्रकाशित काव्य रचनायें संकलित हैं। अन्य कोई भी नवीन रचना संग्रहीत नहीं की गई हैं। इस संग्रह में कवयित्री के 65 गीत संग्रहीत हैं। कवयित्री की यह दूसरी गीत चयनिका है जिसका प्रकाशन 1965 ई. में हुआ।

'सन्धिनी' शीर्षक के विषय में भी कवयित्री ने अपना मत व्यक्त किया है, सन्धिनी नाम साधना के क्षेत्रे में सम्बन्ध रखने के कारण बिखरी अनुभूतियों की एकता का संकेत

ही है और व्यक्तिगत चेतना का संगठित चेतना का संक्रमण भी व्याञ्जित कर सकेगा; सन्धिनी का शब्दार्थ है 'दूध देने वाली हाल की ही गाभिन गाय' इस दृष्टि से भी 'सन्धिनी' नाम सार्थक है।[135] 'आधुनिक कवि' की विस्तृत भूमिका की तरह ही इसमें विस्तृत भूमिका दी गई है, 'सन्धिनी' संग्रह के विषय में महादेवी जी ने लिखा है– 'सन्धिनी में मेरे कुछ गीत संग्रहीत हैं। काल–प्रवाह का वर्षों में फैला हुआ चौड़ापाट उन्हें एक दूसरे से दूर और तम की स्थिति दे देता है। परंतु मेरे विचार में उनकी स्थिति एक नदी के तट से प्रवाहित दीपों के समान हैं। दीपकों की इन सापेक्ष दूरियों पर दीपदान देने वाले की मंगलाशा सूक्ष्म अंतरिक्ष मंडल के समान फैलकर उन्हें अपनी अलक्ष्य छाया में एक रखती है। मेरे गीतों पर भी मेरी एक आस्था की छाया हैं। इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता कि 'सन्धिनी' संग्रह की कविताओं में कवयित्री के काव्य की समस्त विशेषताएँ पूँजी भूत हो गई हैं। उनके काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों को व्यक्त करने वाले सभी प्रतिनिधि गीत संग्रह में स्थान पा सके हैं।[136]

महादेवी के श्रेष्ठ गीत : गंगा प्रसाद पाण्डेय सन् 1967 ई. में इस संग्रह का प्रकाशन करवाया। पाण्डेय जी द्वारा सम्पादित यह संकलन 67 गीतों का गीत–समुच्चय हैं। किंतु इस संग्रह में कोई उल्लेखनीय नवीनता नहीं मिलती।

महादेवी जी के श्रेष्ठ गीत पितृ–पर्व तथा प्रभा – पितृ–पर्व में कवयित्री की प्रतिनिधि कविताएँ संग्रहित हैं। प्रभा यह तूलिका द्वारा अंकित अनेकानेक रंगीन तथा एक रंगे चित्रों से युक्त नवीनतम कविताओं का संग्रह है। अजन्ता के चित्रों में उड़ते हुए से वस्त्र और गति महत्व दिया गया है। यह उड़ान, गति चित्र महादेवी जी के चित्रों में भी हैं। महादेवी जी ने चित्रों के मूर्त में कविता को लिपि के श्लेष से अमूर्त किया हैं। विलीन किया है। कभी चित्र खो जाता हैं, कभी–कभी कविता। अमूर्तन की झलक महादेवी जी में अनजाने ही घुल–मिल गई हैं।[137]

महादेवी जी के काव्य का महत्व

आधुनिक हिन्दी–काव्य के इतिहास में महादेवी वर्मा की दिव्यनुभूति का भी एक इतिहास हैं। उनका यह इतिहास छायावाद तथा रहस्यवाद के साथ ऐसा दुर्निवार हो गया है कि उससे अलग उसे देखा ही नहीं जा सकता हैं।[138] प्रसाद और महादेवी जैसे रहस्यवादी कवियों के लिए प्रकृति के कण–कण में दैवी सत्ता की झलक मिलती है और वह सजीव हो उठती हैं। प्रकृति में आध्यात्मिक सत्ता का आभास पाने पर ही उसमें मानवी भावों का अरोप सम्भव होता है। महादेवी जी इस अध्यात्मिक आधार के सम्बन्ध में अपने 'सांध्यगीत' की भूमिका में लिखती हैं–

''प्रकृति के लघु तृणा और महान वृक्ष, कोमल कलियाँ और कठोर शिलायें, अस्थिर

जल और स्थिर पर्वत, निविड अन्धकार और उज्ज्वल धुतरेखा, मानव की लघुता–विशालता.... और मोहज्ञान का केवल प्रति–बिम्ब न होकर एक ही विराट से उत्पन्न सहोदर हैं। जब प्रकृति की अनेक रुपता में परिवर्तनशील विभिन्नता में, कवि ने ऐसे तारतम्य को खोजने का प्रयास किया जिसका एक छोर असीम चेतन और दूसरा उसके ससीम हृदय में समाया हुआ था तब प्रकृति का एक एक अंश एक अलौकिक व्यक्तित्व लेकर जाग उठा।'[139] अस्पष्टतः महादेवी अदभुत सृजन की स्वामिनी हैं। उनका काव्य प्रणय की अंतरतम अनुभूति का परिचायक हैं। महादेवी का सम्पूर्ण काव्य वैयक्तिक हैं। उसमें गीत की सभी विशेषतायें सम्पृक्त हैं। इस आत्मिक अनुभूति की अभिव्यक्ति के कारण प्रकृति पर चेतना का आरोप उनकी कविता में सर्वत्र हैं। वेदना को ही मोक्ष मानकर कवयित्री कवि का कर्तव्य, संकेतित कर देती है। पीड़ा में आनन्द को अंतर्भूत कर महादेवी इसे संसार की एकसूत्रता के आख्यान में परिवर्तन से अद्भूत मानती है। सुख दुःख में तो एक के प्रत्यक्ष रूप में दूसरे का अप्रत्यक्ष आभास होता रहता हैं। – 'पहले बाहर खिलते फूल को देखकर मेरे रोम–रोम में ऐसा पुलक दौड़ आता था मानो वह मेरे हृदय में ही खिला हो, परंतु उसके अपने से भिन्न प्रत्यक्ष अनुभव में एक अव्यक्त वेदना भी थी। फिर यह सुख दुःख मिश्रित अनुभूति ही चिंतन का विषय बनने लगी और अब मेरे मन में न जाने कैसी अनुभूति ने उसी भीतर बहार में सामंजस्य ढूंढ लिया है, जिसने सुख–दुख को इस प्रकार बुन लिया कि एक के प्रत्यक्ष अनुभव के साथ दूसरे का अप्रत्यक्ष आभार मिलता रहता है।[140] उनका अध्यात्मिक दुःख है और वेदना में लौकिक अनुराग का रस है। किंतु पार्थिव और स्थूल मानकर काव्य में उन्होंने जग–जीवन के समष्टि रूप समाज की यथार्थ और जाग्रत चेतना को स्थान नहीं दिया। जो दुःख और वेदना है वह भी उनके अलौकिक प्रेम की विरह–पीड़ा के लक्षण मात्र हैं।[141] इन्द्रनाथ मदान के अनुसार – 'हृदय की सूक्ष्मतम एवं गहनतम भावनाओं को जितनी सफलता के साथ महादेवी ने व्यक्त किया है उतनी छायावाद के अन्य कवियों ने नहीं।' महादेवी जी ने अत्म परक कविताएँ लिखी हैं। उनकी वाणी प्रगीत काव्य के माध्यम से मुखरित हुई हैं जिसमें गहन वेदना और सुकुमार कल्पना का मधुर मिलन है तथा वेदना और करुणा का साम्राज्य हैं। वेदना के ताप से गलकर उनके हृदय की द्रवोभूत अनुभूति पारे की भाँति तरल हो कर बह निकली हैं। पीड़ा उन्हें अत्यंत प्रिय है और वह उसे छोड़ना नहीं चाहती। इसका कारण यह हैं कि विरही के लिए पीड़ा का ही एक मात्र सहारा होता हैं, यदि वह भी न रहे तो फिर उनका जीना दुष्कर हो जाता हैं। दुःख और करुणा उन्हें बुद्ध के जीवन से मिली लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि वह उसे काव्य में अपना निजीपन बनाए हैं क्योंकि दुःख ही मानव–मात्रा का परस्पर निकट लाने का साधन हैं।[142] महादेवी जी के हृदय से निकले गीतों का अवलम्बन ब्रह्म है जो स्वयं

निर्विकार रहने पर भी परिवर्तनों की आश्रय भूमि हैं जिसमें विराट विश्व के दर्पण में परिलक्षित प्रतिबिम्बों का आधार हैं जो सम्पूर्ण सौंदर्य का अजस्त स्त्रोत हैं। अतः इस से अधिक आकर्षक आलम्बन की कल्पना नहीं की जा सकती, क्योंकि यदि प्रेम करना ही है तो ऐसे ही प्रेम का सहारा क्यों नहीं लिया जो आत्मा को श्रेष्ठतम बनायें, रोना ही है तो ऐसा रोया जाय जिससे मन की सम्पूर्ण मलिनता को धोकर निर्मल कर दे, यदि जलना ही है तो ऐसा क्यों न जले जिससे निर्मल आलोक स्फुटित हो, तथा सौंदर्योपासना का स्वरूप अक्षय हो। इस प्रकार की भावना महादेवी जी के काव्य में विद्यमान है। आप में कला का जन्म अक्षय सौंदर्य के मूल से, दिव्य प्रेम के भीतर से अलौकिक प्रकाश की गुहा और पावन उज्जवल आंसुओं के अंतर से हुआ हैं।[143] महादेवी वर्मा ने वेदना को अपने काव्य का मूल द्रव्य रखा हैं। वेदना दुःख मूलक अवश्य है, किंतु प्रत्येक स्थिति में वह दुःख जनक नहीं होता। काव्य में जीवन की वही भावना अभिव्यक्त होती है जो कवि को प्रिय रहती हैं। अप्रियता को काव्य में स्थान नहीं। वेदना भी प्रिय लगने पर ही काव्य का स्वरूप धारणा करती हैं।[144] महादेवी के काव्य में हमें छायावाद का शुद्ध अमिश्रित रूप मिलते हैं। छायावाद की अन्तर्मुखी अनुभूति अशरीरि प्रेम जो बास तृप्ति न पाकर अमासल सौंदर्य की सृष्टि करता हैं, मानव और प्रकृति के चेतन संस्पर्श, रहस्य चिंतन। अनुभूति नदी, तितली के पंखों और फुलों की पंखुड़ियाँ से चुराई हुई कला और इन सबके ऊपर स्वप्न-सा पूरा हुआ एक वायवी वातावरण में सभी तत्व जिसमें घुले मिलते हैं, वह हैं महादेवी जी की कविता।[145]

छायावाद की अभिव्यंजनात्मक शैली को अपनाकर अपने प्रकृति के मार्मिक चित्रों को अंकित किया हैं। यह मीरा के माधुर्य तथा अनन्त विरह की वेदना के इनके पदों में दर्शन होते हैं। इन्हीं की कविताओं में हमें वास्तविक रहस्यवाद मिलता हैं। इनका यह रहस्यवाद, वेदना-प्रधान हैं, जो उस अज्ञात तथा अनन्त प्रियतम के प्रति प्रकट हैं, जिसके मिलन के लिए प्रत्येक प्राणी लालायित रहता हैं। पर 'मिलन' की अपेक्षा आपने विरह को ही प्रधानता प्रधान की हैं।

मिलन का मत नाम ले मैं विरह में चिर हूँ।

इनकी कविताओं में हम प्रियतम की उत्सुकता पूर्ण प्रतीक्षा पाते हैं। इनके अलौकिक विरह, मिलन आदि में वासना इत्यादि के चिह्न तक नहीं विद्यमान हैं, और श्रृंगार। वर्णन भी पवित्र ही हैं। संयोग और वियोग दोनों पक्षों का सुन्दर चित्रण हम इनमें पाते हैं तथा इनकी वेदना में हृदय की वास्तविक अनुभूतियों के दर्शन करते हैं।[146] इनकी कविताओं में रूप-चित्रण की अपेक्षा भाव-चित्रण की ही प्रधानता हैं, साथ ही इनका झुकाव करुणा और भक्ति-भाव की ओर ही अधिक रहा है। इनकी रचनाएँ कल्पना, कला और प्रतिभा,

सम्पन्न हैं। अपने आरम्भिक जीवन में आपने सामाजिक तथा राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित होकर कविता की थी, पर बाद में आपकी रचनाएँ कल्पना प्रधान होने लगी। आपने स्वयं अपने एक भाषण में कहा था – कवि के पास एक व्यावहारिक बाह्य संसार है, दूसरा कल्पनानिर्मित आंतरिक। पंरतु वे दोनों परस्पर – विरोधी न होकर एक दूसरे की पूर्ति करते रहते हैं।[147]

महादेवी के प्रगीतों में इन अक्षुण्ण सौन्दर्यका दर्शन पाकर यह कहा जा सकता हैं। कि हिन्दी संसार में प्रगीत कला का सर्वोच्च विकास महादेवी में ही मिलता हैं। जहाँ उनमें महान आत्मा की प्रतिध्वनि हैं, दर्शन और हृदय का सामञ्जस्य है। वहाँ चित्रमय, नादमय संगीतमत तथा लक्षण से पुष्ट–शैली भी कम विलक्षण नहीं हैं। उनमें काव्य, संगीत तथा चित्रकला का समंवय ही प्रगीत बन गया हैं। हृदय की उन्मुक्त अभिव्यक्ति में उनमें आत्मा साक्षात्कार के लक्षणों को अमर कर दिया हैं। 'लहर', 'गुंजन' तथा 'गीतिक' के समक्ष 'रश्मि', 'नीरजा', निहार, 'सांध्यगीत' तथा दीपशिखा के गीत फीके नहीं पड़ते, उनका रंग और प्रभाव हृदय पर अधिक ही पड़ता हैं। लोक–लयों से रंजित के प्रगीतों को पवित्र मन से काव्य और कला का वरदान मानना चाहिए।[148]

महादेवी जी अपने सम्पूर्ण कृतित्व को विश्वात्मक चेतना की अभिव्यक्ति के लिये विम्बित किया हैं और अपने व्यक्तित्व की इसी चेतना में अनुप्राणित भी कर देना चांहा हैं।[149] छायावादी कवियों में महादेवी जी को उच्च स्थान प्राप्त हैं, और अपने प्रेम तथा सौन्दर्य–सम्बन्धी रहस्यवाद को अपनाकर उसका सम्बन्ध काव्य–वस्तु से जोड़ते हुए उसे अपने वास्तविक रूप में प्रकट किया हैं।[150]

महादेवी की काव्य–कृतियाँ दो यामों में विभाजित हैं– प्रथम 'यामा' जिसमें 'निहार' 'रश्मि' 'सांध्यगीत' संग्रहीत हैं और द्वितीय दीपशिखा। 'यामा' में कवयित्री के अन्तर्जगत के चार यामों के छायाचित्र हैं। प्रभात में सर्व प्रथम 'निहार' छाता है फिर 'रश्मि' अवतीर्ण होती हैं और 'नीरजा' खिलती है। फिर दिवसावसान के समय सांध्य का आगमन 'सांध्यगीत' की सार्थकता का संकेत करता हैं। आत्म की साधना, आस्था का दर्शन, आत्मा निवेदन द्वारा आत्मसमर्पण का आदर्श रूप 'दीपशिखा' हैं।[151]

महादेवी के ही शब्दों में काव्य का सत्य युग विशेष को स्पर्श करके ही युग–युगांतर को छू लेता हैं, अतः उसकी सार्थकता के लिये समय का अखण्ड विस्तार अनिवार्य ही रहेगा।''[152]

डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल ने स्पष्टतया घोषित किया है कि – ''गीतों के लिए महादेवी जी की भाषा से श्रेष्ठ हिन्दी संसार के किसी सृजनशील कलाकार की भाषा नहीं हैं। उनकी भाषा आनेवाली पीढ़ी के लिए भी सदैव एक आदर्श रहेगी।''[153] कविता और

महादेवी जी दोंनों ही नारी रूप हैं। नारी को नारी से अधिक कौन साजिज्त कर सकता है? उन्होंने अपनी प्रकाशित कृतियों में वेदना–भाव, मृत्यु की महत्ता, सुख–दुख का सामंजस्य, चिर–वियोग, चिर–अतृप्ति, उत्र्स की भावना, मुक्ति की अनिच्छा, उपालंभ, अमर संबंध, स्वप्न–मिलन, रहस्यमयता, प्रकृति और जीवन का सामंजस्य, प्रतिकात्मकता, शैली, भाषा, अलंकार आदि का उपयुक्त रूप अभिव्यक्त किया है।[154] भाव पक्ष की ही भाँति महादेवी का कलापक्ष भी अत्यधिक सुन्दर है। सबसे बड़ी सुन्दरता उसकी स्वभाविकता है। उन्होंने अपनी कविता की पॉलिश नहीं की है। हाँ, ईमानदारी से परिष्कृत, मधुर, कोमल भाषा में उसे व्यक्त अवश्य किया है। सूक्ष्मतम भावनाओं को वाणी देने के कारण उनकी अभिव्यक्ति संकेतात्मक हो गयी है। उनमें शब्दों के लाक्षणिक प्रयोग, अमूर्त की मूर्ति योजनाएँ, भावों और प्राकृतिक रूपों के मानवीकरण आदी छायावादी सकल विशेषताएँ पायी जाती हैं। महादेवी जी का कवि गीति रचना में सिद्धहस्त हैं। ये सभी गीती अपनी ध्वन्यात्मकता में सुगेय हैं। डॉ. रमेशचन्द्र शाह ने ठीक ही संकेत किया है कि काव्य में जीवंत बिंब खड़ा करने की क्षमता, नाद सौंदर्य और शब्दों के बीच बुद्धि का लक्ष्य उनके कवि का अनमोल अवदान है।[155] महादेवी जी ने कविताओं में जिस सुन्दर संतुलित मधुर भाषा का प्रयोग किया हैं। उसके कारण उनकी कविता हिन्दी साहित्य में अमर होने के लिए बाध्य है। स्मरण रहे कि महादेवी ने जिस युग में काव्य–साधना की, उस युग में बहुत से लोग कहें या न कहें यह विश्वास करते थे कि हृदय को र्स्पश करने वाली कविता केवल उर्दू में लिखी जा सकती है, हिन्दी खड़ी–बोली में नहीं। उस समय यह काव्य साधिका हमारे सम्मुख आई और धीरे–धीरे इस संदेह– जाल को दूर कर दिया। इस दृष्टि से उनकी काव्य रचना हिन्दी साहित्य में एक नवयुग प्रवर्तिका हैं।[156]

सच्चे अर्थ में देवी जी की कविता को वही लोग परख सके जिन्होंने उन कविताओं में अपने आपको रमा दिया सुख–दुख स्वप्न–मिलन में एकाकार होकर उस रंग में रंग गये।

महादेवी के ही शब्दों में – "कवि सत्य को अपनी अनुभूति में जी लेता हैं, उसी को दूसरों को जीने के लिए देता हैं। इस सत्य को न जरा का भय हैं, न मरण का, प्रत्युत वह काव्य की आत्मा बनकर अनन्त संवेदन संमृति में संचरण करता हुआ नव–जीवन उष्मा प्राप्त करता रहता हैं।" काव्य शाश्वत मानवीय मूल्यों, सर्वभौम भावों तरल संवेदनों, गहन अनुभवों, रमणीय कल्पनांओं तथा प्रांजल विचारों से खाद्य ग्रहण कर अजर अमर होता हैं। महादेवी जी की कविता इस कसौटी पर खरी उतरी हैं।[157]

गद्य साहित्य में महादेवी जी का योगदान एवं उनकी गद्य कृतियों का सामान्य परिचय

छायावादी कवि श्रेष्ठ विख्यात कवयित्री महादेवी वर्मा वैसे ही श्रेष्ठ विख्यात गद्य की भी रचयिता हैं। डॉ. रामजी पाण्डेय का कथन है– बहुत प्रभावित करता है महादेवी जी का गद्य मन के अंतरतम को छू लेता हैं। डॉ. लोहिया ने एक बार कहा था, 'महादेवी जी भारत में सब से अच्छा गद्य लिखती हैं। वे गद्य की राजकुमारी हैं।'[158]

आधुनिक हिन्दी साहित्य के गद्य के विकास में महादेवी वर्मा का महत्व पूर्ण योगदान रहा हैं। महादेवी वर्मा एक ऐसा नाम हैं। जिन्होंने हिन्दी साहित्य को नये आयाम दिए। ये उत्कृष्ट कवयित्री कुशल चित्रकर्त्री तथा प्रसिद्ध गद्य लेखिका हैं। इन्होंने स्वयं का गद्य किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं रखा हैं। संस्कृति, देश, भाषा, साहित्य, समाज, नारी–जीवन, राष्ट्रीयता सभी पर इनकी लेखनी का जादू चला हैं, गद्य के प्रति इन की विशेष रुचि भी रही हैं।[159]

महादेवी पद्य में जितनी सिद्ध हैं, गद्य लेखन में उतनी ही सक्षम हैं गद्य कवि निकषं वंदति। अर्थात गद्य कवियों की कसौटी हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस बात को विस्तृत रूप में इस प्रकार समझाया हैं– "यदि गद्य कवियों की कसौटी हैं तो निबंध गद्य की कसौटी हैं।" महादेवी ने इन दोनों उक्तियों को अपने गद्य लेखन द्वारा चरितार्थ कर दिखाया हैं। डॉ. बड़सूवाला ने भी अपने शोधप्रबंध में लिखा हैं – गद्य में गरिमा, गरिष्ठता, प्रौढता, सार्थकता एवं तीव्र भाव संपन्नता से महादेवी वर्मा का जो चित्र बनता हैं, वह ऐसी नारी का हैं जो नारी की समस्याओं की विश्लेषणकत्री ही नहीं, समाधानदात्री भी हैं।[160] महादेवी जी स्वयं स्वीकारती हैं – "विचारों के क्षणों में मुझे गद्य लिखना ही अच्छा लगता रहा हैं, क्योंकि उसमें अपनी अनुभूति ही नही बाह्य परिस्थितियों के विश्लेषण के लिए भी पर्याप्त अवकाश रहता हैं। मेरा सब से पहला सामाजिक निबन्ध तब लिखा गया था जब मैं सातवीं कक्षा की विद्यार्थीनी थी अतः जीवन की वास्तविकता से मेरा परिचय कुछ नवीन नहीं हैं।[161]

महादेवी जी ने अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध आरम्भ से ही आवाज उठाई थी।

गद्य लिखने की प्रेरणा का स्पष्टीकरण करते हुये महादेवी जी लिखती हैं – "मेरे सम्पूर्ण मानसिक विकास में उस बुद्धि प्रसूत चिंतन का भी विशेष महत्व है, जो जीवन की बाह्य व्यवस्थाओं के अध्ययन में गति पाता रहा हैं। अनेक सामाजिक रूढियों में दबे हुये, निर्जीव संस्कारों का भार ढोते हुये और विविध विषमताओं में सांस लेने का भी अवकाश न पाते हुये जीवन के ज्ञान ने मेरे भाव–जगत की वेदना को गहराई और जीवन को क्रिया दी है। उसके बौद्धिक निरुपण के लिए मैं गद्य को स्वीकार किया था।"[162] तात्पर्य यह कि महादेवी का गद्य – लेखन वैचारिक के धरातल पर अधिष्ठित हैं। उनकी

यह वैचारिकता कोरी बौद्धिकता मात्र नहीं उसमें भावों की तीव्रता भी समायी हुई हैं। महादेवी के पद्य–गद्य के पारस्परिक सरोकारों का उदघाटन इन्द्रनाथ मदान ने इस तरह किया – "अपने काव्य में वे जब मिलन का संकेत देती हैं तब भारतीय नारी के स्वतंत्र होने की कल्पना करती हैं, और इस स्वतंत्रता का निरुपण वे अपने निबंधों में खुलकर करती हैं।"[163] महादेवी जी के गद्य साहित्य के दो रूप हैं। एक रूप तो वह जहाँ वे दीन दुखियों का चित्रण करती हैं और दूसरा रुप उनके विद्रोह के स्वर में दिखलाई पड़ता हैं। यह रूप उनकी गद्य कृति 'शृंखला की काडियों, में अवतरित हुआ हैं जहाँ वे नारी उत्पीड़न को देखकर पुरुष के साथ कभी सहानुभूति करना ही नहीं चाहती।'[164] महादेवी जी ने रेखाचित्र और संस्मरणों में अपनी बाल्यावस्था के अनेक चित्र रेखांकित किये हैं। कुछ घटनाओं ने उनके मनोमस्तिष्क पर चिर स्थायी प्रभाव डाला। नारी का दमन, उसे पुरुष से छोटा समझा जाना पुत्री का जन्म होते ही मूक संकेत और आंसू बहाना उन्हें कभी रास नहीं आया एक बार उनके नौकर ने अपनी गर्भिणी पत्नी को पीट दिया। जब वह रोती हुई महादेवीजी के माँ के पास आई तो महादेवी उस लहुलुहान बिलखती स्त्री को देख शोकसंतप्त हो उठी। सब शांत हो ने पर मां से बोली, "हाय, कितना पीटा हैं। यह भी क्यों नहीं पीटती?" माँ ने कहा "आदमी मारे तो भी औरत कैसे हाथ उठा सकती है?"[165] उन्होंने अपने रेखाचित्रों और संस्मरणों में सामाजिक जीवन की कठोर वास्तविकताओं को स्पर्श किया हैं। समाज की रूढ़ियों, दुःख, दैन्य और स्वार्थ की कुटिलताओं को देखकर उनकी आत्मा विद्रोह कर उठी हैं। समाज के शिंकजों में फँसी –नारी–अंतवेदना आपने प्रकट की हैं। विधवाओं, वेश्याओं, घर की चार दीवार में बन्द हिन्दूनारी, पुरुष शासित समाज की पुरानी–नई रुढियों, मिथ्यांदंभ और अत्याचार को प्रकाश में लाकर उन्होंने उन पर मार्मिक व्यंग्य किया हैं। विधवाओं, वेश्याओं तथा गृह–बन्धुओं के विषय में महादेवी ने बौद्धिक प्रगतिशील दृष्टिकोण अपनाया हैं। जिन समस्याओं को महादेवी ने अपने कथा साहित्य में स्थान दिया हैं, वे कुछ इस प्रकार की है– नौकरों के प्रति हमारी उपेक्षा विधवाओं के प्रति हमारी प्रतारणा नीच जातियों के प्रति हमारी अनुदारता और तिरस्कार, अशिक्षितों के प्रति हमारी उदासीनता, सौतेली संतान के प्रति हमारी निर्ममता और कठोरता, पथभ्रष्ट के प्रति हमारी असहिष्णुता, निर्धन के प्रति हमारी अवहेलना इत्यादि का नितांत यर्थाथ चित्रण उन्होंने किया हैं। उनके प्रति उनकी सहानुभूति भी प्रकट हुई हैं।[166] वस्तुतः आधुनिक हिन्दी साहित्य में गद्य और पद्य पर समान अधिकार रखनें वाले विरल कवियों में महादेवी का महत्वपूर्ण स्थान है प्रतिपादित विचारों और शैली–दोनों दृष्टियों से वह हमारे आधुनिक साहित्य का एक बहुत पुष्टअंग हैं और आज की हमारी प्रगतिशील–चेतना से भली–भांति अनुप्रणित होने के कारण वह हमारे नवीन साहित्य कों स्फूर्ति देता हैं। इस संदर्भ में डॉ. सिंह की यह धारणा सही

हैं। कि महादेवी की तरह उत्कृष्ट और बहुआयामी गद्य लेखक दूसरा न हो सका महादेवी जी का गद्य साहित्योपयोगी भी हैं और समाजपयोगी भी। संस्कृति, देश भाषा साहित्य समाज, नारी जीवन राष्ट्रियता आदि विषयों पर लिखकर उन्होंने अपनी गद्य गरिमा का परिचय दिया है।[167] महादेवी का गद्य-लेखन रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध लेखन पत्र-साहित्य, गद्य-ग्रंथों की भूमिकाएँ, तथा विवेचन आदि स्वरूपों में व्याप्त हैं।

गद्य :-

रेखाचित्र :- अतीत के चलचित्र सन् 1941 (संस्मरण शैली में लिखा रेखाचित्र), स्मृति की रेखाएँ सन् 1943 (संस्मरण शैली में लिखा रेखाचित्र), पथ के साथी सन् 1956 (संस्मरण), मेरा परिवार सन् 1972 (पशु-पक्षियों के संस्मरण)

निबन्ध :- शृंखला की कड़ियाँ सन् 1942 (नारी विषयक सामाजिक निबन्ध), विवेचनात्मक गद्य सन् 1943, क्षणदा सन् 1946 (ललित निबन्ध), साहित्यकार की आस्था का अन्य निबंध सन् 1952 (आलोचनात्मक), संकल्पिता सन् 1968 (आलोचनात्मक)

विविध संकलन :- स्मारिक सन् 1971 (प्रतिनिधि गद्य रचनाएँ), स्मृति-चित्र सन् 1973, संभाषण सन् 1975 (भाषणों का संकलन), संचयन सन् 1976 (गद्य रचनाओं का संग्रह), दृष्टिबोध सन् 1980 (विभिन्न भूमिकाओं का संग्रह),

देश संकट पर :- बंगाल के अकाल के अवसर पर 'बंगदर्शन' 1943 सन् 1942, चीन के आक्रमण के समय 'हिमालय' 1963 सन् 1962[168]

पुरस्कार :- 'नीरजा' पर सेक्सरिया पुरस्कार, 'स्मृति की रेखाएँ' पर द्विवेदी पदक, मंगलाप्रसाद पारितोषिक, उत्तर प्रदेश सरकार का विशिष्ट पुरस्कार, उ. प्र. हिन्दी संस्थान का 'भारत भारती' पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार।

उपाधियाँ :- भारत सरकार की ओर से पदमभूषण और फिर पद्मविभूषण अलंकरण। विक्रम, कुमाऊ, दिल्ली, बनारस विश्वविद्यालय से डी.लिट की उपाधि। साहित्य अकादमी की सम्मानित सदस्या रहीं।[169]

अतीत के चलचित्र :- महादेवी द्वारा सन् 1920-31 तक लिखित संस्मरण-रेखाचित्रों का पहला संग्रह 'अतीत के चलचित्र' 1941 में प्रकाशित हुआ। अनेक विद्वानों ने इस पुस्तक कों मात्र संस्मरण स्वीकार किया है। वस्तुतः महादेवी की कृतियों में संस्मरण के साथ रेखाचित्र का 'धुप छाँह' जैसा मिश्रण हैं। पुस्तक भूमिका 'अपनी बात' के अंतिम पारिच्छेद में महादेवी ने स्वयं स्वीकार किया है :-

प्रस्तुत संग्रह में ग्यारह संस्मरण-कथायें जा सकी हैं। उनसे पाठकों का सस्ता मनोरंजन हो सके, ऐसी कामना करके मैं इन क्षत विक्षत जीवनों को खिलौनों की हाट

में नहीं रखना चाहती। यदि इन अधूरी रेखाओं और धुंधले रंगों की समष्टि में किसी को अपनी छाया की एक रेखा भी मिल सके, तो यह सफल है अन्यथा अपनी स्मृति की सुरक्षित सीमा से इसे बाहर लाकर मैंने अन्याय ही किया हैं।[170]

प्रस्तुत संग्रह के नाम इस प्रकार हैं–

(1) रामा– स्नेहवत्सल सेवक, (2) भाभी – मारवाड़ी विधवा, (3) बिन्दा – निरीह बालिका बाल्यसखी, (4) सविया– पति द्वारा परित्यक्ता, (5) बिट्टो – बालविधवा का पुनर्विवाह, (6) विधवा माता – 19 वर्षी माँ, (7) घीसा – गुरुभक्त, (8) अभागी स्त्री – समाज से प्रताड़ित, (9) अलोपी – नेत्र हीन, (10) बदलू – कुम्हार साथ ही पत्नी राधिया की भी रेखाएँ उभरी हैं, (11) लछमा – पहाड़िन कर्तव्य परायण युवती।

महादेवी जी का उद्देश्य केवल यही था कि जब समय अपनी तूलिका फेरकर इन अतीत–चित्रों की चमक मिटा दे, तब इन संस्मरणों के धुँधले आलोक में मैं उन्हें फिर पहचान सकू अतीत के चलचित्र संग्रह में महादेवी जी ने दीन–हीन दुःखी, पीड़ित, विवश, शोषित, परित्यक्त, समाज से प्रताड़ित पात्रों की यथार्थ जीवन कथाएँ हैं जिसमें– 'महादेवी जी को अपनी जीवन–गाथा भी दिखाई दी। ये उनकी 'अक्षय ममता' के पात्र रहे हैं।

महादेवी जी का कथन :– 'इन स्मृति–चित्रों में मेरा जीवन भी आ गया हैं। यह स्वाभाविक भी था। अंधेरे की वस्तुओं को हम अपने प्रकाश की धुँधली या उजली परिधि में लाकर ही देख पाते हैं, उनके बाहर तो वे अंत अन्धकार के अंश हैं। मेरे जीवन के परिधि के भीतर खड़े होकर चरित्र जैसा परिचय दे पाते हैं,[171] इन शब्द चित्रों में संवाद कम हैं। स्वंय लेखिका पात्रों के संबंध में और कहीं कहीं अपने निजी जीवन के संबंध में अधिक बोलती हैं।[172] डॉ. विमल कुमार जैन का कथन 'अतीत के चलचित्र' में रेखाचित्र अधिक हैं। ये सभी चित्र अत्यंत सहानुभूतिपूर्ण लेखनी से चित्रित हुए हैं, अतः वास्तविकता से पूर्ण हैं।[173] सुप्रसिद्ध अलोचक विश्वम्भर मानव के अनुसार 'महादेवी जी की बुद्धि 'श्रृंखला की कड़ियों' में आत्मा गीतों में और हृदय 'अतीत के चलचित्रों, में निहित हैं।'[174] प्रो. एस. पी. रणदेव ने जो भाव व्यक्त किया हैं, 'मनुष्य के संवेदनशील हृदय को सारे संसार से एक अविच्छिन्न बन्धन में बाँध देता हैं।' उसकी ही अभिव्यक्ति इन रेखाचित्रों में हैं। अमृतराय के अनुसार 'अतीत के चलचित्र' में एक ऐसी ताजगी हैं जो पाठकों में भी ताजगी भर देती हैं, आशाका संचार करती हैं तथा जीवन के साथ उसके सम्बन्ध को और भी गहरा बनाती हैं।[175]

स्मृति की रेखाएँ :– 'स्मृति की रेखाएँ' शीर्षक ये महादेवी जी का दूसरा संग्रह है जिसका प्रकाशन पहली बार सन् 1943 में हुआ। इसमें संस्मरणात्मक शैली में लिखे

हुए सात रेखाचित्र हैं।[176] सातों पात्रों में दुःखवाद की प्रधानता हैं। इन चित्रों में लेखिका अपनी जीवन-यात्रा के भी दृश्य अंकित करती हैं। इस पुस्तक में भी करुणात्मक रेखाचित्रों की ही प्रधानता हैं, जिन पर टिप्पणी करते हुए 'हंस' (मई 1944 ई) में प्रसिद्ध आलोचक श्री अमृतराय ने लिखा था, 'उन्होंने अधिकांश में उन मानवता के स्त्रोत हैं जो बिना कान पूँछ हिलाए गऊ के समान सब अत्याचार सहन कर लेते हैं।[177]

प्रस्तुत संग्रह के नाम इस प्रकार है।

(1) भक्तिन - सेविका, (2) चीनी फेरीवाला - जन्म का दुखियां, (3) जंगबहादुर और धनसिंह-दो पहाड़ी कुली, (4) मुन्नू अथवा मुन्नू की माई-अज्ञात कुलशील वधू, (5) ठकुरी बाबा की जीवन कथा, (6) बिबिया धोबिन की व्यथा कथा, (7) गुंगिया - वाक्शक्ति से विहीन।

रेखाचित्र कला के मर्मज्ञ प्रो. प्रकाशचंन्द्र गुप्त ''आज का हिन्दी साहित्य'' में इस कृति के सम्बन्ध में अपना मतव्यक्त करते हैं- 'श्रीमती वर्मा के शब्दों के अनमोल साँचों में अपनी स्मृतियों को ढालती हैं और उनकी गढी हुई ये छवियाँ अपने मर्मस्पर्शी गुण के कारण दीर्घकाल के लिए पाठको के हृदय पर अंकित हो जाती हैं। रेखाचित्र का प्रमुख गुण हैं- मितव्ययिता। कुछ रेखाओं से श्रीमती वर्मा चीनी फेरी वाले, बद्रीनाथ के मार्ग पर बोझ ढोने वाले कुलियों अथवा अपनी पुरानी सेविका 'भाक्तिन के अविस्मरणीय चित्र उतारती हैं।''[178] महादेवी ने इन पात्रों के स्वरूप अंकन के साथ-साथ उनके गुण तथा स्वभाव, आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक, स्थितियों तथा उनकी रूढ परम्पराओं का भी चित्रण किया हैं। इन के चरित्रांकन में स्वयं लेखिका का व्यक्तित्व भी स्पष्ट होता गया है। संवादों की न्यूनता होने पर भी पात्रों के गुणो-अवगुणों की यथार्थ तस्वीर खिंचती सी गयीं हैं। लेखिका के शब्दों में - ''इन चित्रों में मेरा जीवन भी आ गया हैं। यह स्वाभाविक भी था। अँधेरे की वस्तुओं को हम अपने प्रकाश की धुँधली या उजली परिधि में लाकर ही देख पाते हैं उसके बाहर तो वे अनंत अंधकार के अंश हैं। मेरे जीवन की परीधि के भीतर खड़े होकर चरित्र जैसा परिचय दे पाते हैं वह बाहर रूपांतरित हो जायेगा।''[179] श्री गोपालकृष्ण कौल का यह उदाहरण द्रष्टव्य है- ''हिन्दी में रामवृक्ष बेनी पुरी चोटी के रेखाचित्रकार हैं किंतु उनके रेखाचित्र कहानी या कथा प्रधान होते हैं। और आकृति प्रमुख होती हैं। किंतु महादेवी के रेखाचित्रों में कहानी के साथ कविता भी रहती हैं। पं. बनारसी दास चतुर्वेदी ने अधिकतर बड़े लोगो के रेखाचित्र और संस्मरण लिखे हैं। किंतु महादेवी ने जीवन में आनेवाले उन उपेक्षित चरित्रों को अपनाया हैं। जिनमें भारतीय समाज की ज्वलंत समस्याएँ साकार हैं।'

ग्रामीण लोक जीवन के जितने सहज चित्र 'स्मृति की रेखाएँ' में हैं उतने कहीं

अन्यत्र नहीं मिलते। समाज के प्रति तीखा व्यंग्य तथा आक्रोश महादेवी जी ने इन रेखाचित्रों में उभारे हैं। समाज के दीन-हीन लोगो को ही पात्र विषय बनाया हैं। इस का कारण यह भी हैं कि लेखिका के हृदय करुणा और सहानुभूति हैं।'[172]

पथ के साथी :- पथ के साथी का प्रकाशन 1956 में पहली बार हुआ। पथ के साथी में महादेवी जी ने सात साहित्यकारों के संस्मरण रखे हैं जो संस्मरणात्मक रेखाचित्र बन पड़े हैं। 'पथ के साथी' में महादेवी ने 'रेखाएँ' शीर्षक से अपने छह सहयोगियों का रेखांकन किया हैं।[180] लेखिका ने अपने जीवन का एक मात्र निकष अपना युग, एक परिवेश और कुछ प्रतिभाशाली व्यक्ति को माना हैं।[181]

'पथ के साथी' संकल्न में कुल सात रेखाचित्र हैं।

1) कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर, 2) मैथिली शरण गुप्त, 3) श्रीमती सुभाद्राकुमारी चौहान, 4) श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, 5) श्री जयशंकर प्रसाद, 6) श्री सुमित्रानंदन पंत, 7) सियाराम शरण जी गुप्त।

प्रारम्भ में प्रणाम के अंतर्गत 'रवीन्द्रनाथ टैगोर' का काव्यात्मक भाषा में रेखाचित्र हैं जो पुस्तक में 'मंगलाचरण' का स्थान रखता हैं।[182] 'रवीन्द्रबाबू' का संस्मरणात्मक रेखाचित्र में कवि गुरु रवीन्द्र की कविता, संगीतज्ञता तथा चित्रकला से लेखिका प्रभावित हैं। कवि रवीन्द्र का प्रभालोक उनके वर्णन का विषय बनकर साकार हो उठा है।[183] कवि गुरु को समर्पित इस श्रद्धांजलि में लेखिका की कोमलतम संवेदनायें भी व्यक्त हुई हैं। पथ के साथियों में छह सहयोगियों के संस्मरणों में उनके बाह्य व्यक्तित्व और कृतित्व के अतिरिक्त उनकी आंतरिक रुचियों एंव विरुचियों का भी चित्रण मिलता हैं। इन साथियों को महादेवी ने भाई अथवा बहन कहकर सम्बोधित किया हैं, फिर भी इनके वर्णन में वे भरसक तटस्थ रही हैं। उन्हीं के शब्दों में – 'मैंने साहस तो किया हैं, पर ऐसे संस्मरण के लिए आवश्यक निर्लिप्तता या असंगता मेरे लिए सम्भव नहीं।' कवीन्द्र रवीन्द्र को वे नतमस्तक हो प्रणाम करती हैं।

इस संग्रह में महादेवी ने अपने छह सहायोगियों का रेखांकन प्रस्तुत किया है। पहला राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त का हैं। उनकी कर्मनिष्ठ, सरलता, स्पष्वादिता को शाब्दिक भावना से प्रस्तुत किया हैं। दूसरा चित्र समाज में होते अत्याचार को देखकर राजनैतिक मंच पर विद्रोह करनेवाली कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान का हैं। तीसरा निराला जी का हैं। उनके बारे में महादेवी जी स्वीकारती हैं कि वे तो अनगढ़ पारस के भारी शिला-खण्ड के समान हैं। चौथा चित्र प्रसाद जी का है। उनका व्यक्तित्व देवदार के समान था जिसे जल की क्षुद्रधारा ने तिलतिल काटकर गिरा दिया था। पाँचवें चित्र के बारे में महादेवी जी कहती हैं कि उन्हें देखकर उन्नत हिम शिखरों का स्मरण होता हैं।

वह हिमालय पुत्र पंतजी का हैं। छठा चित्र गाँधीवादी साहित्यकार सियाराम शरण गुप्त का हैं। 'इन रेखाचित्रों में लेखिका ने व्यंग्य, अलंकारिक एवं सूक्ति शैली का प्रयोग किया हैं। महादेवी खुद अपने शब्दों में कहती हैं कि – 'साहित्यकार की साहित्य-सृष्टि का मूल्यांकन तो अनेक आगत-अनागत युगों से हो सकता हैं, परन्तु इनके जीवन की कसौटी उसका अपना युग ही रहेगा।'[184]

मैथिलीशरण गुप्त का चित्र सामान्य हैं क्योंकि उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व हिन्दी जगत के समक्ष खुला पृष्ठ रहा हैं। कर्मनिष्ठता, भावुकता, स्पष्टवादिता, सरलता आदि गुण प्रधान रूप से इस चित्र में हैं। इसलिए उनके सम्बन्धित कोई भी तथ्य रहस्यपूर्ण नहीं हैं। सुभद्राकुमारी चौहान का रेखाचित्र अन्तरंग सहेली का भी हैं और काव्य क्षेत्र में प्रसिद्ध प्रतिद्वन्द्वी का भी हैं। सुभद्रा जी के वात्सल्य रूप का चित्रण इस रेखाचित्र का सबसे अधिक मार्मिक अंश हैं, 'सुभद्रा में जो महिमामयी माँ थी, उसकी वीरता का उत्स भी वात्सल्य ही कहा जा सकता हैं।'[185] निराला जी के रेखाचित्र जिस कलात्मकता के साथ में मर्मोदघाटन किया गया है। उनकी उदारता, दान-वृत्ति, अतिथि-प्रेम विशेष रूप से व्यक्त किया गया हैं। साथ, स्वाभिमान, कुत्सित्व पर व्यंग्य और आवश्यकतानुसार आक्रोश आदि की द्वन्द्वमयी स्थितियों का अच्छा चित्रण हुआ हैं। लेखिका ने अति तटस्थ भाव से वास्तविक छवि का अंकन किया हैं। निराला जी अपने शरीर, जीवन और साहित्य सभी में असाधारण हैं। उनमें विरोधी तत्वों की भी सामंजस्यपूर्ण संधि हैं।[186] निरालाजी के बाद प्रसाद के प्रथम दर्शन का चित्रण लेखिका ने इस प्रकार दिया हैं –

'प्रसाद के प्रथम दर्शन का चित्र लेखिका ने इस प्रकार दिया है उनका चित्र उन्हें अच्छा हृष्ट-पुष्ट स्थविर बना देता हैं, पर स्वयं न वे उतने हृष्ट जान पड़े और न उतने पुष्ट ही। न अधिक ऊँचा ना नाटा-मझोला कद न दुर्बल न स्थूल, छरहरा शरीर, गौरवर्ण, माथा ऊँचा और प्रशस्त, बाल न बहुत घने न विरल, कुछ भूरापन लिए काले; चौड़ाई लिए मुख, मुख की तुलना में कुछ हल्की सुडौल नासिक, आँखों में उज्ज्वल दीप्ति, ओठों पर अनायास आने वाली बहुत स्वच्छ हँसी, सफेद खादी का धोती कुर्ता।'[187]

'पन्त' जी रेखाचित्र हिमालय पुत्र के बिम्ब से करके लेखिका ने समग्र चित्र में उनकी कोमलता का अंतर्मुखी वृत्ति वाले संकोची स्वभाव आदी का चित्रण सहज रूप से कर दिया हैं। दृष्टव्य हैं – 'सुमित्रानन्दन जी हिमालय के पुत्र हैं, पर उन्हें देखकर न उन्नत हिम शिखरों का स्मरण आता हैं और न ऊँचे न ऊँचे चिर सजग प्रहरी जैसे देवदारू याद आते हैं।[188] वे उस प्रशांत छोटी झील से समानता रखते हैं जो अपने चारों ओर खड़े शिखरों और देवदारुओं की गगन चूम्बी ऊँचाई को अपने हृदय में प्रतिबिम्बित कर उसे धरती के बराबर कर देती हैं, गहरे गर्तों को अपने जल से सम

कर देती हैं और उच्शृंखल निर्झर के पैरों के नीचे तरल आँचल बिछाकर उसे गिरने, चोट खाने से बचा लेती हैं। पन्त कोमलता और सुकुमारता की मूर्ति है उनमें प्रकृति प्रेम अटूट समय हुआ है।[189] 'शियारामशरण गुप्त जी का रेखाचित्र यद्यपि छोटा है किन्तु गहराई युक्त है सियारामशरण जी गाँधीवादी थे लेकिन वही उनकी सीमा रेखा न थी वरन व्यवहारात्मक स्तर पर उसे अपनाया। उनका जीवन एक बार जिस दिशा की ओर चल दिया, चलता रहा, न वे लौटे और नहीं थक कर बैठ गये। महादेवी जी ने उनके चरित्र की इस विशेषता को प्रस्तुत उपमा द्वारा अभिव्यञ्जित किया हैं, 'पानी पर तेल की बूँद की तरह तैरता-उतरता फिरे न ऐसा राग उनके पास है, न वैराग्य, न ज्ञान हैं, न अहंकार।' इस प्रकार हम कह सकते हैं। कि 'पथ के साथी' के सभी संस्मरणात्मक चित्र यथार्थ की कठोर भूमि पर टिके रहकर सृजन की ऊँचइयों का स्पर्श करने में समर्थ हैं।

इस संग्रह में समकालिन साहित्यकारों के जीवन में निहित व्यक्ति परक अनुभूतियों के युगीन चेतना सन्दर्भ में प्रस्तुत किया गया हैं।[190]

मेरा परिवार :- मेरा परिवार 1972 ई.।[191] इस संस्मरण संग्रह में पशु पक्षियों से सम्बन्धित सात संस्करण हैं। महादेवी वर्मा ने अत्यंत विनयवश ही अपनी इस कृति को 'मेरा परिवार' नाम दिया हैं। वास्तविकता यह है कि इस महाप्राणशील कवयित्री का परिवार बहुत विशाल है।[192] परिग्रही जीवन को अस्वीकार करके उन्होंने अपना कोई सीमित परिवार नहीं बनाया, पर उनका जैसा विशाल परिवार- पोषण सबके वश की बात नहीं। गाय, हिरण, कुत्ते, बिल्लियाँ, गिलहरी, खरगोश, मोर, कबूतर तो उनके चिर संगी हैं ही, लता-पाद पुष्य आदि तक उनकी परिवारिक ममता के समान अधिकारी हैं।[193] अपने एक-एक लघुतम और सर्वथा उपेक्षित मानवेतर पात्र की सूक्ष्म से सूक्ष्म संवेदना को प्रकृति माता के जिस अतिसंवेदन शील राडार की तरह पकड़कर जो मर्ममोहक अभिव्यक्ति दी हैं, वैसी स्पर्शातीत और ईश्वरीय भाव-ग्राहिता कोमल से कोमल अनुभूति वाले कवियों में भी अधिक सुलभ नहीं हैं।[194]

(1) नीलकंठ, 2) गिल्लू, 3) सोना, 4) दुर्मुख, 5) गौरा, 6) नीलू, 7) निक्की, रोजी और रानी।

इन गद्य-चित्रों के पात्र भले ही मानव न हों, पर हैं वे सब मानवीय संवेदना के सूक्ष्मतर अनुभूति से ओत-प्रोत। उन मानवेतर पात्रों की गति विधि की संचालिका के रूप में कवयित्री का व्यक्तित्व इन चित्रों में अपनी परिपूर्ण मानवीयता के साथ उभर कर पग-पग पर पाठक की चेतना के अणु-अणु में अपने अमृत-स्पर्श का संचार करता चला जाता हैं।[195]

महादेवी जी के शब्दों में स्मृति यात्रा में पशु-पक्षी ही मेरे प्रथम संगी रहे हैं, किन्तु

इसे दुर्योग्य ही कहा जायेगा कि मनुष्य में उसे यह प्राथमिक अनायास छीन ली।

सन् 18 में जब मैंने क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में पाँचवी कक्षा की छात्रा के रूप में प्रवेश किया, तब मन में पढ़ने का उत्साह घर से दूर आने के विषाद से अधिक था,किन्तु ज्यों-ज्यों उस वातावरण से मन की आत्मियता बढ़ती गई त्यों-त्यों विषाद की मात्रा भी अधिक होती गई।[196] एक आम के पेड़ की दो-तीन डाले इतनी नीची थीं कि उन पर बैठना सहज था। कक्षा के समाप्त होते ही मैं कागज, कलम पुस्तक आदि की साज-सज्जा के साथ आम की डाल पर जा बैठती थीं अध्यापिकाओं और अन्तेवसिनियों पर मेरे इस पढ़ाई लिखाई का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। उनके लिए मेरा अध्ययन तपस्या से कम नहीं था। पर मेरे मन ने जिस सौंदर्य का परिचय पा लिया था, उसका पता किसी को नहीं मिल सका बागवाली ने एक चितकबरी बकरी और पीली चोंचवाली सफेद मुर्गी भी पाल रखी थी आम-अमरुद के वृक्षों में फल लग जाने पर झुण्ड के झुण्ड तोते डालियों पर ऐसे पंक्तिबद्ध बैठ जाते थे कभी-कभी एक उदासीन नीलकण्ठ आम की फुनगी पर बैठ जाता था कभी एक चकित सा कौवा। पिडुकी, गौरेय्या आदि के झुण्ड तो स्वरों की हाट ही लगाये रहते थे।[197] उसी वसंत में बागवाली की सफेद मुर्गी को पंख फुलाये हुए अपने पाँच बच्चों के साथ देखा, जो सेमल की रुई के गेंदों के समान लग रहे थे बाग में पहुँचते ही मैं सबसे पहले मुर्गी के बच्चों को एक दो तीन करके गिन लेती थी।[198] अनुभूति की तीव्रता ही हमारे मनो जगत में कोई संस्कार छोड़ जाती हैं और यह तीव्रता अनुभूत विषय के महत्वपूर्ण या तुच्छ होने पर निर्भर नहीं रहती। बालक के लिए खिलौना टूटने की दुखद अनुभूति भी इतनी तीव्र और सत्य हो सकती हैं, जितनी वयस्क की आत्मीय जन के विछोह की न हो।[199] पशु पक्षियों के साथ प्रतिदिन के साधारण क्रीड़ा कौतुक की जमीन पर कवयित्री ने अपने जादुई शिल्प के जो नमूने पाठकों के आगे उपस्थित कि हैं, उनमें स्थूल पार्थिव जीवन को सूक्ष्म आध्यात्मिक संवेदन के स्तर तक उभारकर रख दिया गया हैं। महाकवि गेटे ने शकुंतला को स्वर्ग और मर्त्य के समंवय का (अर्थात केवल दो तत्वों के मेल का) आर्दश बताया था। महादेवी ने अपनी संवेदना को केवल दो ही नहीं, 'भूः भुवः और स्वः' इन तीनों आयामों में प्रसारित करके रख दिया हैं। ऐसी व्यापकता, गहराई और ऊँचाई हैं उनकी कला में। एक साधारण से लघु-प्राणी गिल्लू को उसके मानवेतर जीवन के क्षुद्र कोटरगत मंच से इस सफाई के साथ मानवीय मंच के व्यापक परिप्रेक्ष्य में उभार कर उतारा गया हैं कि साँस को बार-बार रोक कर उस नाटक के क्लाइमेक्स की उत्सुकता की पूर्ति के लिए उन्मुख होना पड़ता हैं। यही जादू उनकी गौरा (गाय), नीलू (कुत्ता), सोना (हिरनी), दुर्मुख (खरगोश) आदि जीवों के जीवन-इतिहास-चित्रण में अमृत-स्पर्श की तरह व्याप्त पाया जाता है।[200]

शृंखला की कड़ियाँ :- शृंखला की कड़ियाँ। यह तीसरा संग्रह हैं। इस संग्रह का प्रकाशन 'अतीत के चलचित्र के बाद हुआ लेकिन इसमें संग्रहीत लेख' 'चाँद पत्रिका में पहले ही प्रकाशित हो चुके थे। इस के अधिकांश निबन्ध नारी-समस्याओं से सम्बन्धित हैं।[201] महादेवी जी का कथन-प्रस्तुत संग्रह में कुछ ऐसे निबंध जा रहे हैं जिनमें मैंने भारतीय नारी की विषम परिस्थितियों को अनेक दृष्टि बिन्दुओं से देखने का प्रयास किया हैं। अन्याय के प्रति मैं स्वभाव से असहिष्णु हूँ अतः इन निबन्धों में उग्रता की गन्ध स्वाभाविक हैं।[202]

प्रस्तुत संग्रह के नाम इस प्रकार हैं।

(1) हमारी शृंखला की कडियाँ, (2) युद्ध और नारी, (3) नारीत्व का अभिशाप, (4) आधुनिक नारी, (5) घर और बाहर, (6) हिन्दू स्त्री का पत्नीत्व, (7) जीवन का व्यवसाय, (8) स्त्री के अर्थस्वातंत्र्य का प्रश्न, (9) हमारी समस्याएँ, (10) समाज और व्यक्ति, (11) जीने की कला।

महादेवी नारी का पक्ष लेती हुई एक चतुर वकील की भाँति तर्क देती हैं। नारी के असंतुलित जीवन का चित्र उनके इन शब्दों में उभर कर आया हैं - "कहीं उसमें साधारण दयनीयता हैं और कहीं असाधारण विद्रोह हैं, परंतु संतुलन से उसका जीवन परिचित नहीं।"[203] सामाजिक चेतना में नारी समस्या और जागृता के सदर्भ में लेखिका ने अपना मंतव्य इस प्रकार प्रकट किया हैं - भारतीय नारी भी जिस दिन अपने सम्पूर्ण प्राण प्रवेग से जाग सके उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए सम्भव नहीं[204] अपनी समस्त शक्तियों से पूर्ण महिमामयी महिला के सम्मुख किसी का मस्तक आदर से नत हुए बिना नही रह सकता यह अनुभव की वस्तु हैं तर्क की नहीं[205] उसे अपने गुरुतम उत्तरदायित्व के अनुरूप मानसिक तथा शारीरिक विकास के लिए विस्तृत स्वाधीनता चाहिए। कारण, संकिर्णता में उसके जीवन का वैसा सर्वतोन्मुखी विकास सम्भव ही नहीं जैसे किसी समाज की स्वस्थ व्यवस्था के लिए अनिवार्य है।[206] ऐसा एक भी सामाजिक प्राणी नहीं मिलेगा जिसका जीवन माता, पत्नी, भगीनी, पुत्री, आदि स्त्री के किसी न किसी रूप में प्रभावित न हुआ हो। इस दशा में उसके व्यक्तित्व को कितने गुरु उत्तरदायित्व की छाया में विकास पाना चाहिए यह स्पष्ट हैं।[207] नारी जागृत के संदर्भ में लेखिका ने अपना संपूर्ण प्राण प्रवेग से जाग सके, उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए सम्भव नहीं। उसके अधिकारों के सम्बन्ध में यह सत्य हैं कि वे भिक्षा वृत्ति से न मिले हैं, न मिलेंगे, क्योंकि उनकी स्थिति आदान-प्रदान योग्य वस्तुओं से भिन्न हैं।[208] महादेवी का विचार हैं कि नारी को एक संकुचित परिवेश में ही रहना चाहिए, वरन अपने और समाज के बीच शृंखला की एक कड़ी जोड़ ने का प्रयत्न करना चाहिए,

जिससे समाज में उसे एक गौरव युक्त स्थान प्राप्त हो सके तथा उसका आदर सम्मान किया जा सके। इस प्रकार यह पूरी पुस्तक नारी के अभिशाप को दूर करने के लिए महादेवी की ओर से नारी को भेट हैं।[209] अपने नारी विषयक निबन्धों में महादेवी जी ने जिस क्रांतिकारी दृष्टिकोण का परिचय दिया हैं। वह बड़े से बड़े समाज-सुधार के में भी विरल हैं।[210]

क्षणदा :- यह संग्रह महादेवी की पूर्ववर्ती गद्य-कृतियों से अलग है। इसमें उनके आलोचनात्मक निबंधों का संग्रह है। महादेवी इन निबन्धों के विषय में कहती है- 'क्षणदा' में मेरे कुछ चिंतन का क्षण एकत्र है। इनमें न तर्क की प्रक्रिया है और न किसी जटिल समस्या को सुलझाने के निमित प्रस्ततु समाधान।' इस संग्रह में कुल बारह निबंध संग्रहित हैं - 1) करुणा का संदेशवाहक, 2) संस्कृति का प्रश्न, 3) कसौटी पर स्वर्ग का एक कोना, 4) कला और हमारा चित्रमय साहित्य, 5) कुछ विचार, 6) दोष किसका, 7) सुई दो रानी, 8) अभिनय कला, 9) हमारा देश और राष्ट्रभाषा, 10) साहित्य और साहित्यकार तथा 11) हमारे वैज्ञानिक युग की समस्या। ये निबंध समाज, संस्कृति, कला, दर्शन, तथा साहित्य से सम्बन्धित हैं। इन निबन्धों के माध्यम से महादेवी ने गौरवमय अतीत के पृष्ठों को पलटने के साथ ही वर्तमान काल में उस संस्कृति, कला दर्शन, तथा साहित्य से सम्बन्धित हैं। इन निबन्धों के माध्यम से महादेवी ने गौरवमय अतीत के पृष्ठों को पलटने के साथ ही वर्तमान काल में उस संस्कृति की पतनोन्मुख दशा का भी चित्रण किया हैं। तथा इस का कारण भी बताया हैं।[211]

महादेवी के निबन्धों का अध्ययन करने के लिए उसे

निम्नलिखित वर्गों में रखा जा रहा हैः

विवेचनात्मक निबन्ध :- इस कोटि के निबंध 'क्षणदा' में एकत्र हैं। इनमें भारतीय कला, संस्कृति आदि पर विचार मिलते हैं। 'क्षणदा' में लेखिका के कुछ बारह निबंध संग्रहीत हैं। पहले निबंध में उन्होंने भगवान बुद्ध तथा उनके द्वारा स्थापित बौद्ध धर्म के बारे में अपना मत प्रकट किया है। बुद्ध को वे आदर्श पुरुष मानती हैं। उनके विचार, उनके व्यक्तित्व, उनके करुणा भाव आदि से वे काफी प्रभावित हैं। बुद्ध एक मात्र व्यक्ति हैं, जिन्होंने अपने धर्म की स्थापना में परमात्मा की मध्यस्थता नहीं स्वीकार की।

बौद्ध धर्म में कही हुई बातें भारतीय विचारधारा से बहुत हद तक मिली हुई होने पर भी अपनी दिशा में मौलिक है। महादेवी इस निबंध में बुद्ध की विजय मनुष्यता की देवत्व पर विजय मानती हैं।

'क्षणदा' के एक दूसरे निबन्ध में लेखिका ने भारतीय संस्कृति पर विचार किया है। 'संस्कृति' शब्द को परिभाषित करती हुई वे लिखती हैं - 'संस्कृति जीवन के बाह्य

और आन्तरिक संस्कार का क्रम होता है और इस दृष्टि से उसे जीवन को सब ओर से स्पर्श करना ही होता है। इसके अतिरिक्त वह निर्माण ही नहीं, निर्मित तत्वों की खोज भी है। भौतिक तत्व में मनुष्य प्राणी तत्व को खोजता हैं, प्राणित्व में मनस्तत्व को खोजता है और मनस्तत्व में तर्क तथा नीति को खोज निकालता है, जो उसके जीवन की समष्टि में सार्थकता और व्यापकता देते हैं। इस प्रकार विकास पथ में मनुष्य का प्रत्येक पग अपने आगे सृजन निरन्तरता और पीछे अन्वेषण छिपाए हुए हैं। इस प्रकार मानव का हर क्षेत्र में विकास ही उस देश की संस्कृति के विकास में साथ दे सकता है। उस बनी–बनायी संस्कृति को कायम रखने के लिए हमें आदर्श–पथ पर चलना चाहिए।

धर्म और संस्कृति की व्याख्या के अतिरिक्त महादेवी ने कला के संबंध में भी अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। उनकी दृष्टि में कलाकार का महान कर्तव्य अपनी कला में सत्य शिव और सुन्दर तीनों की प्रतिष्ठा करना है। कला उनके अनुसार रागात्मक हृदय की कलात्मक अभिव्यक्ति है। कलाकार का लक्ष्य हमारे जीवन की सुन्दर–असुन्दर, दुर्बल–सबल, पूर्ण–अपूर्ण सभी वस्तुओं में सामंजस्य करना है। कला की व्यावहारिकता के सन्दर्भ में उनका विचार अन्य चिंतकों से भिन्न है। वे कला को जीवन से सम्बन्ध मानती है। 'क्षणदा' की भूमिका में उन्होंने लिखा है – 'कला यदि जीवन की, संदर्भ में, सत्य में अभिव्यक्ति है तो भी वह जीवन से सम्बन्ध है। वह यदि जीवन की अपूर्णताओं को पूर्ण करने का प्रयास है तो भी उसके निकट है और यदि केवल उससे प्रसूत या उसका प्रतिबिम्बम है तो भी उसी की है। प्रकारान्तर से कहा जा सकता हैं कि जीवन कलामय है और कला सजीव, अतः इनका परस्पर अपेक्षित अस्तित्व अनपेक्षित बनकर नहीं जी पाता चाहे निर्जीव प्रतिभा बनकर रह सके। प्रायः कार्य और कारण या उपकरण उससे बनी वस्तु में रुप, रंग और आकार की भिन्नता हो सकती है, प्रकृति की नहीं, परन्तु हमारी कला इस कार्य–कारण सम्बन्धी नियम के अनुसार नहीं चलती, कारण वह क्षणिक जीवन से प्रसूत होकर भी अमर है। वह हमारे नीरस जीवन को सरस बनाने में, निराश्रय हृदय को अवलम्ब देने में और हमारे साधारण जीवन के लिए आदर्श स्थापित करने में सदा से समर्थ रही है।' मनुष्य अपने स्वभाव के अनुकूल इस विभिन्न कलाओं पर आकर्षित होता आया है। मन, नेत्र एवं स्पर्श को काव्य कला की अपेक्षा चित्रकला अथवा मूर्ति कला अधिक भाती है, इनमें भी चित्रकला ही अधिक बोधगम्य एवं सुलभ लगती हैं।

कला की व्याख्या के अन्तर्गत लेखिका प्राचीन समाज में प्रचलित अभिनय कला का वर्णन करती हैं। अभिनय कला के विकास क्रम को दर्शाती हुई पारसी रंगमंच और

फिर मूक चलचित्रों पर और पश्चात् सवाक चलचित्रों पर भी अपने विचार प्रकट करती हैं।

क्षणदा में महादेवी ने भारत की राष्ट्रभाषा, आज की वैज्ञानिक समस्या, हमारे जीने के स्तर आदि के बारे में अपना स्पष्ट विचार प्रकट किया है। 'हमारा देश और राष्ट्रभाषा' निबंध में उन्होंने देश की तत्कालीन परिस्थितियों का उल्लेख किया है। इसके साथ ही देश की एकता और अखंडता के लिए राष्ट्रभाषा को परम आवश्यक मानती है। हिन्दी लिपि और हिन्दी भाषा के बारे में उनकी स्पष्ट धारणा है कि यह विश्व की अन्य लिपियों और भाषाओं की अपेक्षा सरल है। इनके विचार इन शब्दों में देखे जा सकते हैं – 'भाषा को सीखना उसके साहित्य को जानना है और साहित्य को जानना देश में मानव एकता की स्वानुभूति को अभिव्यक्त करना है। अपने संदेश को सार्थक करने के लिए हिन्दी को केवल 'कण्ठ का व्यायाम' न होकर 'हृदय की प्रेरणा' भी बनाना है। राष्ट्र भाषा के महत्वाँकन के साथ साथ लेखिका देश की अन्य समस्याओं पर भी विचार करती है। 'हमारे वैज्ञानिक युग की समस्या' शीर्षक निबंध में वे निकटता की दूरी से सतर्क रहने की राय देती हैं।

विवेचनात्मक निबंधों के अन्तर्गत कुछ ऐसे निबंध भी लेखिका ने लिखे हैं जो 'क्षणदा' के उपर्युक्त निबन्धों से स्वरूपतः भिन्न है। 'क्षणदा' के अधिकांश निबंध मूलतः वैचारिक हैं और भारतीय धर्म, संस्कृति, कला दर्शन, देश आदि पर आधारित हैं। लेकिन विवेचनात्मक निबंधों का एक अन्य रूप भी इनके गद्य में प्राप्त होता है, जिसे अध्ययन-विश्लेषण की सुविधा के लिए साहित्यिक निबंध को संज्ञा दी जा सकती है। ऐसे निबन्ध 'क्षणदा' के तीन निबन्धों के अतिरिक्त उनके काव्य संग्रहों की भूमिकाओं में प्राप्त होते हैं। क्षणदा के तीन निबंध हैः-

(1) कुछ विचार, (2) दोष किसका तथा (3) साहित्य और साहित्यकार।

इन तीनों निबन्धों में हिन्दी साहित्य के विस्तृत क्षेत्र की विभिन्न शाखाओं के बारे में लिखा गया है। साहित्यकार के कर्त्तव्य का विशद विवेचन करते हुए उसे समाज के प्रति महान उत्तरदायी सिद्ध किया गया है। लेखिका की दृष्टि में साहित्यकार का कर्त्तव्य केवल 'स्वातंः सुखाय' न रहकर 'समाज हिताय' भी होता है। साहित्य में व्यक्ति के नीजीपन का विशेष महत्व नहीं है। साहित्यकार एक ओर बन्धन में रहने वाले मानव-मन को समष्टि में बाँधकर उसे किसी उद्देश्य की ओर प्रवृत्त करता है और दूसरी ओर मानव-स्वभाव की विविधताओं को उसके सामने प्रस्तुत कर सामाजिक मूल्यांकन को समृद्ध करता है। लेखिका के शब्दों में – 'वस्तुतः साहित्य सृजन समग्र जीवन, समस्त शक्तियों का संश्लिष्ट दान है। जीवन में कुछ कार्य जीवन-निर्वाह के साधन मात्र हैं। कुछ

जीवन के साध्य हैं और कुछ साधन–साध्य दोनों का एकीकरण है। केवल बाह्य जीवन में सीमित क्रिया साधन हो सकती है, केवल अन्तर्जगत में मुक्त साध्य हो सकती है, परन्तु अन्तर्जगत की प्रक्रिया का बाह्य रसात्मक अवतरण साधन और साध्य को एकाकार कर सकता है। यह ऐसा दान है, जिसे देकर भी हम पाते हैं। यह ऐसा स्वार्थ है, जिसे पास रहकर भी हम देते हैं। पर इस दोहरी स्थिति के कारण ही साहित्यकार के जीवन के साधन और साध्य कुछ रहस्यमय हो जाते हैं। इस स्थिति को समझने के लिए ऐसे संस्कृत समाज की आवश्यकता रहती है, जो अपने दिए मूल्य को अधिक न समझे और उससे प्राप्त सृजन को न्यून न माने।' इस उदाहरण में साहित्यकार की जो आचार–संहिता प्रस्तुत की गई है, वह बड़ी ही उपयोगी है।

आज पत्रकारिता एक स्वतंत्र और सशक्त विद्या के रूप में उभरी है। बहुत अंशों में साहित्य और पत्रकारिता में काफी दूरी भी है, किन्तु महादेवी की दृष्टि में किसी पत्र का सम्पादक भी वही कार्य करता है जो साहित्यकार करता है। इसलिए साहित्यकार के कर्त्तव्य–निर्धारण के साथ–साथ वे सम्पादक के दायित्व पर भी विचार करती हैं। उनका कथन है कि साहित्यकार के विचारों को जनता तक पहुँचाने वाला पत्रकार ही होता है। वह एक ऐसा माध्यम है, जो साहित्यकार की कृति को जनता के सामने प्रस्तुत करने में सफल और सहायक सिद्ध हो सकता है। साहित्यकार और पाठक के मध्य सम्पादक सेतु है। इतना ही नहीं नये कलाकारों को उत्साह दिलाना भी सम्पादक का ही कार्य है। सम्पादक की 'पीत पत्रकारिता' के फैशन से अलग रहने का संदेश देती हुई लिखती है– ''सम्पादकों को पक्षपात की भावना मन से निकाल कर साहित्य को उन्नति के लिए सच्ची सेवा करनी चाहिए।'

वर्णनात्मक निबन्ध :– 'क्षणदा' में दो ऐसे निबंध है, जिनमें वर्णन की प्रधानता है। ये निबंध है – 'स्वर्ग का एक कोना' तथा 'सुई दो रानी'। पहला निबंध उनकी कश्मीर यात्रा से सम्बन्धित है और दूसरे में उनकी बद्रीनाथ की यात्रा का वर्णन हुआ है। कश्मीर की प्राकृतिक सुषमा से अभिभूत होकर लेखिका ने उसे 'स्वर्ग का एक कोना' कहा है। कश्मीर की सुन्दरता स्वयं लेखिक के शब्दो में – 'वहाँ के असंख्य फूलों में दो जंगली मजारपोश और लालपोश मुझे बहुत प्रिय लगे। मजारपोश अधिक से अधिक संख्या में समूह में फूलकर अपनी नीली अधखुली पखुड़ियों से अस्थि–पंजर को ढकने वाली धूति को चंदन बना देता है और लालपोश हरे लहलहाते खेतों में अपने आप उत्पन्न होकर अपने गहरे लाल रंग के कारण हरित धरातल पर जड़े पद्कारग की स्मृति दिला जाता है। इस उदाहरण में कश्मीर की सुषमा का वर्णन प्रधान है। वर्णनात्मक निबंधों में निबंधकार जितनी तटस्थता का परिचय देता है, वह यहाँ विद्यमान है। इतना ही नहीं

कश्मीर यात्रा–मार्ग में आने वाली कठिनाइयों के वर्णन में भी लेखिका का मन खूब रमा है।

दूसरे निबन्ध के बद्रीनाथ के निकट सुई मांगने वाली स्त्रियों का स्वरूप लेखिका के आकर्षक का केन्द्र बन गया है। वहाँ सूई की भिक्षा–वृत्ति पर लेखिका को आश्चर्य होता है। बद्रीनाथ महान तीर्थ स्थान होते हुए भी अन्य तीर्थ स्थानों की अपेक्षा उपेक्षित है। वहाँ गन्दगी अधिक दिखाई पड़ी, अव्यवस्था का प्रभाव देखा गया। मंदिर में दर्शन की अनुमति केवल सम्पन्न व्यक्तियों को ही मिलती थी और सामान्य प्रवेश से वंचित रह जाते थे। इस तरह इन दोनों निबंधों में वर्णन की प्रधानता होने के कारण इन्हें वर्णनात्मक निबन्धों की कोटि में रखा जा सकता है।[212]

साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध : यह पुस्तक लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद से प्रकाशित हुयी हैं। इसमें संग्रहीत आठ निबन्धों के चयन का कार्य श्री गंगा प्रसाद पाण्डेय ने किया हैं। प्रारम्भ में श्री पाण्डेय ने विज्ञप्ति लिखी हैं। इसके अन्तिम निबंध 'हमारे वैज्ञानिक युग की समस्या' का प्रकाशन क्षणदा में हो चुका है। इसके अतिरिक्त सात निबंध है –

1) साहित्यकार की आस्था, 2) काव्यकला, 3) छायावाद, 4) रहस्यवाद, 5) गीतिकाव्य, 6) यथार्थ और आदर्श, 7) सामायिक समस्या, 8) हमारे वैज्ञानिक युग की समस्या।

इन सात निबन्धों में 'साहित्यकार की आस्था' शीर्षक निबंध को छोड़कर अन्य सभी निबन्ध इसके पूर्व ही महादेवी का विवेचनात्मक गद्य में प्रकाशित हो चुके हैं। इन निबंधों में महादेवी ने बाह्य जीवन की स्थूलता और अन्तर्गत की सूक्ष्मता के व्यापक अनुभव, चिन्तन और मनन से प्राप्त सत्य, शिव और सौन्दर्य के बल पर समालोचक के पूर्व निर्मित सिद्धांतों और परम्परा–पोषित विचारों को चुनौती देते हुए काव्य के सच्चे मापदण्ड स्वयं कवि की रचनाओं से ही खोजने का ही सुझाव दिया है। उनकी यह दृष्टि से उन्होंने प्रमुख रूप से छायावाद, रहस्यवाद, गीतिकाव्य आदि की व्याख्या की है तथा इनके बारे में अपने विचार प्रकट किए हैं। इन निबन्धों में महादेवी के समन्वयवादी आलोचक रूप की अभिव्यक्ति हुई हैं।[213]

साहित्यकार का सृजन आस्था की धरती से इतना रस ग्रहन करता हैं कि उसे अस्वीकार करके वह स्वयं अपने निकट असत्य बन जाता है। आस्था वह स्पन्दित दीप्त जीवन देती है। साहित्य जीवन का अलंकार नहीं हैं वह स्वयं जीवन हैं। साहित्य सृजन के क्षणों में उस जीवन में जीता है। और पाठक पढ़ने के क्षणों में[214] आसा और स्था, अस्तित्व और स्थिति दोनों का उसमें ऐसा समंवय हैं कि धर्म के आस्तिक से लेकर

वैज्ञानिक युग के नास्तिक तक सब उसे स्वीकृति देते हैं।[215] जिन युगों में एक-एक खण्ड दूसरे से परिचित नहीं था उनमें भी मनुष्य ने वसुधा को कुटुम्ब के रूप में स्वीकार कर अनदेखे सहयात्रियों के प्रति आस्था व्यक्त की हैं। तब आज के मंगल-ग्रह-खोजी वैज्ञानिक युग को आस्था का अभाव क्यों हो? आज साहित्य की आस्था की [illegible] अधिक व्यापक हो गया हैं, पर यह व्यापकता उसे समसामायिक परिस्थितियों से संघर्ष कर उन्हें लक्ष्योन्मुख बना लेने की शक्ति दे सकती हैं। उसे विस्तृत मानव परिवार को ममता देनी हैं।[216] साहित्यकार जिस प्रकार यह जानता हैं। कि बाह्य जगत में मनुष्य जिन घटनाओं को जीवन का नाम देता हैं, वे जीवन के व्यापक सत्य की गहराई और उसके आकर्षक की परिचायक हैं।[217] 'सत्यनिमित नहीं, किया जाता, उसे साधना से उपलब्ध किया जाता हैं, यह आज भी प्रमाणिक हैं।[218]

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY The M. S. University of Baroda

छायावाद ने मनुष्य हृदय और प्रकृति के उस सम्बन्ध में प्राण डाल दिये, जो प्राचीन काल से बिम्ब-प्रतिबिम्ब के रूप में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य को अपने दुःख में प्रकृति उदास और सुख में पुलकित जान पड़ीत थी।[219]

छायावाद ने कोई रुढ़िगत अध्यन वर्गगत सिद्धांन्तों का संचय न देकर हमें केवल समष्टिगत चेतना और सूक्ष्मगत सौन्दर्य सत्ता की ओर जागरुक कर दिया था,[220] महादेवी जी ने अनुभूति, विचार और कल्पना के समान्वित रूप को दृष्टि में रखकर अपना आलोचनात्मक साहित्य लिखा है। लेखिका की मान्यता है- 'किसी मानव समूह को उसके समस्त परिवेश के साथ तत्वतः जानने के लिए जितने माध्यम उपलब्ध हैं, उनमें सबसे पूर्ण और मधुर उसका साहित्य ही कहा जायेगा। साहित्य में मनुष्य का असीम, अतः उपरिचित और दुर्बोध जान पड़ने वाला अंतर्गत बाह्य जगत में अवतरित होकर निश्चित परिधि तथा सरल स्पष्टता में बँध जाता है, तथा सीमित' अतः चिर परिचय के कारण पुराना लगने वाला बाह्यजगत अंतर्जगत के विस्तार में मुक्त होकर चिर नवीन रहस्यमयता पा लेता हैं। 'साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध' में महादेवी जी गहन अनुभूति और चिंतन-मनन प्रतिफलित हुआ हैं। गीति काव्य पर उनका निबन्ध अपनें ढंग का प्रथम और प्रामाणिक है। लेखिका के द्वारा दी गई 'गीती' की परिभाषा को सभी गीत प्रेमियों तथा आलोचकों ने सहर्ष स्वीकार किया हैं। उन्हीं के शब्दों में, 'साधारणता गीत व्यक्तिगत' सीमा में तीव्र सुख-दुखात्मक अनुभूति का वह शब्द-रूप हैं, जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय हो सके।''

इसी प्रकार लेखिका ने साहित्य की विकासशील प्रवृत्ति को ही प्रगति माना हैं जो जीवन के स्वाभाविक विकास के साथ रचनाक्रम में स्थान पाती हैं।[222] इस निबन्ध संग्रह के विषय में गंगाप्रसाद पाण्डेय जी के शब्दों में कहना चाहूँगी कि, 'इस संग्रह में महादेवी

जी ने साहित्य की जीवन व्यापी विविधता और उसमें प्रतिफलित होने वाले प्रायः सभी महत्वपूर्ण विषयों को लेकर इतने विस्तार और इतनी गहनता से विवेचन किया हैं कि पाठक के मनमें भाव-विचार, संकल्प भाव, व्यष्टि-समष्टि, राष्ट्र-परराष्ट्र, जड़-चेतना, सूक्ष्म-स्थूल, यथार्थ-आदर्श सामायिकता-शाश्वतता, ज्ञान-विज्ञान, श्लीलता-आश्लीलता, प्रत्येक-परोक्ष, परम्परा-प्रगति, सभ्यता-संस्कृति, रूप-कुरुपशिव-सौन्दर्य, नूतन-पुरातन, भौतिकता-आध्यात्मिकता, एकता-अनेकता, अतीत-वर्तमान, बाह्यजगत -अंतर्जगत, बुद्धि-हृदय, भावना-चिंतन, सुख-दुख, अधिकार-अनाधिकार, सिद्धान्त क्रिया धर्म-कर्म, कठोर-कोमल, राग-विराग, युद्ध-शांति, शोषक-शोषित नैतिक-अनैतिक, स्वभाव-संस्कार, मूर्त-अमूर्त ह्रास-विकास, आस्था-अनास्था देश-काल, नर-नारी राजनीति, अर्थनीति, नास्तिक -आस्तिक, आत्मा-परमात्मा आदि के विषय में उनकी मान्यता और उनकी समंवयवादी दृष्टि एवं उनके सामजस्यपूर्ण जीवन-दर्शन के प्रति किसी प्रकार की उलझन शेष नहीं रह जाती और वह साहित्य के विराट् स्वरूप से परिचित होकर उनके आधार जीवन और जगत के प्रति अनायास ही संवेदनशील हो उठता हैं।'[223]

डॉ. नगेन्द्र ने बड़े पते की बात कही है- 'महादेवी के ये निबंध काव्य के शाश्वत सिद्धांतों के अमर व्याख्यान हैं। आज साहित्यिक मूल्यों के बवण्डर में भटका हुआ जिज्ञासु इन्हें आलोक-स्तम्भ मानकर बहुत कुछ स्थिरता पा सकता है।[224]

संकल्पिता :- यह कृति सेतु प्रकाशन, झांसी से प्रकाशित हुई हैं। श्री मैथिलीशरण गुप्त (दद्दा) की पुण्य स्मृति को समर्पित महादेवी के शब्दों में- 'संकल्पिता में मेरे कुछ चिंतन के क्षण संकलित हैं।'[224]

इस कृति में 18 निबन्ध हैं। वो इस तरह हैं -

(1) भाषा का प्रश्न, (2) मानव विकास-परम्परा के संदर्भ में, (3) सस्कृति और प्रकृति परिवेश, (4) भारतीय संस्कृति की पृष्ठ भूमि, (5) प्राकृतिक परिवेश और राष्ट्रीयता, (6) भारतीय वाङ्मय पर एक दृष्टि 1, (7) भारतीय वाङ्मय पर एक दृष्टि 2, (8) भारतीय वाङ्मय पर एक दृष्टि 3, (9) भारतीय वाङ्मय पर एक दृष्टि 4, (10) भारतीय वाङ्मय पर एक दृष्टि 5, (11) भारतीय वाङ्मय पर एक दृष्टि 6, (12) भारतीय वाङ्मय पर एक दृष्टि 7, (13) चिंतन के क्षण-साहित्यकार और समाज-1, (14) साहित्यकार : व्यक्ति और समष्टि -2, (15) साहित्यकारः व्यक्ति और अभिव्यक्ति -3, (16) हिन्दी रंगमंच -1, (17) हिन्दी रंगमंच -2, (18) हिन्दी पत्र जगतः एक दृष्टि 3

महादेवी के विचार भाषा का प्रश्न-भाषा मानव की सबसे रहस्यमय तथा मौलिक उपलब्धि हैं।[226] मानव व्यक्तित्व के समान ही उसकी वाणी का निर्माण दोहरा होता हैं।

जैसे मनुष्य का व्यक्तित्व बाह्य परिवेश के साथ उसके अंतर्जगत के घात-प्रति, अनुकूलता-प्रतिकूलता, समन्वय आदि विविध परिस्थितियों द्वारा निर्मित होता चलता हैं, उसी प्रकार उसकी भाषा असंख्य जटिल-सरल अंतर-बाह्य प्रभावों में गल ढलकर परिणति पाती हैं।[227] भाषा के प्रश्न पर विचार करती हुई महादेवी ने हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिक्रिया करने के लिए उसे अन्य भाषाओं से श्रेष्ठ माना हैं। वे विकसित परिमार्जित और साहित्यिक भाषा के लिए सर्वमान्य रूप होना आवश्यक मानती हैं। वे यह भी मानती हैं। भाषा में स्वर, अर्थ रूप भाव तथा बोध का ऐसा समन्वय रहता हैं, जो मानवीय अभिव्यक्ति को व्यष्टि से समष्टि तक विस्तार देने में समर्थ हैं।'[228] हम जिस संक्रान्ति के युग का अतिक्रमण कर रहे हैं, उसमें मानव जीवन की त्रासदी का कारण संवेदनशील का आधिक्य न होकर उसका अभाव हैं। हमारी राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ हमारी मानसिक परतंत्रता का ऐसा ग्रन्थि-बन्ध हुआ है, जिसे न हम खोल पाते हैं न काट पाते है परिणामतः हमारे विकास के मार्ग को हमारी छाया ही अवरुद्ध कर रही है।[229]

बुद्धि और हृदय के नियम भिन्न हैं। बुद्धि का आकर्षण अज्ञात के प्रति अधिक होता है। क्योंकि उसके लिए अति परिचित में जानने योग्य कुछ नहीं रह जाता। पर हृदय की गति ज्ञात की ओर अनायास होती है। जो सुख-दुःख जय-पराजय, जीवन-मृत्यु में हमारे समान हैं, – उसी से हमारा तादात्मय सहज हैं और इस तादात्म्य में हृदय संवेदनशीलता का विस्तार हैं। इसी से विज्ञान बुद्धि की खोज है। और साहित्य हृदय की प्राप्ति।[230] साहित्य विशेष व्यक्तित्व का परिणाम हैं, इसी अर्थ में उसे व्यक्तिगत कहा जा सकता है; परन्तु इस अर्थ में मानसिक ही नहीं भौतिक विकास भी वस्तुनिष्ठ रहेगा[231] संतान का जन्म माता की पीड़ा का भी जन्म हैं। इसी प्रकार साहित्य भी समाज में समाज के लिए निर्मित होकर भी उसमें कोई उद्वेलन, कोई असंतोष उत्पन्न करता ही है।[232] स्वस्थ समाज में व्यक्ति और समष्टि के बीच में जितने प्रकार के आदान-प्रदान सम्भव हैं, उनमें साहित्य और कला का आदान प्रदान ही श्रेष्ठ हैं।[233] अभिनय कला का वास्तविक उपयोग तो समाज की रूचि को अधिक परिष्कृत बनाकर उसे प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाना ही है।[234] अन्य देशों की स्थिति के समान ही हमारे देश की स्थिति हैं। भौगोलिक विस्तार तथा विविधता की दृष्टि से भारत एक, ऐसा महाद्विप कहा जायगा जिसका प्रत्येक प्रदेश एक स्वतंत्र देश के समकक्ष रखा जा सकता है।[235]

भारत ऐसा व्यक्तित्व-सम्पन्न राष्ट्र हैं, जिसके प्राकृतिक परिवेश में मानव जीवन की विशिष्ट संस्कार-पद्धति रही हैं। साहित्य मानव जाति का; उसके मानसिक तथा भौतिक विकास के समान ही अविच्छिन्न साथी रहा हैं।[236]

संकल्पित में लेखिका ने भारतीय मुल्यों और मानव जीवनाभिव्यक्ति पर बहुत विचार किया है। और अलग-अलग विचारों पर अपने निबन्ध प्रस्तुत किए हैं जो उच्चकोटि के निबंध की विशेषता को समेंट है।

स्मारिका :- इस के अंतर्गत महादेवी ने चार महापुरुषों का बड़ा जीवंत स्मृति चित्र अंकित किया हैं। स्मृति पर आधारित हिन्दी नवीन विद्या में स्मारिका के सभी विषय आ जाते हैं। स्मारिका या मेमोयर स्मृति खण्ड हैं। सम्पूर्ण जीवन कथा नहीं। प्रारम्भ में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का पुण्य स्मरण किया गया हैं। जवाहर भाई, राजेन्द्र बाबू और संत राजर्षि शीर्षक अन्य तीन मेमोयर हैं। इनमें पात्रों को केन्द्र बिन्दु बनाकर लेखिका ने उनके व्यक्तित्व का उज्ञवल पथ प्रस्तुत किया हैं। वे स्वीकार करती हैं कि 'मेरी स्मृति यात्रा मेरे मन की तीर्थयात्रा भी है।' अतः यहाँ अनिवार्यतः ऐसी यात्रा में तटस्थ भाव उनका संवल नहीं हो सकता। इन संस्मरणों में रेखाचित्रात्मक शैली में महापुरुषों की जीवंत रूपरेखा और उनके गुरु-स्वभाव आदि का विश्लेषण किया हैं।

प्रारम्भ में गांधी का रेखाचित्र प्रस्तुत करती हुई लेखिका कहती हैं 'कृश, लम्बी और इस्पाती स्नायुक्त से किसी उज्जवल, श्यामवर्ण देह को देखकर लगता था मानों किसी सांचे में ढ्ली लौह प्रतिमा को ज्वाला से धोकर स्वच्छ कर दिया गया हो।' आगे उनके आकर्षक व्यक्तित्व के प्रभाव की चर्चा करती हुई महादेवी जी कहती हैं - ''इसी से आंगतुक का कुछ क्षणों में ऐसा आत्मिक सम्बन्ध स्थापित हो जाता था कि जिज्ञासु के मन में उठे हुए प्रश्न को उनकी दृष्टि अनायास पढ़ लेती थी और उनकी वाणी उस जिज्ञासा का समाधान करने लगती थी।''

इसी प्रकार पं. जवाहर लाल का रेखाचित्र प्रस्तुत करते हुए उन्होंने उनकी रूपाकृति को स्पष्ट कर दिया हैं - ''मझोला कद, दीप्त गौरवर्ण, उज्ञवल स्वच्छखादी के परिधान में वेष्टिल दुबली पतली पर सशक्त देहयष्टि, कुछ अस्तव्यस्त केशों के नीचे चौड़ा उज्ञवल माथा, सीधी, नासिका, लम्बोतरा, मुख, दृढ़ ठुड्डी, हँसी से भरे होंठो में ईषित दृश्य पक्ति।'' जवाहर भाई की निजी विशेषतायें (भले ही छोटी हो) पर भी लेखिका का ध्यान गया हैं। पंडित जी की आम काटने की कला पर उन्होंने लिखा हैं - ''आम काटने की कला में उन्हें विशेष प्रवणता प्राप्त थी, जिसका प्रदर्शन कर अपने अतिथियों को विस्मित कर देते थे।''

अंत में उनके देहावसान से लेखिका मर्माहत हुई है - ''आज वे अपनी स्वप्न सृष्टि के साथ तिरोहित हो चुका हैं। उन्होंने अपने स्वप्नदर्शी होने का मूल्य चुकाया और देश ने एक स्वप्न दर्शी पाने का।''

राजेन्द्र बाबू को महादेवी पहले-पहले एक सर्वथा गद्यात्मक वातावरण में ही देखा

था, जब वह प्रयाग में बी.ए. में विद्यार्थीनी थीं। ''काले घने पर छोटे कटे हुए बाल, चौड़ा मुख, चौड़ा माथा, घनी भृकुटियों के नीचे बड़ी आँखे, मुख के अनुपात में कुछ भारी नाक, कुछ गोलाई लिए चौड़ी ठुड्डी, कुछ मोटे पर सुडौल होंठ, श्यामल झाँई देता हुआ गेहुँआ वर्ण, बड़ी–बड़ी ग्रामीणों जैसी मूछें जो ऊपर के ओठ को ही नहीं ढक लेती थीं, नीचे के ओंठ पर भी रोमिल आवरण डाले हुए थीं।'' लेखिका को वह संध्या नहीं भूलती, जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति को उसने सामान्य आसन पर बैठकर दिन भर के उपवास के उपरान्त केवल कुछ उबले आलू खाकर पारायण करते देखा। महादेवी ने शब्दों के माध्यम से राजेन्द्र बाबू के व्यक्तित्व और उनके महान्, गुणों का एक साथ उल्लेख करने में सफलता पायी हैं।

स्मारिका के अंत में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन के व्यक्तित्व और उनके महान गुणों का स्मरण किया हैं। वे ऐसे शिल्पी थे, जिनके जीवन की मूलांकन के लिए लेखिका साधारण मापदण्डों से भिन्न मापदण्ड की आवश्यकता का अनुभव करती हैं। ''कृश, दुर्बल, लम्बी देहयष्टि, कुछ लम्बी मुखाकृति, नुकीली नासिका, नुकीली, श्मश्रु, कुछ बड़े केश, पीठ पैबन्द लगा खाकी का कुर्ता, घिसे सूतवाली पुरानी धोती'' यही राजर्षि का बाना था। राजनीतिक कोलाहल के बीच उन्हें देख ऐसा लगता मानो साधना जगत का कोई साधक ऐसे रणक्षेत्र से भटक गया हो, जिसकी निति और अस्त्र–शस्त्र से उसका परिचय न होने के कारण वह उस क्षेत्र में भी अपने साधन और सिद्धांतों का प्रयोग कर रहा हैं। 'स्मारिका' के सभी संस्मरण लेखिका के भाव–प्रवरण और कुशल गद्य–शिल्प के सुन्दर उदाहरण हैं।[237]

संभाषण :– अब तक प्रकाशित गद्य–कृतियों में संभाषण महादेवी की अंतिम रचना हैं। साहित्य भवन (प्रा.) लिमिटेड, इलाहाबाद–3 से प्रकाशित इस कृति में चौदह निबंध हैं, जिनमें कुछ पूर्ववर्ती गद्य–रचनाओं में यत्र–तत्र प्रकाशित हो चुके हैं। भाषा का प्रश्न संस्कृति और प्राकृतिक परिवेश और भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि 'संकल्पिता' में स्थान पा चूके हैं। साहित्य और साहित्यकार 'क्षणदा' में प्रकाशित हुए हैं। स्त्री के अर्थ स्वातंत्र का प्रश्न, घर और बाहर तथा युद्ध और नारी शीर्षक निबन्ध 'शृंखला की कडियाँ' जोड़ ने के काम आ चुके हैं। शेष निबन्धों में शिक्षा का उद्देश्य, मातृभूमि देवोभव, साहित्य संस्कृति और शासन, कुछ विचार, हमारा देश और राष्ट्रभाषा आदि लेखिका की मौलिक सूझ–बूझ और चिंतन गरिमा के घोतक हैं।

'संभाषण जैसा कि नाम से विदित हैं लेखिका के समय–समय पर दिए गए कुछ भाषण हैं। इन निबन्धों में एक पद्धति शास्त्रार्थ की हैं, एक राजनीति की तथा एक साहित्य की। पुस्तक के प्रारम्भ में 'अपनी बात' कहते हुए सन्दर्भ में – विद्यापीठ में

विभिन्न प्रदेश, धर्म परिवार आदि की जिन विद्यर्थिनीयों का मुझे संरक्षक बनना पड़ा, उन्हें पुस्तकीय ज्ञान देने से अधिक आवश्यक उनमें ऐसी चेतना जगाना था, जिससे वे अपनी संकीर्ण सीमाओं से मुक्त हो सके।'' निश्चित ही लेखिका को शास्त्रार्थ, राजनीति और साहित्य का सहारा लेना पड़ा होगा। इसके अतिरिक अन्यत्र भी भाषण के क्रम में उन्होंने अनमोल विचार प्रस्तुत किए होगें, जिनमें 'अधिकाँश या तो खो गया है या श्रोताओं के जीवन में मिल गया है।' 'शिक्षा का उद्देश्य' विषय पर लेखिका ने विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में दीक्षांत भाषण किया था। शिक्षा के उद्देश्य और उसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा हैं– ''राष्ट्र जीवन के जिन क्षेत्रों को कुछ मूल्यवान खोना पड़ा हैं, उनमें शिक्षा का क्षेत्र विशेष स्थिति रखता है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र का मेरुदंड कही जा सकती हैं। वह अतीत युगों उपलब्धियों तथा वर्तमान परिस्थितियों का संधि स्थल ही नहीं, ऐसा आलोक भी है, जिनमें भविष्य की रूप रेखा निखरंती और स्पष्ट से स्पष्टतर होकर चलती हैं।'' इसी तरह 'मातृभूमि देवोभव' भी महारानी लालकुँवरि महाविद्यालय बलरामपुर में किया गया दिवगत भाषाण हैं। इस भाषाण में महादेवी ने मातृभूमि को सर्वाधिक महत्व दिया है। उन्होंने कहा – ''आपने सभी प्राचार्य से सुना, मातृ देवोभव – पितृ देवोभव। मैं इनमें एक कड़ी और जोडूँगी और कहूँगी – मातृभूमि देवोभव।'' इस भाषण में उन्होंने प्राचीन और वर्तमान गुरु–शिष्यों के पारस्परिक सम्बन्धों की भी मार्मिक तुलना–आलोचना की है। तीसरा निबन्ध उत्तर प्रदेश विधान परिषद में किया गया भाषण हैं, वह है :– साहित्य, संस्कृति और शासन। इन तीनों का पारस्परिक सम्बन्ध क्या है, इस पर बड़ी गम्भीरता से विचार किया गया हैं इन तीनों के समन्वय से ही समाज के राष्ट्र का कल्याण हो सकता है। शासन द्वारा साहित्यकारों की उपेक्षा पर टिप्पणी करती हुई लेखिका कहती है– ''हमारा देश निराशा के गहन अन्धकार में सग्धक साहित्यकारों से ही आलोकदान पाता रहा है। जब तलवारों का पानी उतर गया, शेखों का घोष विलीन हो गया तब भी तुलसी के कमण्डल का पानी नहीं सूखा और सूर के एकतारे का स्वर नहीं खोया। आज भी जो समाज हमारे सामने है वह तुलसीदास का निर्माण है। हम पौराणिक राम को नहीं जानते, तुलसीदास के राम को जानते हैं।'' अगला भाषण 'कुछ विचार' शीर्षक से प्रकाशित हैं, वह भी उत्तर प्रदेश विधान परिषद में किया गया था। छात्रों के अनुशासनहीन होने से लेकर अध्यापकों की अनुत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका और राजनीतिज्ञों के अपरचित हस्तक्षेप आदि की सम्यक समीक्षा महादेवी ने यहाँ प्रस्तुत की है।

'संभाषण' में संग्रहित विचारों को पढ़ने पर महादेवी की गहन संवेदना स्पष्ट हो जाती है। उन्हीं के शब्दों में – ''संस्कारों में परिवर्तन लाने के लिए संवेदन ही एकमात्र अमोघ

अस्त्र हैं, किंतु इसका उपयोग वाणी ही कर सकती है। मैंने भी अपने प्रत्येक शब्द को गहन संवेदन में डुबो कर ही देने का प्रयत्न किया है।''[238]

महादेवी जी की श्रेष्ठ रचनाएँ आधुनिक युग में औषधिका काम कर रही हैं हर पाठक वर्ग के लिये। महादेवी जी एक श्रेष्ठ साहित्यकार सशक्त व्याख्याता एवं समाज के प्रति जागृत हैं। यह उनके पद्य को पढ़ते ही स्पष्ट हो जाता हैं और उनमें छूपी संवेदना भी झलकने लगती हैं। महादेवी की रचना प्रगति का सच्चा स्वरूप हैं।

संदर्भ सूची

1. महादेवी साहित्य एक नया दृष्टिकोण। लेखक – पदमसिंह चौधरी, प्रकाशक : अपोलो प्रकाशन, जयपुर–3 पृष्ठ 41
2 महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोडा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 11
3. साहित्यकार महादेवी, लेखिका डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 9
4. हिन्दी कहानी और कहानीकार प्रोफेसर वासुदेव, वाणी विहार प्रकाशक, पृष्ठ 132
5. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोडा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 11
6. महादेवी साहित्य एक नया दृष्टिकोण। लेखक – पदमसिंह चौधरी, प्रकाशक : अपोलो प्रकाशन, जयपुर–3 पृष्ठ 41
7. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोडा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 12
8. जीवन झॉकी, गंगा प्रसाद पाण्डेय, पुस्तक : महादेवी संस्मरण ग्रंथ, संपादक सुमित्रानंदन पंत शांतिजोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ 12
9. महादेवी साहित्य एक नया दृष्टिकोण, लेखक – पदमसिंह चौधरी, प्रकाशक : अपोलो प्रकाशन, जयपुर–3 पृष्ठ 41
10. जीवन झॉकी, गंगा प्रसाद पाण्डेय, पुस्तक : महादेवी संस्मरण ग्रंथ, संपादक सुमित्रानंदन पंत शांतिजोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ 13
11. साहित्यकार महादेवी लेखिका डॉ. हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 9
12. हिन्दी कहानी और कहानीकार, प्रोफेसर वासुदेव, वाणी विहार प्रकाशक, पृष्ठ 232
13. महादेवी जी का जीवन क्रमणिक, पुस्तक : परिचय इतना इतिहास, संपादक डॉ. रामजी पाण्डेय, भारती भण्डार, इलाहाबाद, पृष्ठ 240
14. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा, प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 15
15. महादेवी जी का जीवन क्रमणिक, पुस्तक : परिचय इतना इतिहास, संपादक डॉ. रामजी पाण्डेय, भारती भण्डार, इलाहाबाद, पृष्ठ 240
16 जीवन झॉकी, गंगा प्रसाद पाण्डेय, पुस्तक : महादेवी संस्मरण ग्रंथ संपादक सुमित्रानंदन पंत शांतिजोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ 17
17. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 14
18. महादेवी का काव्य – वैभव, संपादक रमेशचन्द्र गुप्त, पृष्ठ 57
19. नारी–विमर्श के संदर्भ में महादेवी वर्मा और उनका गद्य साहित्य – डॉ. गिरीश एन. रोहित उनका गद्य साहित्य, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य, संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आट्र्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 472
20. महादेवी वर्मा की रहस्य भावना, डॉ. भरतसिंह झाला, पुस्तक : महादेवी महादेवी का रचना ससार मुख्य, संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आट्र्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 88
21. डॉ. धर्मवीर भारती/हरसिंगार क्यों झरते झर–झर, पुस्तक : परिचय इतना इतिहास, संपादक डॉ. रामजी पाण्डेय, पृष्ठ 87
22. किरण और ओस, डॉ. रामकुमार वर्मा, पुस्तक : महादेवी संस्मरण ग्रंथ संपादक सुमित्रानंदन पंत शांतिजोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ 37
23. महादेवी का दृष्टिकोण, डॉ. ओम प्रकाश खरे, पुस्तक : महादेवी साहित्य का अभिनव मूल्यांकन (संपादक) असीम मधुपुरी जनार्दन प्रकाशन, पृष्ठ 9
24. जीवन–झॉकी गंगाप्रसाद पाण्डेय, पुस्तक : महादेवी संस्मरण ग्रंथ संपादक सुमित्रानंदन पंत शातिजोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा लि., पृष्ठ 18
25. महादेवी ते मिले हो ? श्री अमृतलाल नागर, पुस्तक : महादेवी संस्मरण ग्रंथ संपादक सुमित्रानंदन पंत शांतिजोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ 64
26. महादेवी एक दृष्टिकोण – डॉ. ओमप्रकाश खरे, पुस्तक : महादेवी साहित्य का अभिनव मूल्यांकन (संपादक) असीम मधुपुरी जनार्दन प्रकाशन, पृष्ठ 12
27. महादेवी एक दृष्टिकोण – डॉ. ओमप्रकाश खरे, पुस्तक : महादेवी साहित्य का अभिनव मूल्यांकन (संपादक) असीम मधुपुरी जनार्दन प्रकाशन, पृष्ठ 12
28. जीवन – झॉकी गंगाप्रसाद पाण्डेय, पुस्तक : महादेवी संस्मरण ग्रंथ संपादक सुमित्रानंदन पंत शांतिजोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ 18

29. प्रथम दर्शन और व्यक्तित्व बोध – गंगाप्रसाद पाण्डेय, पुस्तक : परिचय इतना इतिहास, संपादक डॉ. रामजी पाण्डेय पृष्ठ 73
30. महादेवी एक दृष्टिकोण डॉ. ओमप्रकाश खरे, पुस्तक : महादेवी साहित्य का अभिनव मूल्यांकन (संपादक) असीम मधुपुरी, जनार्दन प्रकाशन पृष्ठ 16
31. महादेवी एक दृष्टिकोण डॉ. ओमप्रकाश खरे, महादेवी साहित्य का अभिनव मूल्यांकन (संपादक) असीम मधुपुरी जनार्दन प्रकाशन पृष्ठ 11
32. हिन्दी कहानी और कहानीकार प्रोफेसर वासुदेव, वाणी विहार प्रकाशक, पृष्ठ 234
33. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोडा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 12
34. महादेवी जी के निकट से इलाचन्द्र जोशी, पुस्तक : परिचय इतना इतिहास, संपादक डॉ. रामजी पाण्डेय, पृष्ठ 26
35. श्रीमती महादेवी वर्मा एक रेखाचित्र – शिवचन्द्रनागर, पुस्तक : महादेवी वर्मा काव्य–कला और जीवन–दर्शन सम्पादिका शचीरानी गुर्टू, रामलाल पुरी आत्माराम एण्ड सन्स प्रकाशन, पृष्ठ 31
36. महादेवी वर्मा : निकट से श्री इलाचन्द्र जोशी, महादेवी संस्मरण ग्रंथ संपादक सुमित्रानंदन पंत शांतिजोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ 99
37. महादेवी जी एक व्यक्तित्व सुश्री शांति जोशी, पुस्तक : महादेवी संस्मरण ग्रंथ संपादक सुमित्रानंदन पंत शांतिजोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ 125
38. सम्पादकीय, सुमित्रानंदन पंत, पुस्तक : महादेवी संस्मरण ग्रंथ संपादक, सुमित्रानंदन पंत शांतिजोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा लि., पृष्ठ 219
39. हिन्दी कहानी और कहानीकार प्रोफेसर वासुदेव, वाणी विहार प्रकाशक, पृष्ठ 233
40. जीवन–झाँकी, गंगाप्रसाद, पुस्तक : महादेवी संस्मरण ग्रंथ संपादक सुमित्रानंदन पंत शांतिजोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ 29
41. महीयसी महादेवी, विद्यापती कोकिल, पुस्तक : परिचय इतना इतिहास, संपादक डॉ. रामजी पाण्डेय, पृष्ठ 184
42. दीप बुझ गया शिखा अमर है : महादेवी, विष्णुकान्त शास्त्री, पुस्तक : परिचय इतना इतिहास, संपादक डॉ रामजी पाण्डेय पृष्ठ 186
43. महादेवी के कुछ अनछुए प्रसंग, रामकुमार वर्मा, पुस्तक : परिचय इतना इतिहास, संपादक डॉ. रामजी पाण्डेय पृष्ठ 146
44. क्रांतिरुपा महादेवी कमलेश्वर, पुस्तक : परिचय इतना इतिहास, संपादक डॉ. रामजी पाण्डेय पृष्ठ 58
45. तभी मरण का स्वस्ति गान जीवन गायेगा केशवचन्द्र वर्मा, पुस्तक : परिचय इतना इतिहास, संपादक डॉ. रामजी पाण्डेय पृष्ठ 53
46. स्मृति की रेखाएँ (रेखाचित्र) राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड पृष्ठ 126
47. श्रीमती महादेवी वर्मा : एक रेखाचित्र, शिवचन्द्र नागर, पुस्तक : महादेवी वर्मा काव्य–कला और जीवन–दर्शन सम्पादिका शचीरानी गुर्टू, रामलाल पुरी आत्माराम एण्ड सन्स प्रकाशन पृष्ठ 33
48. महाश्वता महादेवी – देवेन्द्र सत्यार्थी, पुस्तक : महादेवी वर्मा काव्य–कला और जीवन–दर्शन सम्पादिका शचीरानी गुर्टू, रामलाल पुरी आत्माराम एण्ड सन्स प्रकाशन पृष्ठ 21
49. महादेवी जी की याद में – अमृतराय, पुस्तक : परिचय इतना इतिहास, संपादक डॉ. रामजी पाण्डेय, प्रकाशक : भारती भण्डार, इलाहाबाद, पृष्ठ 19
50. स्वाभिमनिनी, स्वतन्त्र बुद्धि ; करुणामयी ! डॉ. कामिल बुल्के, पुस्तक : महादेवी संस्मरण ग्रंथ संपादक सुमित्रानंदन पंत शांतिजोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ 79
51. पहला गीत : पहली भेंट, श्री उपेन्द्रनाथ अश्क पुस्तक : महादेवी संस्मरण ग्रंथ संपादक, सुमित्रानंदन पंत शांतिजोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. पृष्ठ 47
52. आधुनिक हिन्दी कविता छायावाद से नई कविता तक लेखक डॉ. सुधाकर गोकाकर प्रकाशक एम. व्ही फडके एण्ड के महाद्वार पथ, कोल्हपुर, पृष्ठ 4
53. छायावाद और महादेवी, विजय भाई एस. सोजित्रा, महावीर सिंह एस. जाडेजा, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य, संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 278
54. छायावाद और महादेवी वर्मा, प्रा. जीवन डांगर, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य, संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 272
55. आधुनिक हिन्दी कविता छायावाद से नई कविता तक, लेखक डॉ. सुधाकर गोकाकर प्रकाशक एम. व्ही. फडके एण्ड के महाद्वार पथ, कोल्हपुर, पृष्ठ 9

56. छायावाद और महादेवी, विजय भाई एस. सोजित्रा, महावीर सिंह एस. जाडेजा, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य, संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 281
57. छायावाद और महादेवी वर्मा, प्रा. जीवन डांगर, छायावाद और महादेवी, विजय भाई एस सोजित्रा, महावीर सिंह एस. जाडेजा, पृष्ठ 273
58. छायावाद और महादेवी वर्मा प्रा. जीवन डांगर, पुस्तक : महादेवी साहित्य एक नया दृष्टिकोण, लेखक – पदमसिंह चौधरी, प्रकाशक : अपोलो प्रकाशन, जयपुर–3 पृष्ठ 3
59. छायावाद और महादेवी वर्मा प्रा. जीवन डांगर, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य, संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 273
60. छायावाद और महादेवी, विजय भाई एस. सोजित्रा, महावीर सिंह एस. जाडेजा, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य, संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 274
61. साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध महादेवी चयन : गंगाप्रसाद पाण्डेय, पृष्ठ 13
62. महादेवी का काव्य – वैभव, संपादक रमेशचन्द्र गुप्त, पृष्ठ 205
63. छायावाद और महादेवी, प्रा. जीवन डांगर , महादेवी का रचना संसार मुख्य, संपादक डॉ. एन आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 275
64. छायावाद और महादेवी, प्रा. जीवन डांगर , महादेवी का रचना संसार मुख्य, संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 276
65. छायावाद और महादेवी, प्रा. जीवन डांगर , महादेवी का रचना संसार मुख्य, संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 277
66. साहित्यकार महादेवी, लेखिका डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 16
67. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व), डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 30
68 भूमिका डॉ. रामजी पाण्डेय, साहित्यकार महादेवी, लेखिका डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 16
69. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोडा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 45
70. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 46
71. साहित्यकार महादेवी, लेखिका डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 16
72. महादेवी का दृष्टिकोण, डॉ. ओम प्रकाश खरे, पुस्तक : महादेवी साहित्य का अभिनव मूल्यांकन (संपादक) असीम मधुपुरी जनार्दन प्रकाशन पृष्ठ 10
73. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 21
74. महादेवी की काव्य चेतना, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 34.
75. महादेवी की काव्य चेतना, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 155
76. महादेवी की काव्य साधना, प्रकाश चन्द्र गुप्त, महादेवी की काव्य साधना प्रकाश चन्द्रगुप्त, पुस्तक : महादेवी वर्मा काव्य कला और जीवन–दर्शन सम्पादिका शचीरानी गुर्टू, प्रकाशन : रामलाल पुरी आत्माराम एण्ड सन्स, पृष्ठ 80
77. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 23
78. साहित्यकार महादेवी, लेखिका डॉ. हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 20
79. महादेवी वर्मा के नीहार में वेदनानुभूति डॉ. अर्जुन के. तडवी, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य, संपादक डॉ. एन आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 131
80. राष्ट्रीय नवजागरण, छायावाद और महादेवी का काव्य रजनीकांत एस. शाह, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य, सपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात पृष्ठ 198
81. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 25
82. यामा, महादेवी वर्मा पृष्ठ 6
83 महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 26
84. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 27
85. महादेवी की काव्य चेतना, डॉ. राजेन्द्र मिश्र पृष्ठ 55

86 महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 26
87. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 26
88. महादेवी वर्मा, लेखक लक्ष्मी सहाय सिन्हा, प्रकाशक : सरस्वती मंदिर, पृष्ठ 101
89. साहित्यकार महादेवी, लेखिका डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 23
90. नीरजा : एक विश्लेषण – विजयेन्द्र स्नातक, पुस्तक : महादेवी वर्मा काव्य कला और जीवन–दर्शन सम्पादिका शचीरानी गुर्टू पृष्ठ 196
91. महादेवी की काव्य चेतना, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 58
92. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 30
93. महादेवी वर्मा, लेखक लक्ष्मी सहाय सिन्हा, प्रकाशक : सरस्वती मंदिर, पृष्ठ 134
94 महादेवी की काव्य चेतना, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 58
95. श्रीमती महादेवी वर्मा एक रेखाचित्र : शिवचन्द्र नागर, पुस्तक : महादेवी वर्मा काव्य कला और जीवन–दर्शन सम्पादिका शचीरानी गुर्टू पृष्ठ 32
96 नीरजा : एक विश्लेषण – विजयेन्द्र स्नातक, पुस्तक : महादेवी वर्मा काव्य कला और जीवन–दर्शन सम्पादिका शचीरानी गुर्टू पृष्ठ 199
97. नीरजा : एक विश्लेषण – विजयेन्द्र स्नातक, पुस्तक : महादेवी वर्मा काव्य कला और जीवन–दर्शन सम्पादिका शचीरानी गुर्टू पृष्ठ 200
98. कवयित्री महादेवी वर्मा – डॉ. इन्द्रनाथ नादान, पुस्तक : महादेवी वर्मा काव्य कला और जीवन–दर्शन सम्पादिका शचीरानी गुर्टू पृष्ठ 112
99. महादेवी की काव्य चेतना, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 62
100. महादेवी की काव्य चेतना, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 72
101. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोडा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 34
102. साहित्यकार महादेवी लेखिका डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 27
103. महादेवी की काव्य चेतना, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 72.
104. महादेवी की काव्य चेतना, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 74
105. महादेवी की काव्य चेतना, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 75
106. महादेवी की काव्य चेतना, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 76
107. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोडा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 37
108. महादेवी की रचना – प्रक्रिया लेखक डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल, पूर्वोदय प्रकाशन, पृष्ठ 42
109. महादेवी की काव्य चेतना, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 78
110. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 48
111 साहित्यकार महादेवी लेखिका डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 28
112. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 45
113. दीपशिखा – डॉ. नगेन्द्र, पुसतक : महादेवी वर्मा काव्य कला और जीवन–दर्शन सम्पादिका शचीरानी गुर्टू पृष्ठ 233
114. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 40
115. दीपशिखा – डॉ. नगेन्द्र, महादेवी वर्मा काव्य कला और जीवन–दर्शन सम्पादिका शचीरानी गुर्टू पृष्ठ 239
116. महादेवी की काव्य चेतना – डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 84
117. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) – डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 40
118. महादेवी की काव्य चेतना – डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 85
119. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) – डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 41
120. साहित्यकार महादेवी लेखिका – डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 30
121. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) – डॉ. ललिता अरोडा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 42
122. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) – डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 43
123. महादेवी की काव्य चेतना – डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 99
124. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) – डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 44
125. साहित्यकार महादेवी – लेखिका डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 29

126. महादेवी की काव्य चेतना, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 99
127. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोडा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 46
128. महादेवी की रचना – प्रक्रिया, लेखक डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल, पूर्वोदय प्रकाशन, पृष्ठ 59
129. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 59
130 सप्तपर्णा महादेवी तृतीय संस्करण 1982 लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 32
131 महादेवी की रचना – प्रक्रिया लेखक डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल, पूर्वोदय प्रकाशन, पृष्ठ 64
132. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोडा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 47 से 48
133 महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोडा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 48
134. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 49
135. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 49 से 50
136. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 49
137. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोडा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 50
138. महादेवी की रचना – प्रक्रिया लेखक डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल, पूर्वोदय प्रकाशन, पृष्ठ 87
139. काव्य के रूप – गुलाबराय, आत्माराम एण्ड सन्स, पृष्ठ 146
140. महादेवी की प्रेमानुभूति – अमिता, महादेवी साहित्य का अभिनव मूल्यांकन – संपादक असीम मधुपुरी, जनार्दन प्रकाशन पृष्ठ79
141. महादेवी के रेखाचित्र – गोपालकृष्ण कौल, महादेवी वर्मा काव्य कला और जीवन–दर्शन सम्पादिका शचीरानी गुर्टू पृष्ठ 190
142. महादेवी का दृष्टिकोण, डॉ. ओम प्रकाश खरे, महादेवी साहित्य का अभिनव मूल्यांकन – (संपादक) असीम मधुपुरी जनार्दन प्रकाशन पृष्ठ 12
143. महादेवी का दृष्टिकोण, डॉ. ओम प्रकाश खरे, महादेवी साहित्य का अभिनव मूल्यांकन – (संपादक) असीम मधुपुरी जनार्दन प्रकाशन पृष्ठ 14
144. श्रीमती महादेवी वर्मा एक मूल्यांकन – लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु', महादेवी वर्मा काव्य कला और जीवन–दर्शन सम्पादिका शचीरानी गुर्टू पृष्ठ 54
145. महादेवी की काव्य चेतना, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, प्रकाशक पूरनसिंह विष्ट तक्षशिला पृष्ठ 103
146. हिन्दी भाषा तथा साहित्य उदयनारायण तिवारी – प्रकाशक राजकमल पब्लिकेशनस लिमिटेड, दरियागंज, दिल्ली, पृष्ठ 165
147. हिन्दी भाषा तथा साहित्य उदयनारायण तिवारी – प्रकाशक राजकमल पब्लिकेशनस लिमिटेड, दरियागंज, दिल्ली, पृष्ठ 167
148. महादेवी की रचना – प्रक्रिया लेखक डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल, पूर्वोदय प्रकाशन, पृष्ठ 196
149. महादेवी की रचना – प्रक्रिया लेखक डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल, पूर्वोदय प्रकाशन, पृष्ठ 69
150. हिन्दी भाषा तथा साहित्य उदयनारायण तिवारी – प्रकाशक राजकमल पब्लिकेशनस लिमिटेड, दरियागंज, दिल्ली, पृष्ठ 167
151. महादेवी और रवीन्द्रनाथ : प्रभाव एवं सम्प्रेषण – डॉ. दीप्ति चौहान, महादेवी का रचना संसार मुख्य, संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 169
152. सन्धिनी चिन्तन के क्षण, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद पृष्ठ 9
153. महादेवी के काव्य में गीति तत्व, डॉ. ए. एस. राठोड़, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार, मुख्य संपादक डॉ. एन आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 189
154. नीहार में महादेवी का काव्य–वैभव – डॉ. विमलेश तेवतिया, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार, मुख्य संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 223
155. लेख : महादेवी वर्मा एक काव्यात्मक सर्वेक्षण, डॉ. शशिभूषण प्रसाद सिंह, ईक्षा पत्रिका (साहित्य : संस्कृति शोध संवादी) अंक : 6 वर्ष 2006, संपादक परशुराम सिंह, तिलकनगर, कतिराआरा, बिहार पृष्ठ 59
156. महादेवी की दार्शनिक पृष्ठभूमि – डॉ. मन्मथनाथ गुप्त, पुस्तक : महादेवी वर्मा काव्य–कला और जीवन–दर्शन सम्पादिका शचीरानी गुर्टू, रामलाल पुरी आत्माराम एण्ड सन्स प्रकाशन पृष्ठ 186
157. महादेवी काव्य का अस्तित्व – डॉ. दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव, पुस्तक : महादेवी साहित्य का अभिनव मूल्यांकन (संपादक) असीम मधुपुरी जनार्दन प्रकाशन पृष्ठ 51
158. भूमिका – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, पुस्तक : महादेवी : प्रतिनिधि गद्य – रचनाएँ, संपदाक डॉ. रामजी पाण्डेय, प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली पृष्ठ 5
159. नारी विमर्श परिप्रेक्ष में महादेवी वर्मा, डॉ. अनिल टी. पाण्डेय, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार, मुख्य संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज, वल्लभविद्यानगर, गुजरात, पृष्ठ 450

160. नारी–विमर्श संदर्भ में महादेवी वर्मा और उनका गद्य साहित्य – डॉ. गिरिश एन. रोहित, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार, मुख्य संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 473
161. शृंखला की कड़ियाँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ 9
162. जीवन–झाँकी : श्रीगंगाप्रसाद पाण्डेय, पुस्तक : महादेवी संस्मरण ग्रंथ संपादक सुमित्रानंदन पंत शांतिजोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ 20
163. नारी विमर्श के संदर्भ में महादेवी वर्मा और उनका गद्य साहित्य डॉ. गिरीश एन रोहित, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य, संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृष्ठ 474
164. महादेवी का नारी विषयक दृष्टिकोण – डॉ. दुर्गादेवी अग्रवाल, पुस्तक : महादेवी साहित्य का अभिनव मूल्यांकन, संपादक – असीम मधुपुरी, जनार्दन प्रकाशन पृष्ठ 229
165. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 12
166. स्वातंत्र्य पूर्व हिन्दी–महिला–लेखिकाओं की कहानियों का अध्ययन – डॉ. अलिसा वि. ए., प्रकाशक : सूर्यभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 59
167. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, प्रकाशक अनुभव प्रकाशन, पृष्ठ 1
168. साहित्यकार महादेवी, लेखिका डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 16
169. पथ के साथी, महादेवी वर्मा, प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ मुखपृष्ठ (फोल्डर)
170. साहित्यकार महादेवी, डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन, कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 60
171. साहित्यकार महादेवी, डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन, कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 61 से 62
172. साहित्यकार महादेवी, डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन, कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 61
173. साहित्यकार महादेवी, डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन, कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 60
174. साहित्यकार महादेवी, डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन, कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 74
175. साहित्यकार महादेवी, डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन, कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 77
176. साहित्यकार महादेवी, डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन, कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 79
177. साहित्यकार महादेवी, डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन, कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 80
178. साहित्यकार महादेवी, डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन, कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 86
179. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह – प्रकाशक अनुभव प्रकाशन, पृष्ठ 19
180. साहित्यकार महादेवी, डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन, कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 89
181. साहित्यकार महादेवी, डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन, कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 20
182. साहित्यकार महादेवी, डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन, कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 90
183. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 60
184. महादेवी वर्मा के रेखाचित्र, डॉ. हमीर पी. मकवाणा, पुस्तक : महादेवी का रचना संसार मुख्य, संपादक डॉ. एन. आर. परमार, प्रकाशक : प्राचार्य नलिनी अरविन्द एंड टी.वी. पटेल आर्ट्स कॉलेज वल्लभविद्यानगर गुजरात, पृ. 352
185. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 61
186. पथ के साथी, महादेवी वर्मा, प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 56
187. साहित्यकार महादेवी, डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन, कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 93
188. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 62
189. साहित्यकार महादेवी, डॉ. (श्रीमती) हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन, कन्दर्प प्रकाशन, पृष्ठ 95
190. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 63
191. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्धन सिंह, प्रकाशक : अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, उत्तरप्रदेश पृष्ठ 18
192. उच्छवास – इलाचन्द्र जोशी, पुस्तक : मेरा परिवार, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ 5
193. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्धन सिंह, पृष्ठ 18
194. उच्छवास – इलाचन्द्र जोशी, पुस्तक : मेरा परिवार, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ 5
195 उच्छवास – इलाचन्द्र जोशी, पुस्तक : मेरा परिवार, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ 9

196. मेरा परिवार, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ 13
197. मेरा परिवार, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ 15
198. मेरा परिवार, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ 17
199. मेरा परिवार, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ 14
200. मेरा परिवार, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ 11
201. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह – प्रकाशक अनुभव प्रकाशन, पृष्ठ 18
202. शृंखला की कड़ियाँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 9
203. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ गोवर्द्धन सिंह – प्रकाशक अनुभव प्रकाशन, पृष्ठ 19
204. शृंखला की कडियॉ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 6
205 शृंखला की कड़ियॉ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 15
206. शृंखला की कडियॉ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 17
207. शृंखला की कड़ियाँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 18
208. शृंखला की कडियाँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 7
209. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह – प्रकाशक अनुभव प्रकाशन, पृष्ठ 19
210. जीवन–झाँकी : श्रीगंगाप्रसाद पाण्डेय, पुस्तक : महादेवी संस्मरण ग्रंथ संपादक सुमित्रानंदन पंत शांतिजोशी, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., पृष्ठ 19
211. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह – प्रकाशक अनुभव प्रकाशन, पृष्ठ 21
212. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह – प्रकाशक अनुभव प्रकाशन, पृष्ठ 70–74
213. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह – प्रकाशक अनुभव प्रकाशन, पृष्ठ 21
214. साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध महादेवी चयन, गंगाप्रसाद पाण्डेय, प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 26
215. साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध महादेवी चयन, गंगाप्रसाद पाण्डेय, प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 25
216. साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध महादेवी चयन, गंगाप्रसाद पाण्डेय, प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 28
217. साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध महादेवी चयन, गंगाप्रसाद पाण्डेय, प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 57
218. साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध महादेवी चयन, गंगाप्रसाद पाण्डेय, प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 11
219. साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध महादेवी चयन, गंगाप्रसाद पाण्डेय, प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 66
220. साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध महादेवी चयन, गंगाप्रसाद पाण्डेय, प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 71
221. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोडा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 67
222. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 67
223. महादेवी वर्मा एक अध्ययन (व्यक्तित्व तथा कृतित्व) डॉ. ललिता अरोड़ा प्रकाशक : भारतीय ग्रन्थ निकेतन, पृष्ठ 68
224. साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध महादेवी चयन, गंगाप्रसाद पाण्डेय, प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ 14
225. संकल्पिता महादेवी, सेतु प्रकाशन (दो शब्द महादेवी)
226. संकल्पिता महादेवी, सेतु प्रकाशन पृष्ठ 9
227. संकल्पिता महादेवी, सेतु प्रकाशन पृष्ठ 10
228. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह – प्रकाशक अनुभव प्रकाशन, पृष्ठ 22
229. संकल्पिता महादेवी, सेतु प्रकाशन पृष्ठ 11
230. संकल्पिता महादेवी, सेतु प्रकाशन पृष्ठ 5
231 संकल्पिता महादेवी, सेतु प्रकाशन पृष्ठ 107
232. संकल्पिता महादेवी, सेतु प्रकाशन पृष्ठ 112
233. संकल्पिता महादेवी, सेतु प्रकाशन पृष्ठ 136
234. संकल्पिता महादेवी, सेतु प्रकाशन पृष्ठ 145
235. संकल्पिता महादेवी, सेतु प्रकाशन पृष्ठ 147
236. संकल्पिता महादेवी, सेतु प्रकाशन पृष्ठ 22
237. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह – प्रकाशक अनुभव प्रकाशन, पृष्ठ 23 से 25
238. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह – प्रकाशक अनुभव प्रकाशन, पृष्ठ 28 से 30